Punjab and we are pledged to maintain the unity and integrity of the country at any cost.

With these words I commend to this House to pass this Resolution unanimously. (*Interruptions*).

SHRI V. GOPALSAMY : What does he mean by liberating? (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, hon. Members, it is very late in the night. Let me put the motion. I shall now put the amendment moved by Shri Satya Prakash Malaviya to vote. The question is:

"That in the said Resolution in the fourth line, *for* the words "for a further period of six months" *substitute* the words 'upto the 31st December, 1989.' "

The motion was adopted.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I shall now put the Statutory Resolution to vote.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Madam, in our considered view .... (*Interruptions*). Please allow me to speak. Madam, in our considered view the Punjab problem was a creation of the Congress and the Punjab problem cannot be solved by the Congress Government and the problem of the State cannot be solved so long as it is under the President's rule. The President's rule has failed to solve this problem for the last two and a half years. Therefore, madam, we the Opposition oppose the continuation of the President's rule further and in protest we walk out.

(*At this stage some hon. Members left the Chamber.*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I shall now put the motion.

The question is:

"That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 11th May, 1987, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Punjab, for a further period of six months with effect from the 11th November, 1989."

The motion was adopted.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We shall now take up Short Duration Discussion on the communal situation in the country.

SHORT DURATION DISCUSSION ON SHORT DURATION DISCUSSION ON THE COUNTRY

श्री चतुरानन मिश्र (बिहार): उपसभापति महोदया, मैं आपकी अनुमति से कम्युनल सिचुएशन पर विचार-विमर्श प्रारंभ करता हूं। लेकिन अब रात काफी हो गयी है और ऐसे महत्वपूर्ण सब्जैक्ट पर इतनी देर से विचार-विमर्श नहीं करना चाहिए, इसलिए आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मुझे इसे कल प्रारंभ करने के लिए कहें। अब काफी लेट हो गए हैं। यह इतना महत्वपूर्ण विषय है और इस तरह से इस पर विचार-विमर्श करना उचित नहीं है। यह इस विषय के लिए भी उचित नहीं है। सारा देश दंगे से, सांप्रदायिक तनाव से चल रहा है। इस सवाल पर ऐसे वक्त अगर विचार करते हैं तो यह सर्वथा अनुचित है। यह इस सदन के लिए भी अनुचित है।

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): We are tired and exhausted. Let us have it tomorrow.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Have some respect for the Member; he is on his legs. You walked out and walked in; let him speak.

SHRI V. GOPALSAMY: We have great respect for him but let us do it tomorrow.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY (Karnataka): May I make a submission, Madam.

SHRI RAOOF VALIULLAH (Gujarat): The whole House is here. We can have it today.

SHRI CHATURANAN MISHRA: It is not a calling attention. We are going to discuss this question. It is a very serious matter. So, I will prefer—and that is my request—that we should take it up tomorrow, if you like. I have already started it. That is my request.

उपसभापति : चतुरानन जी, क्योंकि महत्वपूर्ण विषय है, इम्पोर्टेन्ट विषय है तो उसके लिए सुबह और शाम की क्या बात है? रात-भर बैठ सकते हैं। अगर कोई इम्पोर्टेन्ट विषय नहीं होता तो हम सोचते कि कल सुबह बैठेंगे। अगर आप इसके महत्व को समझते हैं, तो रात में नहीं बैठ सकते क्या?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Let the Government respond. Why do you rule it out? Let the Government respond.

THE DEPUTY CHAIRMAN: He asked the Chair. That is why I said. He did not ask the Government.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Let the Government respond. What prevents the Government from having this discussion tomorrow or on the 16th?

SHRI V. GOPALSAMY: Let us have it tomorrow. We are all tired.

THE DEPUTY CHAIRMAN: But I am not tired.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: May I support my colleagues. It is a very important issue; we have agreed to discuss it. It is too late in the day. We can discuss this question tomorrow and also finish other important miscellaneous matters like Bofors and price situation and any other matter in the agenda and later on take up the Panchayti Raj Bill; if they want to, on Monday.

SHRI SYED SIBTER RAZI (Uttar Pradesh): Bofors was already agreed to be discussed but you had run away. That is the difficulty.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI H. K. L. BHAGAT): This is an important issue, as you pointed out, and we should not postpone it till tomorrow. This should be discussed tonight. Tomorrow we do propose to take up Constitutional Amendment Bill. Let communalism be discussed tonight.

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभापति महोदया, सारा देश एक असाधारण स्थिति से गुजर रहा है। साम्प्रदायिक तनाव जैसा अभी देश में है वैसा हम समझ रहे हैं कि कभी नहीं था। जब भारत का बंटवारा हुआ था उस वक्त में जरूर इससे भी भयंकर घटनाएं घटी थीं, लेकिन जितने बड़े पैमाने पर अभी यह फैलता जा रहा है वह अत्यंत चिंताजनक है। ... **(व्यवधान)** ...

मेरा ऐसा ख्याल है कि यह जो साम्प्रदायिक तनाव का वातावरण है, यह कोई धार्मिक कारणों से नहीं है, यह राजनीतिक कारणों से है और धर्म में राजनीति को घुसेड़कर चलाने की जो एक नई पद्धति शुरू हुई है, वैसे पहले भी थी, लेकिन यह जोर पकड़ गई है इसके चलते। मेरा ऐसा ख्याल है कि इसके दो प्रधान कारण हैं। एक तो हमारे देश के अंदर में अभी जैसा देखने को मिल रहा है कि जो हिन्दू साम्प्रदायिक तत्व है वह बड़ा आक्रमणात्मक रुख अख्तियार कर लिए हैं, एग्रेसिव बातें हो रही हैं और दूसरी बात यह है कि जो मुस्लिम फंडामेंटलिस्ट हैं वह पहले से ज्यादा वायलेंट हो रहे हैं और यह दोनों मिलकर टकराव की स्थिति पैदा होती जा रही है। अगर इसे रोका नहीं गया तो हमारा देश लेबनान की तरह हो जाएगा और पंजाब में जो आज घटनाएं हो रही हैं, आप

जितनी भी तारीफ करिए पंजाब की लेकिन वहां कोई सुखद स्थिति नहीं है कि रोज वहां पर लोग मारे जा रहे हैं। वैसी स्थिति सारे देश में हो जाएगी। इसलिए मैं समझता हूं कि यह अत्यंत खतरनाक स्थिति है।

मैं, हमारे यहां जितने बी०जे०पी० के मित्र लोग बैठे हुए हैं, उन लोगों पर मैं सीधा चार्ज करता हूं कि उनकी पार्टी की नीतियों के चलते इस देश में दंगे बढ़ते चले जा रहे हैं। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं कि इनके जरिए राष्ट्रव्यापी, नेशनल लेवल पर हिन्दुत्व को उभारने की, हिन्दू भावना को उभारने की कोशिश हो रही है और जो सदियों पुरानी बातें हैं उनको अब वह उभारना चाहते हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के लिए रिवेंज लेना चाहते हैं, बदला लेना चाहते हैं। बाबर ने आकर कुछ किया, वह मन्दिर शायद तोड़ा भी होगा, मैं तो वहां था नहीं, लेकिन यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जो आक्रमण करता है, उसने ऐसा काम किया होगा, इससे मैं इन्कार नहीं करता। लेकिन उस घटना को लेकर अब बदला नहीं लिया जा सकता। मैं आपको उदाहरण दूंगा। कुछ दिन पहले मैं भुवनेश्वर में था। वहां पर अखबार वाले ने मुझे बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि के बारे में कहा था कि वहां हिन्दुओं का मन्दिर था, उसे फिर से स्थापित करना है, बदला लेना है। मैंने उनसे कहा कि मैं बिहार से आता हूं जहां सम्राट अशोक थे। उन्होंने कलिंग पर चढ़ाई की और खून की धारा बह गई और आज यहां भुवनेश्वर में अगर चीफ मिनिस्टर पटनायक, बीजू पटनायक दोनों मिलकर के हमको उठाकर के पटक दें कि चूंकि अशोक ने हमको मारा था इसलिए हम तुमको मारते हैं, तो यह अजीब बात होगी और इससे देश टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। यह एक बाबरी मस्जिद की बात नहीं है: उनके पास 300 मन्दिरों की एक लिस्ट है। पांचजन्य आदि में यह बात छपी है, कि कृष्णजन्म मन्दिर, विश्वनाथ मन्दिर वगैरह उस सूची में हैं। ऐतिहासिक बहुत सी घटनाएं इस देश में घटी हैं, इसको लेकर के वह बदला लेना चाहते हैं। मेरा ऐसा ख्याल है, उपसभापति महोदया, कि इतिहास जो है वह मां की तरह है। मां गोरी हो या काली हो, मां, मां है, वह पूज्य है। वैसे ही इतिहास में खराब घटनाएं घटी हों या अच्छी घटनाएं हों, आप उन्हें बदल नहीं सकते। You cannot have parent of your choice. उसी तरह से इतिहास हमारे अपने मन के मुताबिक नहीं हो सकता। दूसरा उन्होंने शुरू किया है उर्दू के खिलाफ हंगामा खड़ा करने का। उर्दू भाषा भारत के अलावा सिर्फ पाकिस्तान में बोली जाती है क्योंकि वह भारत का पहले अंग ही था। जितना गंगा जल है भारतीय उतनी ही उर्दू भाषा है भारतीय, लेकिन फिर भी वह इसको विदेशी भाषा समझकर के इसके खिलाफ हंगामा खड़ा करते हैं, जैसा बदायूं में अभी हुआ है।

ऊर्जा मंत्रालय में विद्युत विभाग में राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय): तो आप उनके साथ क्यों एडजस्टमेंट करते हैं?

श्री चतुरानन मिश्र: हम उनके साथ एडजस्टमेंट नहीं करते हैं। आप मुस्लिम लीग से गठबन्धन करते हैं इसको छिपाने के लिए आप हम पर यह झूठा दोषारोपण करते हैं। ..(व्यवधान)

श्री कल्पनाथ राय: हम नहीं करते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र: अभी केरल में क्यों किए हैं? साफ-साफ झूठ बोल दिया करते हैं कि नहीं करते हैं। एक मुंह में दो जीभ रखते हो। सारे कुकर्म आप करते हो।

महोदया, मैंने चर्चा की यहां बी० जे०पी० के संबंध में। इनकी यह बात आज की नहीं है, बहुत पहले की है।

[श्री चतुरानन मिश्र]

अगर आप देखेंगे तो पाएंगे कि अपने देश में जितने भी कमीशन बैठे सांप्रदायिक दंगों की जांच करने के लिए, उनमें से ज्यादातर ने कहा है कि इनके पीछे आर. एस.एस. का हाथ है। मुझे समय रहता तो मैं पढ़कर सुना देता। 1927 में जो नागपुर में दंगे हुए थे उस वक्त से लेकर 1947 में पूना में जो दंगे हुए कपूर कमीशन ने उसके बारे में कहा कि आर.एस.एस. के लोगों का उनमें हाथ है। 1967 में रांची में जो दंगे हुए उसके बारे में रघुवर दयाल कमीशन ने कहा आर.एस.एस. का हाथ है। तेलचेरी में जो दंगे हुए वहां जो कमीशन बैठा उसने कहा कि यही लोग इसके लिए जिम्मेदार हैं। अहमदाबाद में जो दंगे हुए उसके बारे में जगमोहन रेड्डी कमीशन ने कहा कि आर.एस.एस. ने किये। भिवंडी में जो दंगे हुए तो रेड्डी कमीशन ने कहा कि उन्होंने ही दंगा किया। तो पहले से ही यह बात चली आ रही है। मैं इस बात से अत्यंत दुखी हूं कि आर.एस.एस., भाजपा इस ढंग से कर रहे हैं।

भगत जी आप जाइए नहीं, मैं आपके बारे में भी कहूंगा। अगर इस सदन में हल्ला-गुल्ला न हो तो कांग्रेस वालों की बात जमती नहीं। मैं आपका ध्यान महोदया, इधर आकर्षित करना चाहता हूं, आप इस पोस्टर को देखिए....

उपसभापति : मुझे इतनी दूर से दिखाई नहीं देता। आप मेरे चैंबर में भेज दीजिएगा।

श्री चतुरानन मिश्र : ज्यों ज्यों रात होगी त्यों त्यों दिखाई नहीं देगा तो मैं क्या करूं? यह पोस्टर है 'हिन्दू शक्ति शोभा यात्रा परिषद' का जिसमें लिखा है--'हिन्दू की पहचान, त्रिशूल का निशान' इस यात्रा का उद्घाटन कौन करेंगे?

श्री एच०के०एल० भगत, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार द्वारा इस शोभा यात्रा का आरंभ होगा।

SHRI H. K. L. BHAGAT: This is totally wrong. Chaturananji, let me tell you. Number one, this was an annual function concerned with Ramlila. It has not anything to do with what you are talking, or what you are saying. This had nothing to do with temple poojan. It had nothing to do with that. It was a normal Ramlila procession which is taken out. I was there. I am telling you, it has nothing to do with that. It is totally wrong.

SHRI CHATURANAN MISHRA: All right, if it was normal Ramlila, then you produce the documents that you have in the Government for the last 10 years.

SHRI H. K. L. BHAGAT: I was present there. It was nothing of this kind. There was no shila poojan, no talk of Ram Janambhoomi. In fact, I spoke on communal harmony and I was cheered.

SHRI CHATURANAN MISHRA: You can speak about anything, but if you go to a Hindu Shakti Shobha Yatra Parishad, where they are saying, 'हिन्दू की पहचान, त्रिशूल है निशान'।

SHRI H. K. L. BHAGAT: This organisation exists for the last several years.

SHRI CHATURANAN MISHRA: No, no, I am telling you....

SHRI H. K. L. BHAGAT: This is not that organisation at all. You are mixing up things.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA (Andhra Pradesh): And this has appeared with your photo.

SHRI H. K. L. BHAGAT: There are so many shoba yatras. Don't mix up things.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Then can you say: 'हिन्दुत्व को पहचान त्रिशूल का निशान' Is this the line of your Government, may I ask you? सत्यमेव जयते के परदे में त्रिशूल का निशान हो गया है तो क्या इस लज्जजनक स्थिति पर हम पहुंच गए हैं?

SHRI H. K. L. BHAGAT: In fact, it was a communal harmony discussion.

श्री चतुरानन मिश्र : आपको टाइम दे सकते हैं, हम सबूत पेश करते हैं आपके बारे में 'हिन्दू राष्ट्र की राजधानी दिल्ली में आपका हार्दिक स्वागत'? दिल्ली जंक्शन पर न्योन लाइट पर लगाया हुआ है, बराबर फ्लैश किया जा रहा है। होम मिनिस्टर कहां है मैं आपको दे रहा हूं। एक-एक करके आपको दे सकता हूं। (**व्यवधान**) मैं आपको यह कहता कहता हूं... (**व्यवधान**)

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: New Delhi Station!

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal): This is Congress!

SHRI KALPNATH RAI: This is Telugu Desam!

SHRI H. K. L. BHAGAT: At least I have not participated in any function or programme organised by the Vishal Hindu Parishad or any organisation having anything to do with Ram Janambhoomi and Babri Masjid... (*Interruptions*)... I was there..... (*Interruptions*) It is totally wrong.

SHRI CHATURANAN MISHRA: I never said that he attended Ram Janambhoomi Sammelan. ...(*Interruptions*)

PROF. C. LAKSHMANNA (Andhra Pradesh): It is a discussion on the communal situation.....

THE DEPUTY CHAIRMAN: At least let him speak if it is a discussion. One man is on his legs. ....(*Interruptions*).....

SHRI H. K. L. BHAGAT: Both the meetings were for communal harmony and against this mentality. You cannot challenge my secularism. I know more than you do.

SHRI CHATURANAN MISHRA: All right, you may be knowing more than me. I do not challenge you. That is why you are a Minister and I am still here.

DR. YELAMANCHILI SIVAJI (Andhra Pradesh): It is there with Mr. Bhagat's photo. Mr. Bhagat attended the function.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Let me speak. In your time you can say.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI BUTA SINGH): Chaturananji, let me tell you one thing. You may try to score a point but Mr. Bhagat, right from his childhood, has been in the national movement, and you are trying to pick up certain posters from here and there. You cannot imagine that a man who has committed his whole life in the nation's service and who is a committed Congressman, would go to such functions where naked fanaticism and communal fundamentalism is preached ... (*Interruptions*).... Yes, there were some signboards in the Boat Club rally, and when it came to my notice we got them removed. Therefore, don't try to pick up the posters. Delhi walls are full of posters and you can pick up two, three posters together and malign anybody. I think this is not the Communist Party's line.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh): What about the killings in 1984 (*Interruptions*) .....

उप सभापति : अभी चतुरानन मिश्र जी जब आपने भाषण शुरू किया था तो यह कहा था कि यह खास मुद्दा मसला है। इट इज इम्पोर्टेन्ट मैटर। अब अगर इम्पोर्टेन्ट समझते हैं तो एक स्तर पर रह कर इस पर बात कीजिए। मुझे यकीन है इस हाऊस में चाहे इधर के लोग बैठे हैं या उधर के बैठे हैं इस देश में कम्युनलिज्म नहीं चाहते हैं। अगर सही माने में नहीं चाहते हैं तो सही तरीके पर डिसकशन कीजिए। पोस्टर-वोस्टर का क्या फायदा। (व्यवधान) कृपया एक दूसरे को डिसटर्ब मत कीजिए। आपका जो टाइम है उसी में बोलिए।

श्री चतुरानन मिश्र : गृह मंत्री जी से हम कहना चाहते हैं कि हम भगत जी के आजीवन के जीवन पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। आज क्या हो गया है इसको आपको बतलाना चाहता हूं। आप सब लोग राजनीतिज्ञ है, मैंने पहले ही कहा कि दंगा-फसाद राजनीतिज्ञों के चलते हो रहा है। चार वर्ष तक हम लोग सभी सेक्युलर रहते हैं और पांचवें वर्ष वोट के वर्ष में जाकर कास्टिस्ट और कम्युनल हो जाते हैं। अभी हमसे कांग्रेस के किसी मित्र ने पूछा था कि आप लोग बी०जे० पी० के साथ क्यों जा रहे हैं। हमने कहा कि हम बीजेपी के साथ नहीं जा रहे हैं। उन्होंने पूछा आप जनता दल के साथ क्यों जा रहे हैं। हमने उनसे पूछा कि आप अपनी मुस्लिम लीग के बारे में कहिये क्या कहना है वह कहते हैं कि हम तो इसको पसन्द नहीं करते हैं। लेकिन हैं पार्टी में। अब आप यह क्या करते हैं? दूसरी बात आप हमसे साम्प्रदायिकता से लड़ने की सिर्फ इसलिए कह रहे हैं कि वोट का टाइम आ रहा है। आप सिर्फ इसलिए कहते हैं कि आप को डर है कि सभी मिलकर एक हो जायेंगे तो आपका शासन खत्म हो जायेगा। (व्यवधान)

श्री बूटा सिंह : हम नहीं डरते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र : अपने वक्त तो हमको बोलने नहीं देते और बोलने लगते हैं तो हमें रोकते हैं। (व्यवधान) जब तक सभी दल मिल कर एक होने की बात नहीं हो रही थी तब तक आपके प्रधान मंत्री ने एक बार भी आरएसएस पर हमला नहीं किया। नेहरू जी ने हमला किया पच्चीसों बार इंदिरा जी ने किया था। अब जब यह सभी पार्टियां एक होने लगी तब आप हमला करते हैं। (व्यवधान) इसलिए मैं कहता हूं कि वोट के लिए आप यह सब करते हैं। आप अपने पुराने भाषणों को देखें एक भी भाषण दिखा दें कि आपने आर. एस.एस. की आलोचना की?

SHRI H. K. L. BHAGAT: More than you every time I have attacked communalism, much more than you.

श्री चतुरानन मिश्र : अब आर०एस० एस० के श्री देवरस ने कहा कि कांग्रेस का विकल्प नहीं है तो ये लोग भीतर भीतर लठ्ठू चाट रहे थे। आपने एक बार भी इसकी आलोचना नहीं की, कोड रिजोल्यूशन पास नहीं किया।

श्री एच० के० एल० भगत : मैंने आलोचना की है।

श्री चतुरानन मिश्र : एक साल तक एक भी रिजोल्यूशन पास नहीं किया। देश में बहुत से दंगे हुए। गृह मंत्री जी से मैं प्रश्न करता हूं कि क्या दंगा करने वालों में से पांच परसेंट को भी आप सजा दिला सके हैं?

श्री बूटा सिंह : आप आंकड़े देख सकते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र : आप देख लीजिये, आप पांच परसेंट दंगा करने वालों को सजा नहीं दिला पाये हैं। सबसे बड़ा जो खतरनाक काम आप करते हैं वह यह है कि जांच कमीशन की जो रिपोर्ट होती है उसको आप

रही की टोकरी में फक देते हैं। आपने मलियाना कांड की जांच पूरी नहीं की। इससे बड़ी घटना दूसरी नहीं हो सकती है। मेरठ की जांच, मुरादाबाद की जांच और फिर जो मेरठ में काण्ड हुआ हुआ उसमें पारिख कमीशन की जांच कभी एसेम्बली में नहीं रखी। मैं आपको चार्ज करता हूं कि आप इन लोगों को बढ़ावा देते हैं और जो दंगा करते हैं उनको सजा नहीं देते हैं। यह कांग्रेस पार्टी पर मेरा चार्ज है।

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): We are not going to accept this. It is all false.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Honesty demands that you should go by facts. I am giving them. Let them say that on such and such date the Maliana commission has reported. It has not reported.

अहमदाबाद में भारी दंगा हुआ था। लेकिन कमीशन की टर्म आफ रेफरेन्स इनकी सरकार तय नहीं कर सकी। साल भर बीत गया, बाद में कहा गया कि यह इंफेक्चुअस हो गया है। यह कमीशन भंग कर दिया गया। गुजरात के बहुत से मेम्बर हैं और होम मिनिस्टर साहब इसका कल को जवाब देंगे कि क्या वजह है कि इस कमीशन ने वहां पर काम नहीं किया। इसलिए सारे देश में यह भावना पैदा हुई है कि ये कमीशन वगैरह कुछ नहीं है, यह सरकार हमारी रक्षा नहीं कर सकती है। पुलिस निकम्मी है। कांग्रेसी राज्य सरकारों में सबसे ज्यादा दंगे होते हैं।

श्री पवन कुमार बांसल (पंजाब): ये दंगे कौन करवाता है?

श्री चतुरानन मिश्र: आप किस मर्ज की दवा हैं। राज तो आप चला रहे हैं। दंगा गुजरात में होता है, महाराष्ट्र में होता है, बिहार में होते हैं और उसके पहले उत्तर प्रदेश जलता है। कांग्रेस के राज में सबसे ज्यादा दंगे होते हैं।

श्री जगेश देसाई: कांग्रेस को बदनाम करने के लिए ये दंगे करवाये जाते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र: हरिजनों को हत्याओं में भी ये स्टेट्स फर्स्ट होती हैं। शेड्यूल्ड कास्ट और शेड्यूल्ड ट्राइब्ज कमिश्नर की रिपोर्ट है कि कांग्रेस रूल्ड स्टेट से सबसे ज्यादा एट्रोसिटीज हरिजनों पर होती हैं। क्या गृह मंत्री जी इस बात का जवाब देंगे कि सबसे ज्यादा क्राइम बिहार में और उत्तर प्रदेश में होते हैं और पंजाब में रोज जितने लोगों की हत्या होती है उससे चार गुना ज्यादा हत्याय बिहार में रोज होती हैं। आपके शासन की यही हालत है। सिर्फ साम्प्रदायिक दंगों की बात नहीं है।

श्री पवन कुमार बांसल: उधर के लोग यह करवाते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र: यह आपको शोभा नहीं देता है।

SHRI JAGESH DESAI: I expect from you to expose such persons. Who are the persons behind it?

SHRI RAOOF VALIULLAH: Mr. Mishra, will you please yield for a moment? Recently there is a spate of communal violence in Gujarat. Would Mr. Mishra be able to tell us who are the people behind it?

SHRI CHATURANAN MISHRA: I am telling it.

SHRI RAOOF VALIULLAH: The Bharatiya Janata Party is very much behind this.

SHRI SHANKER SINH VAGHELA (Gujarat): It is the congress(I). I have got the proof.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Here is an editorial of THE BUSINESS STANDARD. It is not from me. It is not a party organ either of the Congress Party or of the CPI. I am telling what they have done. I have already said it.

वह क्या कहते हैं कि हर जगह राम शिला पूजन उन्होंने शुरू किया है **(व्यवधान)** आपकी पुलिस मर गई है क्या? आप उसको रोकिये **(व्यवधान)** बंगाल की सरकार ने तो रोक दिया है **(व्यवधान)**

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री संतोष मोहन देव) क्या रोक दिया है ? **(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र: पूजा करने में कोई रुकावट नहीं है। जुलूस निकालने में रुकावट है। कहे को गृह मंत्री हैं आप बोलिये। हम प्रोशन रोकते हैं। आप लोग क्या करते हैं शिला पूजन प्रोशन मुस्लिम क्षेत्रों में जाने देते हैं। **(व्यवधान)** अच्छा पहले मैं एडिटोरियल पढ़ देता हूं।

"The Janam Bhoomi issue has made Hindu communal activtists most aggressive. In Kota, Rajasthan, the riot was triggered off by a BJP-RSS mob shouting provocative slogans in a Muslim locality: 'If you have to live in India, you have to live like a Hindu'. In Badaun, UP, BJP-led students took out a procession with a slogan 'if Urdu is forced upon us, rivers of blood will flow in streets'. In Madhya Pradesh town of Khargon, the riot was provoked by provocative slogans during Ram Shila Poojan."

मैंने आपसे पहले ही कहा है और बी.जे.पी. का नाम ले कर के कहा है कि यह मित्र लोग हमारे सारे देश के अन्दर ऐतिहासिक चीजों को ले कर जिस पर हमारा आपका कोई अधिकार नहीं है दंगा फैलाते हैं लेकिन इस बात को हम कैसे भूलेंगे कि आपकी सरकार है वहां, क्या आप नपुंसक हैं, क्या पेरालाइज्ड हो गये हैं आपकी सरकार को लकवा मार गया है क्या? हम चार्ज करेंगे कि आप किस मर्ज की दवा हैं। सरकार आपके पास है। दूसरी जगह भी कोशिश की जाती है। बंगाल की सरकार ने जा कर के रोका। पूजा करने में कोई रुकावट नहीं है, कीर्तन है। लेकिन मुस्लिम कम्युनिटी से हो कर दंगाई जुलूस नहीं जाने दें। हजारीबाग में क्या हुआ था? यहां बिहार के लोग बैठे हुए हैं। उन्होंने जहां वर्षों से बन्द था मुस्लिम मुहल्ले में राम नवमी का जुलूस जाना था, वहीं इस वर्ष जुलूस जाने दिया। भाजपा ने तय किया कि हम उधर हो कर ही जाएंगे, और फिर दंगा हो गया। आपकी सरकार बढ़ावा देती है वोट के लिए। मंत्री जी यहां हैं। मैं अभी अयोध्या से आया हूं अयोध्या में जिसे आप बाबरी मस्जिद कहते हैं वहां सारा खेल खत्म है। हिन्दू लोगों ने जा कर बाबरी मस्जिद पर कब्जा कर लिया है। अब मस्जिद को तोड़ने की तैयारी कर रहे हैं और उसका उन्होंने नक्शा बना दिया है सारे देश में प्रकाशित हुआ है। करोड़ से भी ज्यादा उसमें खर्च होगा, बहुत बड़ा मकान बनेगा। उसी मस्जिद को तोड़ा जाएगा या नहीं इस पर भाजपा में दो राय हैं उनमें जो लिबरल विचार के हैं, जैसे हमारे वाजपेयी जी इस समय यहां मौजूद नहीं हैं इसलिए मुझे कहने में हिचकिचाहट है वह कहते हैं कि ईंट उठा कर दूसरी जगह ले जाओ। अब आप बताइए कि ईंट उठाने से मस्जिद टूटा कि नहीं। हमारे गृह मंत्री जी ने क्या आदेश दिया है कि वह लोग ईंट जमा कर सकते हैं। कलक्टर जहां कहेगा वहां रखें। यह शान्ति के लिहाज से चल रहे हैं कि हम ऐसा शान्ति कर रहे हैं हम आपसे पूछते हैं कि जब स्टेटस को हाई कोर्ट ने आदेश दिया है तो स्टेटस को का मतलब यह है कि कोई हम को मारना

चाहता है तो ईंट पत्थर जमा करने का आदेश देंगे। उन लोगों ने लिख कर के दिया है और इन्होंने मान लिया है। हमको भी इन्हीं के यहां से कागज मिला है उस में यह है कि इन्होंने इजाजत दी है ईंट जमा करने की, लेकिन यह ईंट पत्थर, जिला किस बात के लिए है? मस्जिद तोड़ने के लिए है। अगर बाबरी मस्जिद टूटती है मैं नहीं जानता बी. जे.पी. के लोग क्या सोचेंगे मैं अपनी बात कहता हूं मुझ को खुदा पर बहुत कम भरोसा है आपको मालूम ही होगा कहने की जरूरत नहीं है मुझे विश्वास भी कम है और भरोसा भी कम है लेकिन जिन लोगों को उस पर आस्था है उनको किसी तरह से चोट नहीं पहुचनी चाहिये। बाबरी मस्जिद हिस्टोरिकल प्लेस है और सारी दुनियां के अन्दर क्या कहा जाएगा कि भारत मे कहने के लिए तो सेकुलर कांस्टीट्यूशन है लेकिन यहां बाबर को बनाई हुई इतनी पुरानी मस्जिद को ढाह दिया। सारे के सारे अरब कंट्रीज में भारत बदनाम हो जाएगा। सारे के सारे बाकी क्रिश्चियन देशों में भारत बदनाम हो जायेगा। नेहरू जी ने, गांधी जी ने या बाद में इंदिरा जी ने जो भी प्रतिष्ठा विदेश में बनाये है वह सब मटियामेट हो जायेगी। आज उसी के लिए, हमारी प्रतिष्ठा को बरबाद करने के लिए ईंटे जमा कर रहे हैं। यह मैं आपसे कहना चाहता हूं। मैं आपसे यही कहूंगा कि जो स्टेटस को वालों बात है इसको सही ढंग से लागू करने की बात होनी चाहिए। हमारे मित्र लोग बी. जे.पी. के हैं कहते हैं कि माइनारिटीज कमीशन को समाप्त करो...

श्री कल्पनाथ राय : क्या ?

श्री चतुरानन मिश्र : माइनारिटी कमीशन समाप्त करो, हमारे आर.एस.एस. और बी.जे.पी वाले कहते हैं और ये कांग्रेस वाले क्या कहते हैं। वे कहते हैं कि ढाई वर्ष तक इसकी बैठक मत करो। देखिए दोनों को मिले। यहां गृह मंत्री महोदय बैठे हुए हैं, बतायें कि ढाई वर्ष तक कोई भी माइनारिटीज कमीशन का वहां पर चेयरमैन था, कोई बैठक क्यों नहीं हुई थी?... **(व्यवधान)** जबकि आपकी ही रिपोर्ट में हमको मिली है...

श्री बूटा सिंह : चेयरमैन काम कर रहा है... **(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : अभी काम कर रहा है... **(व्यवधान)**

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : बैठकें कितनी हुई?

श्री बूटा सिंह : बैठक कमीशन ने करनी है या मैंने करनी है किसने रोका है उनको?... **(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : इसी तरह शिडयूल्ड कास्टस और शिडयूल्ड ट्राइब्स कमीशन में ढाई वर्ष तक कोई था ही नहीं, पद खाली था.. **(व्यवधान)** माइनारिटीज, लिंग्विस्टिक कमीशन की बा नसुन लीजिए... **(व्यवधान)** I am telling you in a different context. You are talking.

SHRI RAOOF VALIULLAH: You are talking about Linguistic Commission.

SHRI CHATURANAN MISHRA: You don't try to hear me. I first told you about the Minorities Commission. Secondly,... (Interruption)..

SHRI RAOOF VALIULLAH: Justice Beg was the Chairman for five years. What are you talking? माइनारिटीज कमीशन का अध्यक्ष पहले भी रहा है और अब भी है और ढाई साल तक कोई मीटिंग नहीं हुई यह बात भी सरासर गलत है... **(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : बेग और बर्नी ...**(व्यवधान)** के बीच में ढाई साल तक कोई बैठक नहीं हुई ...सुनिये... **(व्यवधान)**

श्री बूटा सिंह : एक सेकेण्ड के लिए दीजिये।

Madam, I want to clarify. Chaturananji seems to be highly confused. There are two Commissions in each field. (*Interruptions*). Let me state the facts. There is a Commission for linguistic minorities. There si a Scheduled Castes Commission. There is a Parliamentary Committee for Scheduled Castes and Scheduled Tribes. Therefore, these two bodies are functioning parallel. I do not know which body Chafurananji is mentioning. So far as the Minorities Commission is concerned, it has been there and it has been holding meetings. So far as the Parliamentary Committee for Scheduled Castes and Scheduled Tribes is concerned, it has submitted a number of reports. Chaturananji is mixing up *dal* with *chaval* and *chaval* with *dal*. The Minorities Commission has been functioning regularly.

SHRI CHATURANAN MISHRA: I know fully about the Minorities Commission and also the Minorities Linguistic Commission. I want to tell you last time the Parliament discussed the 17th Report of the Minorities Linguistic Commission and in between it discussed the latest report, the 27th. So ten of the reports were not discussed by Parliament.

SHRI BUTA SINGH: That is a different matter.

SHRI CHATURANAN MISHRA: You don't allow the Parliament to function. That is what I am telling you. टाईम कौन बरबाद करता है।

SHRI BUTA SINGH: Every day you take time on the wretched things which have nothing to do with the life of the people. You raise all non-issues and come to the well of the House. You waste the time of the House.

श्री चतुरानन मिश्र : आप हमसे कह रहे हैं लेकिन आज की बात ही ले लीजिए उपसभापति पक्ष महोदय "बेइमान" शब्द संसदीय है या असंसदीय इसके लिए दो घंटा इनको टाइम मिला और हम जब ये बात करते हैं तो इनको टाइम ही नहीं मिलता है। दो घंटा इन्होंने डिसकस किया है कि संसदीय है या असंसदीय है... (व्यवधान)

श्री बूटा सिंह : नारा लगाने के लिए लिए टाइम है लेकिन गरीबों के लिए नहीं है... (व्यवधान)

SHRI JAGESH DESAI: Even after the Chairman's order, you did not allow the House to function.

श्री चतुरानन मिश्र : दूसरी बात-आप अपने डाइरेक्ट रूल की भी बात अगर सुनना चाहते हैं तो सुन लीजिए। मुसलमानों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। इस पर विचार कीजिए।

मैं राज्यों की बात नहीं कहता हूं। (समय की घंटी) मैं आपसे कहता हूं गृह मंत्री जी कि दिल्ली में 1978 के सेंसज के मताबिक 54 लाख की आबादी थी, जिसमें से पांच लाख मुसलिम थे। सेकंडरी बोर्ड में 54 हजार स्टूडेंटस अपियर हुए उसमें से--Muslims were 907. That is less than 0.2 per cent. This is their economic condition under your direct rule in Delhi.

अब आप ही बता दीजिए। अब एक नई भावना उठी है और इससे मैं आपको जागृत कराना चाहता हूं--मुसलमानों में भी बेदारी की भावना उठी है कि अगर ऐसे ही रहना है, तो हम कब तक रहेंगे? उनके नौजवानों में हमारी बात होती है। वह कहते हैं माना कि हमारे बाप-दादा ने पाकिस्तान बनवा दिया। इसमें हमारा क्या कसूर है? हमको आप क्या कह रहे हैं--चारों तरफ से यह सवाल उठ

रहा है। यह मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। आप ले-देकर एक बोफोर्स कहां से आ गया, जिसमें आप कभी उगते डूबते हैं। बोफोर्स हम लाथ हैं क्या?

जब अखबार में छपता है, आपके पास कोई जवाब नहीं है। आप बातें छिपा करके रखे हुए हैं इसमे हमारा क्या कसूर है? तो इसीलिए जिस बात को हम आपसे कहना चाहते हैं वह यह है कि इस गंभीर समस्या के बारे में कि इस देश की राजनीति में क्या परिवर्तन हो गया है--इस पर गंभीर होकर विचार करें। (समय की घंटी) आप मुझे एक-दो मिनट ज्यादा दें।

उपसभापति: दो मिनट और। अभी बहुत से नाम हैं।

श्री चतुरानन मिश्र: इसका नतीजा क्या होता है कि क्रिमिनल लोग पोलिटिकल लीडर हो रहे हैं। इसको जरा सुन लीजिए। गृह मंत्री जी .... (व्यवधान) अभी क्या हुआ कश्मीर मे? शब्बीर अहमद को अरेस्ट किया गया। वह कोई अच्छा आदमी नहीं है, न स्वतंत्रता सेनानी है, न कभी देश के लिए उन्होंने कुछ किया। लेकिन जब वह अरेस्ट हुए तो अखबारों की सूचना के मुताबिक और भट्ट साहब कहेंगे कि पांच दिन बाजार बंद रहा। बताइये हमको कि वह लीडर हो गया कि नहीं हो गया?

अहमदाबाद में रायट हुआ--मैं नाम नही लेना चाहता था वह माइनार्टी कम्युनिटी का लतीफ है। वह पांच म्युनिसिपल वार्डस से खड़ा हुआ और पांचों जगहों में जीत गया।

हमारी शिव सेना वालों ने सक्सेसफुल दंगे करवा दिये या आर०एस०एस० वालों ने सक्सेसफुल दंगे करवा दिये अहमदाबाद में और बम्बई. दोनों कार्पोरेशन पर कंट्रोल हो गया अगर दंगो से किसी को राजनीतिक लाभ मिलता है तो वैसा करेगा। आप लोग जितने आदमी हैं वह गांधी का नाम लेकर के इतना भोजन भाव करते हैं हर वोट में गांधी जी का नाम लेते हैं वोट पाने के लिए वरना आप लोगों में से कौन गांधी जी को मानता है बताइये। एक भी गांधी जी रहते तो क्या देश का यह हाल होता? नए गांधी जब से आए हैं इनके चलते गड़बड़ी पैदा हो गई है। पुराने गांधी जी कोई विदेशों का सामान कभी नहीं पहनते थे। विदेशी कपड़े को जलाते थ। आपको तो याद भी होगा थोड़ा-थोड़ा।

अब नया गांधी आया है तो कम्प्यूटर में भी विदेशी चाहता है। हम भेंट किससे करें? .... (व्यवधान)

श्री बूटा सिंह: कम्प्यूटर तो अब इधर बनते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र: नये गांधी के बारे में प्रधान मंत्री से हम बात ही नहीं कर सकते। उनके सामने आगे-आगे इटालियन और पीछे में इटालियन--हम बात क्या करें? कल निकल जाएगा अखबारों में कि पीछे यह इटालियन कैसा?

गृह मंत्री जी आपके यहां फोन करते हैं--सुनिये--मैं भागलपुर के दंगों के बाद आया था। (समय की घंटी) सासाराम के दंगों में आर०एस०एस० वाले और दूसरे लोगों ने क्या किया है कि शेरशाह का जो मकबरा है उसकी दीवार के साथ-साथ हनुमान जी को खड़ा करते हैं--। जगह-जगह इतने हनुमान ला रहे हैं हमको हनुमान जी से कोई झगड़ा नहीं है। हनुमान जी का राम जी का और रावण जी का जामवंत जी का विभीषण जी का जो मंदिर बनाना है बनायें लेकिन एक ही दीवार के साथ सट कर क्यों बनाते हैं। अलग-अलग दीवार से बनाइये। कल यहीं झगड़ा होगा।

मैंने पांच बार इनके यहां फोन किया। सुनिये गृह मंत्री जी पांच रोज

[श्री चतुरानन मिश्र]

फोन किया । पाँचों रोज इनका आदमी बोल कि वह बाथरूम में हैं । पांचवें रोज हमने कहा था जरूर हमारे गृह मंत्री जी को डिसेंट्री हो गई है खोज कर ।

हमने कहा कि क्या डिसेंट्री हुई है? यह आपका हाल है । न हम प्रधान मंत्री से मिल सकते हैं, न हम गृह मंत्री से मिल सकते हैं । तब हमने फोन किया कि बदायूं का दंगा है, बदायूं दंगा में जाना चाहिए था । वहां कर्फ्यू था । गृह मंत्री ने गृह सचिव को फोन किया ।

उपसभापति : चतुरानन जी, आप गलत टाईम पर फोन करेंगे तो क्या होगा।

श्री चतुरानन मिश्र : क्या ?

उपसभापति : आपने ऐसे ही समय पर फोन किया होगा ।

श्री चतुरानन मिश्र : लेकिन लगातार अगर पांच बार कोई बाथरूम में जाए तो हमको चिंता तो करनी होगी कि हमारा गृह मंत्री किस हालत में है । यह तो हमारा फर्ज है जब आपके सेक्रेटरी, होम मिनिस्ट्री को फोन किया तो कहा कि हम इंडिविजुअल के लिए नहीं कुछ एलाउ करते हैं । तो हम पेपर में जा सकते हैं । कहने लगे नहीं, ऐसा अगर हम करने लगेंगे तो हम इसी काम में लगे रहेंगे । लेकिन दरअसल यह मजाक करते क्या हैं ? दंगा रोक नहीं सकते, हरिजन हत्या रोक नहीं सकते, अपराध, कभी रोक नहीं सकते ।

उपसभापति : अब आप खत्म करिए।

श्री चतुरानन मिश्र : मैं कनक्लूड कर रहा हूं । मैं यह कह रहा था कि यह एक राष्ट्रीय समस्या है । इसका सभी दल के लोगों को बैठ करके निदान निकालना चाहिए । चाहे बाबरी मस्जिद का मसला हो या दूसरी मस्जिद का हो । लेकिन गृह मंत्री जी आपने लिखित हमको दिया है कि जो नेशनल इंटीग्रेशन काउंसिल है उसकी मीटिंग बुलाई जाएगी । हमारे जनरल सेक्रेटरी श्री राजेश्वर राव 75 वर्ष के बूढ़े हैं खुद जा करके प्रधान मंत्री से मिले कि इसकी बैठक बुलाइये । इस समस्या का निदान करने के लिए आप बैठक बुलाते ही नहीं हैं । ऐसा पर्दानशीं प्रधानमंत्री तो देखा ही नहीं । प्रधानमंत्री और सांसदों के बीच में कोई संबंध नहीं हैं यह हमारी ही बात नहीं है आपकी पार्टी के एम. पी. लोगों का भी यही ख्याल है ।

श्री सैयद सिब्ते रज़ी : यह आपका अपना ख्याल है ।

श्री चतुरानन मिश्र : अच्छा .... **(व्यवधान)** अगली बार आप मंत्रीमंडल में आ रहे हैं । (Interruptions).

All right. Both of you will get seats in the coming reshuffle (Interruptions). I know what relations you have with your P.M. (Interruptions). I am a freedom fighter. I am much pained about the present situation Perhaps you are not. इसलिए आप । हमने कहा कि अभी भी इसका निदान निकाला जाए । पूरे विपक्ष को अगर आप समझ लीजिएगा कि सभी देशद्रोही हैं तो आप देश नहीं बचा सकते । हमको कहते हैं कि एक जो भाग करके गए हैं विश्वनाथ प्रताप सिंह उसको आपने नेता बना लिया । यही कल्पनाथ राय जी का चार्ज है । आपकी कैबिनेट में दूसरी पार्टी का भगोड़ा ही ज्यादा मंत्री बना हुआ है । पुराने कांग्रेसी तो सब नालायक हो गए हैं । जो दूसरी पार्टी से गए हुए हैं आधे से ज्यादा वही मंत्री हैं उनके बारे में क्यों नहीं बोलते हैं । शीशे के घर में खड़े हो करके दूसरों पर ढेले फेंकते हैं यही आपका हाल है । इसलिए मैं आपसे अपील करूंगा कि इस समस्या को हल करने के लिए अविलम्ब मीटिंग बुलाएं विरोधी पक्ष को कोंफीडेंस में लें । आप शासक पार्टी में हैं । हमारा काम आपकी आलोचना करना लेकिन प्रधान मंत्री को

लिबरल एटीट्यूड ले करके सबके साथ बैठ करके रास्ता निकालना चाहिए और दंगों को आप रोकिए। अगर नहीं रोकेंगे तो मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यह आग पूरे भारत को जला देगी। 1940 में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान का प्रस्ताव पास किया था और 1947 में 7 वर्ष के अन्दर देश का डिवीजन हो गया। अगर यह राक्षस भाग गया तो सारे भारत को हमारे संविधान को हमारे प्रजातंत्र को हमारी सभ्यता को खा जाएगा। यह अत्यन्त दुखद बात है।... (**व्यवधान**)

श्री शंकर सिंह बाघेला : क्यों करना पड़ा। आप फ्रीडम फाइटर थे।

श्री चतुरानन मिश्र : हां फ्रीडम फाइटर थे।.... (**व्यवधान**) आप उस पार्टी में उस वक्त नहीं थे। शुरू से हिन्दू-हिन्दू रटना और जिसके चलते भारी झंझट होता है। इस देश में पार्टीशन के पहले हिन्दू 61 परसेंट और पार्टीशन के बाद 83 परसेंट हैं और तब भी आप कहते हैं कि हिन्दुओं का नुकसान हो रहा है। हिन्दुओ जाग जाओ। हिन्दुओ पर खतरा है। अरे चपरासी से ले करके राष्ट्रपति तक हिन्दू भरा हुआ है तो हिन्दू पर क्या खतरा है। अगर गड़बड़िया हिन्दू वहां बैठा हुआ है तो अच्छे लोग जाइये कौन रोक रहा है। लेकिन हिन्दू- हिन्दू आप रटे जा रहे हैं किसको आप डरा रहे हैं? यह भावना पैदा करके आप इस देश का सत्यानाश कर रहे हैं। सारी दुनिया तरक्की की ओर जा रही है साइंस और टक्नोलाजी में तो हमको क्या लज्जा नहीं होगी? महोदया जब हम देख कि साउथ कोरिया जैसा छोटा सा देश हमसे आगे बढ़ गया ताईवान हम से आगे बढ़ जाएगा, हांगकांग हमसे आगे बढ़ जायेगा और हम पीछे पड़े रहेंगे तो अत्यंत लज्जाजनक स्थिति होती है। इसलिए मैं हार्दिक अपील करूंगा कि सभी मिल करके साम्प्रदायिकता की समस्या का रास्ता निकालिए। इसको वोट का मसला मत बनाइये। यही मैं कहने के लिए खड़ा हुआ हूं। आशा है आप ऐसा करेंगे। धन्यवाद।

श्री सैयद सिब्ते रजी : माननीय डिप्टी चेयरमैन साहिबा,

हाथों पर न छींटे हैं,
न दामन पर कोई दाग
तुम कत्ल करते हो कि
करामात करते हो।

चतुरानन जी ने बहुत मानी खेज अंदाज में कुछ अच्छी बातें कहीं, लेकिन अगर यह बातें अपने उस दामन को, उस सोहबत से बचाकर कहते, जिनके साथ यह बैठे हुए हैं तो ज्यादा अच्छा होता जरूरी बात यह है कि आज वह भी जो अपने आपको फ्रीडम-फाइटर कहते हैं, हम अनुगृहीत हैं कि हम उनकी कुर्बानियों की वजह से आजादी मिली, लेकिन कम्यु-निस्ट पार्टी आफ इंडिया का रोल हमारे स्वतंत्रता संग्राम के जमाने में क्या था, इसके बाद जब प्रगतिशील कदम उठाने के मौके आए, इंदिरा जी के साथ क्या बेहेवियर था और आज राजीव गांधी जी, जो देश को विकास के रास्ते पर ले जाकर कम्प्युटराइज करके, साइंस और टेक्नोलोजी के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में आगे देश को बढ़ाना चाहते हैं तो उनको वे किस तरह से प्रताड़ित करने की कोशिश कर रहे हैं? इससे पता चलता है कि वे कितने प्रगतिशील हैं और किस तरह से किस मौके का फायदा उठाकर यह बात यहां पर कह गए हैं।

माननीया, आज अगर देखा जाय तो यकीनी तौर पर देश के हर घर के इंसान को इस बात के लिए चिंता है कि एक बार फिर धर्म को राजनीति से बिलवास्ता तौर पर जोड़ने की कोशिश की जा रही है। यकीनी तौर पर जिस तरह से आज एक तनाव और खौफ का माहौल इस मुल्क में पैदा हुआ है, उसके लिए जो सही जिम्मेदारी है, उन जिम्मेदार लोगों की तरफ इशारा बहुत हल्के तौर से करते हुए, उन्होंने मौजूए बहस को दूसरी तरफ ले जाने की कोशिश की।

[**उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई)** पीठासीन हुए।]

[श्री सैयद सिब्ते रजी]

सर, और कोशिश इस बात की है कि कांग्रेस की जो स्टेटस हैं, वहां पर जो फसादात हो रहे हैं उस पर ज्यादा तवज्जुह केन्द्रित की जाये । जहां तक बृहमंत्री जी ने कोशिश की, मैं यह कहना चाहूंगा कि सी० पी० आई० की एप्रोच और एक सर्वधर्म संभाव में विचार करने वाले की सोच में बड़ा अंतर है ।.... (व्यवधान)...।

मैं यह अर्ज कर रहा था कि कम्युनिस्ट पार्टी के एक मेम्बर के सोचने के ढंग... (व्यवधान)....

श्री राम अवधेश सिंह : महोदय, जब नौ बजे से ज्यादा बहस चलती है तो भोजन का इंतजाम होता है, लेकिन आज यह क्या तरीका है ? आखिर हम घर जाएंगे, फिर खाकर आएंगे, यहां यह तो संभव नहीं है । इसलिए अभी आप कार्यवाही रोक दीजिए, एडजोर्न कर दीजिए हाउस को । नौ बजे के बाद हम और कितनी देर तक रुकेंगे । व्यावहारिक बात बोलिए, क्या एप्रोच है ?

श्री सुकोमल सेन : खाली पेट क्या भाषण होगा ?

श्री राम अवधेश सिंह : अभी आप एडजोर्न कर दीजिए, कल चलाइए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : जिनको ज्यादा भूख लगी है केण्टीन ओपेन है ।... (व्यवधान)... आप बोलिए ।

श्री सैयद सिब्ते रजी : मैं यह अर्ज कर रहा था कि सी० पी० आई० के मेम्बर की एप्रोच में और सेकुलरिज्म या सर्वधर्म संभाव के विचार में विश्वास करने वाले की एप्रोच में निश्चित रूप से अंतर होगा । जैसा कि चतुरानन मिश्र जी ने खुद कहा उन्होंने तो भगवान पर विश्वास है, न खुदा पर विश्वास है । निश्चित रूप से कांग्रेस सर्वधर्म संभाव में यकीन रखती है । उसको न हिंदू के नाम से नफरत है, न मुस्लिम के नाम से नफरत है ।

9-00 p.m.

जहां तक मुस्लिम लीग से संबंध के बारे में अभी चतुरानन जी ने आरोप लगाया । तो मैं यह कहना चाहूंगा कि जैसा कि मैंने अर्ज किया, न हमको हिंदू के नाम से नफरत है, न मुस्लिम के नाम से नफरत है । मुस्लिम लीग के ऊपर कोई भी ऐसा चार्ज हिन्दुस्तान में नहीं है । उस मुस्लिम लीग से उसको मत जोड़िए जो पुरानी मुस्लिम लीग थी जिसने हिन्दुस्तान का बंटवारा कराया था । निश्चित रूप से मुस्लिम लीग पर रल में किसी एक भी रायट को कराने की जिम्मेदारी नहीं है जबकि बी० जे० पी० के ऊपर आर० एस०एस० के माध्यम से इस देश के अंदर कई दर्जन फसादात कराने की जिम्मेदारी है । इसलिए निश्चित रूप से आज जो फिजां बनी है उसकी सबसे ज्यादा जिम्मेदारी भारतीय जनता पार्टी पर है ।

श्री अश्विनी कुमार : आप गलत बात मत बोलिए । भाजपा के ऊपर कोई आरोप नहीं लगा है, आज तक । (व्यवधान) वह जो बोल रहे हैं, उसका प्रतिवाद मैं कर रहा हूं ।

श्री सैयद सिब्ते रजी : चाहे वह विश्व हिंदू परिषद हो, चाहे वह राम जन्म भूमि यज्ञ समिति हो, चाहे वह बजरंग दल हो या किसी और प्रकार का नाम हो, उन सब के जज्बात को उभारकर बी० जे० पी० राजनीतिक फायदा आगे आने वाले चुनाव में उठाना चाहती है । इसलिए 9 नवम्बर की तिथि रखी गयी है । जैसे हम से कई बार कहा गया है कि बहुत-से काम आपने दो साल पहले क्यों नहीं किए ? तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि यह 9 नवम्बर की तारीख आपने किस प्रकार तय की जबकि आगे आने वाले दो महीनों में चुनाव होने वाले हैं । आज कहते हुए खेद होता है कि राजनीति के नाम पर गांधी जी को राष्ट्रपिता कहने पर भी प्रश्नचिन्ह लगा दिया जाएगा । आज राजनीति में कुछ वोट हासिल करने के लिए गांधीजी के हत्यारे गांधीवाद का सहारा ले रहे हैं । निश्चित रूप से कांग्रेस का इतिहास उज्ज्वल रहा है । हो सकता है हम से कहीं गलतियां

हुई हों लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि कांग्रेस अपने आदर्शों के आधार पर आज कितने ऊपर जा चुकी है, आप एक हजार साल तक भी कोशिश करेंगे तो उन आदर्शों को छू नहीं सकेंगे। क्योंकि जब इस देश को कुर्बानी देने की जरूरत थी, इस देश को संगठित रखने की, इस देश को एकत्र करने की, इस देश की एकता, प्रभुसत्ता और सावरींट को बनाए रखने के लिए, इस देश की फरक वाराना और हमआगी बनाए रखने के लिए यदि खून देने की जरूरत हुई है तो हमारी पार्टी के महान नेता महात्मा गांधी ने खून देकर देश में सांप्रदायिक एकता कायम करने और तनाव को खत्म करने में योगदान दिया है।

अभी दो तीन साल पहले तारीखी अवगाक इस बात की गवाह है कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस देश की अखंडता, प्रभुसत्ता, सावरिंटी को बनाए रखने के लिए कुर्बानी दी है। अटल जी भारतीय जनता पार्टी के बड़े प्रोग्रेसिव नेता कहलाते हैं, वे कहते हैं कि बाबरी मस्जिद को हटा दिया जाएगा। कोर्ट में मामला है, लेकिन उसे सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। कोर्ट क्या वाडक्ट देगा, उसके लिए भी तैयार नहीं हैं। जहां तक शिला पूजन का सवाल है, मंदिर या मस्जिद बनाने का सवाल है, हम किसी मस्जिद बनाने के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन निश्चित रूप से हमारी सरकार ने इनोशिएटिव लिया है कि शांति और व्यवस्था बनी रहे, शासन प्रशासन बना रहे। इसीलिए विश्व हिन्दू परिषद के जो सम्मानित सदस्य हैं, उन्होंने 6 वायदे किये हैं कि शिला पूजन के दरमियान किसी प्रकार की शांति भंग नहीं होगी लेकिन उनके इन वायदों के बावजूद गुजरात में, राजस्थान में, मध्य प्रदेश में और उत्तर प्रदेश के अन्दर कुछ घटनाएं हुई हैं, फिरकावाराना फसादात हुये हैं। यह एक साजिश के तहत है। निश्चित रूप से जहां-जहां कांग्रेस की सरकारें हैं वहां दंगा में और फिरकावाराना फसादात कराए जा रहे हैं, किसी प्रकार से आगे आने वाले चुनाव के अंदर तख्त हासिल करने के लिए। यह एक बहुत ही गंदी साजिश है जो भारतीय जनता पार्टी के जरिए इस देश के अंदर चलाए जाने की कोशिश की जा रही है। इसलिए कोई भी मौका वह छोड़ नहीं रहे हैं, चाहे वह दुर्गा पूजा का मामला हो, चाहे वह नवरात्रि का मामला हो। गुजरात के अंदर इन्होंने नवरात्रि का लाभ उठाने के लिए शिला पूजन का इस्तेमाल करने की कोशिश की। मैं गृह मंत्री जी से, यह अनुरोध करना चाहूंगा कि आज जिस प्रकार की फिजा बनाने की कोशिश की जा रही है, उन्होंने उदारतापूर्वक बी०एच०पी० के वायदे पर यकीन किया है, लेकिन उसके ऊपर पूरी सतर्कता बनी रहनी चाहिये। देश की एकता, अखंडता और सांप्रदायिकता सौहार्द से बढ़कर इस देश के लिए कोई चीज नहीं हो सकती। हमारी स्वतन्त्रता दांव पर लगी हुई है। जिस तरह से बी०जे०पी० ने हिन्दू राष्ट्र बनाने की बात कही है, जिस तरह प्रधान मंत्री ने कहा कि यदि हिन्दू राष्ट्र बनाने की बात कही है तो इस देश के अंदर और जितने सम्प्रदाय हैं वह अपना राष्ट्र बनाने की बात कहेंगे तो देश टूट जाएगा, देश टुकड़े-टुकड़े में बंट जाएगा।

आज छोटी-छोटी बातों के ऊपर जो मौलिक अधिकार इस देश के अंदर अल्पसंख्यकों के हैं, उसके ऊपर भी तनाव पैदा करने की कोशिश की जाती है। उर्दू को दूसरी आफिशियल लैंग्वेज उत्तर प्रदेश में घोषित किया गया। भारतीय जनता पार्टी के श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने मुख्य मंत्री जी के पास जाकर उत्तर प्रदेश के, एक प्रोटेस्ट दायर की।

आज आर्टिकल 370 के बारे में कहा जा रहा है कि इसे समाप्त कर दिया जाए। आर्टिकल 370 हमारा वादा है, कांस्टीट्यूशन का वादा है, इस देश की कांस्टीट्यूशनल एसेम्बली का वादा है और आर्टिकल 370 समाप्त कर दिया जाएगा तो क्या होगा? आज संकुचित विचारधारा के लोग, आज महदूद जहनियत रखने वाले लोग देश को समझ नहीं रहे हैं।

[श्री सैयद सिब्ते रजी]

छोटे-छोटे प्रदेशों में देश को ढंढने की कोशिश कर रहे हैं । देश हमारा कन्या-कुमारी से लेकर काश्मीर तक फैला हुआ है और इस देश को संचालित करने के लिए, इस देश को आगे बढ़ाने के लिए, इस देश की गरिमा को बरकरार रखने के लिए, इस देश की स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिए, इस देश को हमेशा-हमेशा आजाद रखने के लिए देश को बावकार बनाने के लिए जरूरत ऐसी है कि बड़े विजन की नीति हो । आज छोटे-छोटे लोग बड़ी-बड़ी कुर्सियों पर आंखें लगाए बैठे हैं । चाहे वह वी०पी० सिंह हो, चाहे वह अटल जी हों या दूसरे कोई लोग हों, आज किस तरह से गठ-बंधन कर रहे हैं ? क्या इस देश की जनता 1977 से लेकर 1980 तक की वह तजुर्बा भूल सकती है जब मुक्तलिफ ख्यालात के लोगों ने एक प्लेटफार्म पर आकर केवल सत्ता हथियाने के लिए एकता का प्रदर्शन किया था ? जो एकता विचारों के आधार पर नहीं होती, जो एकता उद्देश्यों और मूल्यों के आधार पर नहीं होती, जो एकता कीमतों और कद्रों की बुनियाद पर नहीं होती, वह एकता टूट जाया करती है । आपको भी एकता टूटेगी, ज्यादा दिन नहीं लगेंगे । मैं सारी फंडा-मेंटलिस्ट फोर्सिस को भी कहता हूं चाहे वह मुसलमानों की हों या हिन्दुओं की हों । आज शहाबुद्दीन साहब कहते हैं कि इन्होंने इंसाफ पार्टी बना ली है । फिल्मी नाम लिख लेने से कोई पार्टियां नहीं बनती हैं । इंसाफ पार्टी किसका साथ देगी, जनता दल का साथ देगी । अगर जनता दल बी० जे०पी० के साथ नहीं जाएगा तो पूरे दिल के साथ देंगे लेकिन अगर बी०जे०पी० के साथ चला गया तो बी०जे०पी० के नुमाइंदों को वोट नहीं देंगे, जनता दल के नुमाइंदों को वोट देंगे । यह तो वही मिसाल हो गई जो हमारे देहात में बोली जाती है कि :—

"गुड़ खाना और गुलगुलों से परहेज करना"

कौन सा जनता दल ? वह जनता दल जिसने फिरकापराना जहनियत के लोगों से जाकर गठजोड़ कर लिया है कौनसा जनता दल, जिसके अंदर कोई नेता नहीं है है ? कौन सा जनता दल, जिसके अंदर ऐसे-ऐसे लोग बैठे हुए हैं जिनके सामने न किसी महिला की मर्यादा परम्पराओं की मर्यादा, न लोकतंत्र की मर्यादा है ? केवल मर्यादा है तो ताकत और शक्ति की मर्यादा है । लोकतंत्र के अंदर ताकत और शक्ति की परफारमेंस से और उसके मुजायरे से देश को सत्ता नहीं मिला करती, इस बात को समझना चाहिये । . . . (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : अभी आप कन्क्लूड करिए ।

श्री सैयद सिब्ते रजी : जी, मैं बहुत जल्दी खत्म करना चाहूंगा । मैं कहना चाहूंगा कि मन्दिर बनाने पर हमको कोई एतराज नहीं है लेकिन 25 हजार लोग जब वहां पहुंचेंगे तो हो सकता है कि वहां ऐसे नारे लगाए जाएं जिससे लोगों के जज्बात मजरुह हों और फसादाद और ज्यादा फूटे । इसलिए हमारे गृह मंत्री जी को, हमारी सरकार की जिम्मेदारी बढ़ जाती है और खास तौर पर मैं बूटा सिंह जी के बारे में कहना चाहूंगा उनको विश्व हिन्दू परिषद ने कई वायदे किए हैं, लेकिन प्रताप में 9 अक्तूबर, 1989 के अंदर जो लेख है आडोटोरियल और उसमें खत का जो रिफरेंस दिया है बूटा सिंह का झूठ और हकीकत—हम राम जन्म भूमि के बारे में हाई कोर्ट की व सेशन बैंच के फैसले को स्वीकार किए जाने के संबंध में हमारा स्पष्ट कहना है कि यह मामला अदालत के दायरे से बाहर है। श्री राम जन्म भूमि का फैसला हिन्दू समाज के धार्मिक अकीदे और विश्वास का मामला है । विश्वासों को बदलने का काम हमारे विधान ने अदालतों के सुपुर्द नहीं किया ।

अदालत का फैसला होने तक यह मकाम इसी तरह रहे । इस मामले में प्रतिनधि-मंडल की यह राय है कि भगवान

श्री राम के मुजव्विजा मंदिर का गर्भ गृह उसी मकाम पर रहेगा जहां पर आज श्री राम शिला विराजमान की पूजा चल रही है । 30 सितंबर के शिवपूजन कार्यक्रम ग्राम-ग्राम में शांतिमय तरीके से पूरे होंगे । विश्व हिन्दू परिषद् की तरफ से ये योजनाएं प्रकाशित की गई हैं कि श्री राम महायज्ञ के कार्यक्रम और श्री राम शिलाओं को अयोध्या पहुंचाने के कार्यक्रम शान्तिपूर्ण ढंग से संपन्न होंगे । मंदिर के शिलान्यास का कार्यक्रम 9 नवंबर के लिए मुकर्रर है । शास्त्रों की हिदायत के मुताबिक यह साढ़े 10 बज से शुरु होगा और 10 नवंबर को दोपहर 1 बजकर 35 मिनट पर पुष्पांजलि का कार्यक्रम होगा । शिलान्यास का कार्यक्रम प्रेरित रूप से संपन्न किया जाएगा और हिन्दू समाज का संघर्ष जन्मभूमि के गर्भगृह के लिए है । अगर यह गर्भगृह का स्थान 9 नवंबर तक हिन्दुओं को प्राप्त नहीं होता तो जन्मभूमि के लिए संघर्ष होगा ।

नामनिहाद मस्जिद को बदस्तूर बने रहने देना और चबूतरे के पास मंदिर निर्माण प्रस्ताव को यह प्रतिनिधिमंडल स्वीकार नहीं करता । राष्ट्रीय स्मारक का विचार हिन्दू समाज और इस प्रतिनिधिमंडल है । राष्ट्रीय स्मारक एक राष्ट्र और समाज के गौरव का प्रतीक होता है । भारत की 85 प्रतिशत हिन्दू समाज की पुण्य तीर्थ स्थली श्री राम जन्मभूमि पर खड़ी की गई यह इमारत राष्ट्रीय कलंक का निशान है, न कि गौरव का । इसलिए हिन्दू समाज इसे किसी भी हालत में स्वीकार न करे और अगर किसी हुक्म से यह थोपा गया तो इसका हिन्दू समाज में विरोध होगा । नामनिहाद मस्जिद को सम्मान के साथ मंतकिल करने का प्रस्ताव इस प्रतिनिधिमंडल को पूर्णतः स्वीकार है ।

जहां तक अकलियतों के कल्याणकारी प्रोग्रामों का ताल्लुक है, इसके बारे में प्रतिनिधिमंडल का यह मत है कि इन कार्यक्रमों की आड़ में जो अकलियतों के संतुष्टिकरण की नीति छुपी है, वह राष्ट्र के लिए मुहलिक साबित हो रही है । बजाय इसके कि उन्हें तालीम याफ्ता करके राष्ट्र की धारा में लाया जाए उन्हें विशेष सुविधाएं देकर अलग रखे जाने की नीति घातक है और इसमें इनका भी हित नहीं है । देश में चारों तरफ दंगे, अलगाववाद, खौफ वगैरह इसी कारण मौजूद हैं । इस प्रतिनिधिमंडल का विषय श्री राम जन्मभूमि है । इसलिए इस विषय पर हमारे विचार केन्द्रित हैं ।

मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस के जो कार्यक्रम चल रहे हैं, चाहे वे 15 सूत्री कार्यक्रम हों या कमजोर वर्गों के ऊपर उठाने के कार्यक्रम हों, वे मुख्य रूप से इन लोगों को पसन्द नहीं आ रहे हैं, । इस बात के ऊपर ध्यान रखना होगा कि माइनारिटीज के बारे में बहुत से सवालात उठाए जाते हैं लेकिन जब भी इस देश पर कष्ट आया, इस देश की हिफाजत करने का सवाल पैदा हुआ, इस देश को बचाने का इसकी सुरक्षा का सवाल आया, इस मुल्क के अल्पसंख्यकों ने, इस मुल्क की माइनारिटीज ने चाहे वे मुस्लिम हों, चाहे वे ईसाई हों, चाहे वे सिख हों, उन्होंने आगे बढ़कर कोशिश की है । मैं अपवादों की बात नहीं करता हूं । लेकिन इतना जरूर कहना चाहूंगा कि इस सब के बावजूद यदि बार-बार यह कहा जाएगा कि उनको मेन स्ट्रीम में लाने का प्रयास किया जाएगा, तो यह बी० जे० पी० या भारतीय जनता पार्टी का या कम्यूनल फोर्सेज का खोखला नारा है जो अब चलने वाला नहीं है । इस देश की जनता पूर्ण रूप से जागरूक हो चुकी है । इस तरह का तनाव और संघर्ष होता रहा है, सौ साल से इस देश में इस तरह का संघर्ष चल रहा है । एक तरफ भरमान ताकतें हैं जो हिन्दू धर्म में विश्वास नहीं रखती हैं, दूसरी तरफ रिवाइवलिस्ट ताकतें हैं, फंडामेंटलिस्ट ताकतें हैं । इस देश में आजादी के पहले भी संघर्ष रहा । कांग्रेस ने उनका जमकर मुकाबला किया और आगे भी हम इनका मुकाबला करते रहेंगे । इस देश की जो प्रभुसत्ता है उसको हम बनाकर रखेंगे । आज हम इस बात की कोशिश करेंगे कि इस देश में सैक्यू-

[श्री सैयद सिब्ते रजी]

लरिज्म को मजबूत करें। इस देश में जहां भी तनाव हो उसको कम करने की हम कोशिश करेंगे और सांप्रदायिक एकता और सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने की कोशिश करेंगे।

श्रीमन्, मैं आखीर में राजीव गांधी ने जो लोकसभा में 3 मई 1989 को भाषण दिया था उसको पढ़कर खत्म करूंगा।

"Secular India alone is an India that can survive. Perhaps an India that is not secular does not deserve to survive. India and secularism must remain synonymous to assure the glory of our civilisation and future of our country."

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: It is unfortunate that a very important discussion on a subject like this is being conducted in a near empty House because of the unreasonable attitude of the Government. Anyhow, it appears, the Government is only particular about putting the discussion on record rather than allowing the Members to participate in a meaningful debate.

Mr. Vice-Chairman, the deteriorating communal situation in the country is causing grave concern to all of us. There have been clashes in a number of places in the recent past and many innocent lives have been lost. In Kota alone, 15 people were killed, and Badaun which never witnessed a communal riot before, had seen a very bad communal incident where 30 people were killed. There is a real threat to secularism in this country today. We should not ignore it. Under the Representation of People's Act, we have made it mandatory for the political parties to include in their constitutions a clause that they believe in secularism, socialism and democracy, and what not! Mere inclusion in the party constitution is not enough. Secularism should be an article of faith for the people and for all the political parties.

The recent portents are very dangerous. There is a difference between this spurt in communal activities now and before. The revival of communalism, both on the Muslim side as well as on the Hindu side, is obvious. You call it Mulsim communalism or Hindu communalism; there is a revival. Not only revival, but postures are very aggressive. In the past, at least there was some facade in whatever communal thinking was there but that facade has now been disearded and the people talk about it openly today.

Role of religion in politics has increased in recent years, whether it is in Punjab or elsewhere, and above all, the communal thinking, communal actions and communalism as a whole are given respectability. That is the unfortunate development which we have to take note of. Respectability comes from various factors, apart from the tacit or overt support given by the political parties for narrow political purposes, and also certain visible actions of people at the helm of affairs. I had the occasion to tell earlier also. The participation of high dignitaries, whether here or in the States, in religious functions and religious rituals, and their projecton on the television and the official media, I don't think, is conducive to secularism. Religion must be a private affair, a personal affair. That is my view. There is no need to display it so blatantly, so aggressively and so collectively outside. And it is not for criticism. Recently, the Prime Minister went to Gujarat. He went to the Ambaji Temple. I do not question anybody's faith in religion or his freedom to worship in any temple. But the report says, the Prime Minister went there and worshipped the Goddess and declared that at the same temple, in 1980, Mrs. Indira Gandhi worshipped and because of that, she won the election,

and, therefore, he has also come there to launch his election campaign now. I do not know whether Ambaji will save him. I do not know because we have a tradition in Andhra Pradesh also. Every candidate in every election promises that he will go and shave his head before Lord Venkateswara if he wins.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Including your NTR.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: All candidates promise but only one wins and that candidate goes and shaves his head before the God. Others are shaved by the people. That is the only difference. Therefore to propogate such ideas, to promote such ideas is not conducive to secular thinking.

Another thing is, we should have a policy regarding processions, the size of processions, the nature of processions and how they should be conducted, how frequently they should be allowed. This has become a competitive affair. One religion takes out one procession, another group takes out another competitive procession and most of the clashes take place during these processions. Therefore, we should have some kind of restraint, there should be some understanding. I do not say that the State should impose its will but there should be an agreement among the leaders of different groups about the number of processions to be allowed every year, about the routes and how they are to be conducted. I also suggest, let us think of one occasion when people of all religions will join at least once, whether he is a Hindu or a Muslim or a Parsi or a Christian. There should be one occasion when all people of different religions will join in a common procession. We have to think of that.

My charge against the ruling party is, despite its profession of secularism, it has all along been encouraging communalism. Otherwise, it would not have grown to such an extent. There was a mention about Congress Party's alliance with Muslim League. We have instances of other Muslim organisations in Andhra Pradesh with which Congress Party has aligned. We have seen how the ruling party has succumbed to Muslim fundamentalists in the case of the Muslim Women's Bill and particularly in the 1980 and 1984 elections the Congress party blatantly played a Hindu card. There is no doubt about it. Particularly in 1984, after the assassination of Mrs. Indira Gandhi and after thousands of Sikhs were butchered in Delhi, the Congress party provoked the Hindu sentiment and took advantage of that. And what happened in Mizoram, everybody knows. The Congress party's manifesto mentioned that a vote to Congress(I) was a vote for Christian Government. Not only in religious matters but in regional matters also there is a tendency on the part of the Prime Minister and the Congress Party to exploit the sentiments. There is the classic example of P.M.'s election campaign in Tamil Nadu where he continuously spoke in terms of Dravidians and Aryans. He spoke about the Dravidian rule repeatedly in his election campaigns.

One more thing. Urdu is an Indian language. It is a great Indian language and we are proud of it. But, the Congress party, which has been in power for 42 years never thought of making it an official language in any State. I am not criticising the action. I am welcoming it, but when there is such a fierce controversy...

SHRI GHULAM RASOOL MATTO (Jammu and Kashmir): I may interrupt you. In Jammu and Kashmir Urdu is the official language.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: There it is the language of the majority. You have to do it, but I am mentioning about the other States. When there is a fierce controversy about Ram Janma Bhoomi and Babri

[Shri Parvathaneni Upendra]

Masjid issue and just before elections, what prompted the Congress party to make this announcement? Is it the right opportunity? They could have done it earlier or later—if they continue in power—but why suddenly this controversy has been raised I do not know. I do not know why other parties also reacted in that manner. I am also not happy with some of the Opposition parties who made it an issue. It could have been ignored. But they also made it an issue. It is an unfortunate thing.

I would like to stress one more point. All these communal incidents—almost all of them—have been taking place in Congress-ruled States, according to Government's own official statistics...

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF WATER RESOURCES AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): That is why you know who creates violence. Only in Congress (I) ruled States, you find violence.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: in 1988-89, Maharashtra came first with 96 incidents, second was Uttar Pradesh with 85 incidents, third was Bihar with 84 incidents, like that. And if you take the overall picture, in 1977 there were only 188 incidents, whereas in the last three years the number has increased to 764, 711 and 611. This shows that the incidents of communal violence are increasing day by day and they are mostly in Congress-ruled States—almost all of them. We had seen what happened in Merrut. We had seen the role of PAC. I also went there and saw the devastation caused by the PAC. We know what they had done in Hashimpura. But till today, how many have been punished? What action was taken against them? And what is happening in Jammu and Kashmir today? It is a very unfortunate thing. And the Congress Party is a coalition partner there, along with our friend, Mr. Matto's party. As a contrast, the record of the non-Congress(I) Governments, the Home Minister should admit, is excellent. You take Andhra Pradesh, or Kerala or West Bengal.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: Mr. Upendra, in regard to Jammu and Kashmir, I tell you, there is no communal tension there. It is anti-national activities today, I agree, but there is absolutely no communal tension. Still in my mohalla where I live, there are five Hindu houses in a cluster of about two thousand houses and they are living there very wonderfully. In Kashmir, there is a mosque which is 600 years old and in the basement is a mandir to which Hindus go daily. It is still continuing and will continue. That is what binds us together.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: I welcome your assertion. What I am saying is that the record of the non-Congress Governments is praiseworthy. That also indicates that if there is a political will, these things can be controlled. What you need is political will, what you need is conviction of the party in power that it will not use the situation to its political advantage or that the Opposition parties will not also do so. I will just take two or three minutes more.

Then I will come to this current controversy about Ram Janambhoomi issue. When I participated in the last debate on behalf of my party, I clearly said that we do not welcome this move of the Vishwa Hindu Parishad, at this time particularly, and go to that extent. Anybody can build a temple, we have no objection. In fact, on behalf of the National Front, we have clearly said that we are not for demolition of the mosque. But at the same time, the desire of the Hindus to construct a temple must be recognised. This problem is amenable to solution through negotiations

It can be resolved. After all it started in 1949 when suddenly Rama's idol appeared in the mosque. Forty years have since passed and I cannot understand why suddenly, just before the elections, this problem has been so accentuated. Therefore, the tendency of the Vishwa Hindu Parishad, or its desire to demolish the mosque—we are not in favour of it, we strongly oppose it. They can build a temple, they can go ahead with that. In fact, I was relieved when I was told that the shilanyas will take place some 250 feet away from the mosque. But now they say that the place where they will put the shilanyas will be the Mahadwar while the sanctum sanctorum will be inside the mosque. That cannot be accepted and no sane person will advocate demolition of the mosque even if some Muslim organisation is prepared for that. That is not good. That is not good. Also, I do not think it is practicable to shift the whole mosque somewhere and all that.

Now the problem is this. Ayodhya is considered the birthplace of Rama and a temple is required. Now it seems the place has no relevance. The site has become more important now. That aspect cannot be ignored. We must find a solution to this. After all, Ayodhya is the birthplace of Rama: everybody recognizes it. You can have a temple 250 yards away or 500 yards away from the mosque. What harm is there? Therefore, I feel that there should not be any obstinacy in this matter.

Also, the Congress Party's role in this is questionable. They are playing both the cards. They are playing the Hindu card and they are playing the Muslim card also. You are giving all facilities to the Vishwa Hindu Parishad to carry their bricks and all that. At the same time, you are trying to curry favour with the Muslims, to get Muslim votes, by sympathizing with them. That is a dangerous policy. You have not done anything to solve this problem through negotiations. Now you are trying to exploit the sentiments of both but, in fact, both will desert you and you will lose both of them.

I do not want to name them—you know them—and I am not happy that some of our political friends have come out openly in support of certain demands, and the profession of secularism which they have been doing all along has now come under suspicion —it is suspect—and I hope they will retrace their steps and become a little more moderate.

Before I conclude, I would like to say that in this country, the Indian people are secular, are pragmatic. Hindu communalism or Muslim communalism never cuts ice in this country. Otherwise, Rama Rajya Parishad and Hindu Maha Sabha would have been ruling this country, or, the Muslim League would have been winning all the Muslim votes in this country. Indian people will never accept this kind of a communal sentiment. If any political party or elements think that by playing this card they can get anbody on their side, they will be sadly mistaken.

Now, the National Integration Council has been mentioned. It is high time it met frequently. There is a sub-group and they gave a number of recommendations, but I do not know what happened to all those recommendations. Nothing is happening. We must activate that body and make it meet more frequently. There are other suggestion also. They have given a number of suggestion on how to post officers there, a mixed police force there, how to make officers accountable for actions there, happenings there and have a periodical review of the situation in very sensitive areas. That should be done. It is a continuous problem and it should be treated like that.

Lastly, on behalf of my party, I fervently appeal to all sections of the

[Shri Parvathaneni Upendra]

people to maintain communal harmony harmony and peace, and that is the only bulwark for the unity and integrity of this country. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Shri Pachouri. Not more than ten minutes, please.

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, पूरा सदन देश में बढ़ रही साम्प्रदायिकता के ऊपर चिंता जाहिर कर रहा है और साथ ही जो साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं उसके प्रति चिंतित है। इसके बारे में मैं अपनी बात हमारे साथी भाई बेकल उत्साही जी की इन पंक्तियों से प्रारम्भ करता हूं—

"वह धुंआ धरती से उठेगा, गगन जल जायेगा,
जिंदगी के कारवां का बांकपन जल जायेगा,
कौन सी भाषा है, किसका धर्म है, मत छेड़िए
वरना जिद की आग में सारा वतन जल जायेगा।"

महोदय, हम सब भली भांति परिचित हैं जब भी साम्प्रदायिक दंगे होते हैं तो बेटियां, रोटियां, छिन जाया करती हैं। मान मर्यादाए लुट जाया करती हैं, राष्ट्रीय गौरव ध्वस्त हो जाता है, हमारा राष्ट्रीय जीवन जर्जर हो जाता है और जो हमारी सामूहिक राष्ट्रीय शक्ति है वह समाप्त ही जाती है। इसलिए यह जरूरी है कि हम सब मिल जुल कर एक ऐसा उपाय निकालें, एक ऐसा निदान निकालें कि हम संकीर्ण विचार धाराओं से उठकर एक व्यापक दृष्टिकोण अपनायें। हमारे देश में जो साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं उन्होंने हमारी धर्मनिरपेक्षता को काफी झकझोरा है। इन दंगों से यह जाहिर होता है कि राजनीति और राजनीतिक उददेश्यों के लिए साम्प्रदायिकता को किस ढंग से इस्तेमाल किया जा रहा है।

महोदय, हमारे देश में धार्मिक सदभाव की गौरवशाली परम्परा रही है। देश को एक सूत्र में बांधे रखने वाली भारतीयता के बंधन को पिछले दिनों बड़े योजनाबद्ध तरीके से कुछ फिरकाप्रस्त ताकतों ने तोड़ने की कोशिश की है। भाई से भाई को कटाने का यत्न किया जा रहा है। राजनीति और धर्म के इस बेमेल गठबंधन को जितना धिक्कारा जाए, वह कम है।

मान्यवर, मैं कहना चाहूंगा कि भारतीय समाज किसी मजहब की जागीर नहीं है और न ही भारतीय राजनीति किसी धर्म की मोहताज हो सकती है। सेक्युलर हमारे सोचने का ढंग है और हमारे जीने का तरीका है और सर्व धर्म समभाव हमारी धरोहर है। इस पर हम किसी भी प्रकार से आंच नहीं आने देंगे। लेकिन पिछले दिनों से यह देखा जा रहा है कि फिरकाप्रस्त शक्तियों ने मुंह बा लिया है। इन फिरकाप्रस्त ताकतों का राष्ट्र के सामने मौजूदा असली जो समस्यायें हैं, चाहे वह अशिक्षित की समस्यायें हों, चाहे वह गरीब की समस्या हो, चाहे बेरोजगार की समस्यायें हों, इनके प्रति कोई भी रूझान नहीं है और इनके समाधान के लिए उनके पास कोई भी रास्ता नहीं है।

मान्यवर, हमारे यहां जो बेकारी हो रही है, हमारे यहां जो मंहगाई की समस्या है, इससे हट कर उनका ध्यान इस बात की ओर है कि देश में सांप्रदायिक सदभाव कैसे बिगाड़ा जाए। इसी संबंध में मैं भाई बेकल उत्साही जी की इन पंक्तियों को उद्धृत करना चाहूंगा कि—

"लोग तो मंदिर कभी मस्जिद बनाने में रहे,
भूख से इनसानियत फुटपाथ पर मरती रही,
धर्म की चौखट पर नफरत दिये जलाती रही
और
अंधेरे में मुहब्बत खुदकशी करती रही,
कहीं पर राम का व्यापार कर रहे हैं लोग,
कहीं रहीम भी ईमान की तिजारत है,
तमाम देश का धन धर्म का निवाला है,
मगर गरीब के हिस्से में सिर्फ मेहनत है।"

मान्यवर, हमारे देश की जो राष्ट्रीय अस्मिता है, उसको चकनाचूर करने के लिए पिछले कुछ दिनों से कुछ फिरकाप्रस्त ताकतें सक्रिय हैं और हम यह देख रहे हैं कि यह फिरकाप्रस्त ताकतें अलग-अलग नामों पर जब भी चुनाव आता है, तो ऐसा सदभाव बिगाड़ने की कोशिश करता हैं । यदि हम सन 1952 को लें, तो हमारे देश में हिंदू-मुस्लिम दंगों के घाव उभारने की कोशिश की गई । यदि हम 1957 के चुनाव को लें, तो हिंदू कोड बिल की बात कही गई, यदि हम 1962 के चुनाव को लें, तो गो-रक्षा की बात कही गई और यदि हम उसके बाद के चुनाव को लें, तो गंगा जल यात्रा की बात कही गई । कन्या कुमारी में भारत मंदिर बनाने के लिए जो गंगा जल यात्रा निकाली गई, उसके लिए करोड़ों रुपये इन लोगों ने इक्ट्ठे किये ।

यह वह ताकतें हैं, जोकि फिर मुंह बाए खड़ी हैं और इस देश की राष्ट्रीय अस्मिता को झकझोरने की कोशिश कर रही हैं ।

मान्यवर, आज देश के कोने-कोने में ऐसी धार्मिक सेनाओं का गठन हो रहा है जो राष्ट्र की एकता और अखंडता को खतरे में डाल रही हैं, जैसे कि शिव सेना, बजरंग दल, आदम सेना, अली सेना है । कुछ सेना तो त्रिशूलधारी हैं, मान्यवर, और कुछ चांद की शक्ल वाली खंजरधारी सेनाएं हैं, कुछ तो फैनेटिक हिंदूज का सपोर्ट है और कुछ को फैनेटिक मुसलिम्स का सपोर्ट है ।... (व्यवधान)

मान्यवर, इन सेनाओं को देख कर यह कहा जा सकता है कि देश की गर्दन पर धर्म की तलवार लटक रही है । समय रहते इन सेनाओं पर रोक लगाना जरूरी है । धर्म एवं साम्प्रदाओं की रक्षाओं के नाम पर बनाए जाने वाली इन सेनाओं ने इतने मासूमों का खून चूसा है । उससे हमारा वर्तमान कलंकित हो गया है । इस पर सख्ती करने की आज बहुत जरूरत है ।

मान्यवर, हमारी जो खुले दिमाग वाली भारतीय संस्कृति है, उस पर कुछ दल—समर्थक राजनीतिक दल के लोग चोट करना चाहते हैं । मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि एक राजनीतिक दल ऐसा है जिसके ओहदेदार सदा समर्थक रहे हैं राजस्थान में, लेकिन उस राजनीतिक दल ने उसके खिलाफ अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की है ।

हमारी जो राष्ट्रीय अस्मिता की बात मैंने कही, उसको चकनाचूर करने के लिए ऐसे ही विघ्न संतोषी जो राजनीति दल हैं, वह कोशिश कर रहे हैं ।

मैं यह कहना चाहूंगा कि आज हमारे देश में जितना कि बहुसंख्यक का अधिकार है, उतना ही अल्प-संख्यक का भी अधिकार है । अल्प-संख्यक और बहु-संख्यक को मंदिर और मस्जिद विवाद के चश्मे से देखना एक राष्ट्रीय शर्म की बात है । अपनी लगातार हार के बाद कुछ राजनीतिक पार्टियां कुछ काल्पनिक मुद्दा लेकर चल रही हैं । जैसा कि राम जन्म-भूमि और बाबरी मस्जिद का विवाद बताया । जैसा मैंने बताया कि 1952, 57, 62, 67 में जहां मुस्लिम सम्प्रदाय की बात कही, जहां हिंदू कोड बिल की बात कही, जहां गंगाजल की बात कही, जहां गो-रक्षा की बात कही, वैसे ही अब राम जन्म-भूमि और बाबरी मस्जिद का मसला यह लोग उठाने की कोशिश कर रहे हैं । ये ही वे लोग हैं जो धार्मिक जलसों सशस्त्र चलना अपना बड़ा गौरव समझ रहे हैं, ऐसे सशस्त्र जलसों पर रोक लगाना जरूरी है । लेकिन देखना होगा कि इसमें वह कौन से लोग हैं, मान्यवर, हम को देखना होगा कि इनके पीछे कौन सी ताकत हैं । निश्चित रूप से मैं कहना चाहता हूं कि इसके पीछे भा०ज०पा० जो आर०एस०एस० की गोद में बैठी हुई है वह ताकतें हैं । गांधी के प्रदेश गुजरात में हुए दंगों की बात कही, गुजरात जो महात्मा गांधी का प्रदेश है उसमें दंगे हुए । मान्यवर, गुजरात में दंगे हुए, लेकिन इसके पीछे किसका हाथ है? मैं

[श्री सुरेश पचौरी]

इशारे से कहना चाहता हूं कि 30 जनवरी, 1961 को "आर्गेनाइजर" में महात्मा गांधी के बारे में लिखा था, जो भारतीय जनता पार्टी का पेपर है कि महात्मा गांधी को वह राष्ट्रपिता मानने को किसी भी हालत में तैयार नहीं हैं और हमें उन्हें राष्ट्रपिता कहना छोड़ देना चाहिए । यदि हम राष्ट्रीयता के पुराने आधार को मानते हैं तो वह हिन्दुत्व के सिवा और कुछ नहीं हो सकता । यह आर्गेनाइजर में 30 जनवरी, 1961 को लिखा गया है, जो भारतीय जनता पार्टी का मुख्य पत्र है । तो यह इशारे के लिए बहुत कुछ बातें हैं । गुजरात में यदि दंगा हो रहा है महात्मा गांधी के प्रदेश में तो उसके पीछे किन ताकतों का हाथ हो सकता है? हाफ पैंट पहन कर लाठी भांजने वाले ये आर०एस०एस० के लोग, जिन की गोद में भारतीय जनता पार्टी बैठी हुई है, जिनके कंधों पर भारतीय जनता पार्टी बैठ कर चलती है, उसी के पंजाब में फगवाड़ा प्रशिक्षण शिविर में 21 अगस्त, 1947 को हैडगेवार जी ने कहा कि कुछ दिनों में हमारा देश जब आजाद हो गया उसके बाद उन्होंने कहा कि देश में एक समय ऐसा आ जाएगा, ऐसी अव्यवस्था फैल जाएगी कि आधा भारत के लोग निराश हो जाएंगे और वह स्वीकार करने लगेंगे कि भारत यदि आजाद हो गया तो वह बहुत खराब होगा । मान्यवर, इससे आगे बढ़ करके हैडगेवार ने "बंच आफ थाट्स" की पुस्तक में लिखा कि हिन्दू राष्ट्र के इतिहास में 15 अगस्त, 1947 बेमिसाल गद्दारी का दिन है । यदि भारतीय जनता पार्टी के लोग इसका खंडन कर दें कि यह बंच आफ थाट्स में नहीं लिखा तो मैं अपनी बात नहीं उठाना चाहूंगा । मान्यवर, कहने का मतलब यह नहीं कि भारतीय जनता पार्टी के लोग कितने फिरकापरस्त हैं, भारतीय जनता पार्टी जिस आर०एस०एस० के सहारे चल रही है वह कितना फासिस्ट संगठन है, मेरे यह उद्धृत करने का मतलब यह है कि जब हम सांप्रदायिक दंगों पर बात कर रहे हैं तो हमें ऐसी पार्टियों के बारे में विचार करना चाहिए कि उनकी गतिविधियां क्या हैं । देश में जब दंगे हुए, मेरे प्रदेश में भी दंगा हुआ सागर में और जबलपुर में जब दंगे हुए तो उसके लिए आर० एस० एस० के लोग जिम्मेदार पाए गए । केरल में यदि दंगे हुए मान्यवर, मैं आपको बताना चाहता हूं कि केरल के तेलिचेरी में जब दंगे हुए और उसके लिए एक आयोग का गठन हुआ तो उस आयोग ने भी आर० एस० एस० की भूमिका को काफी आब्जैक्शनेबल बताया और यह बात बतायी अभी-अभी भारतीय जनता पार्टी के लोग इसका खंडन करते हैं तो मैं बैठ जाऊंगा । उस आयोग ने यह बात बताई कि इसके पीछे आर० एस० एस० का हाथ । मान्यवर, आर० एस० एस० वह संगठन है जो राष्ट्रीय झंडा, जो राष्ट्रगीत को नहीं मानता है । मान्यवर, बंच आफ थाट्स जो हेडगेवार की है उसके पृष्ठ 128 पर यह लिखा हुआ है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक की धारणा में हमारा राष्ट्र ध्वज भी समस्त भारतवासियों को प्रेरणा नहीं देता। इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है? यह हंसने की बात नहीं है। पृष्ठ 128 बंच आफ थाट्स को आप देख लीजिए जो राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गीत को नहीं मानते हैं । इसके आग सुनिए तिरंगे के बारे में क्या लिखा गया है । तिरंगे के बारे में इस में लिखा गया है कि यह तिरंगा हमारे मन-मस्तिष्क में एक शून्य की स्थिति पैदा करना है जबकि भगवाध्वज जिसके लिए आप वामदक्ष अपनी आर० एस० एस० की शाखा में करते हो वामदक्ष उस भगवाध्वज सब से उन्नत गौरवमय तथा राष्ट्रवाद का सब से अच्छा प्रतीक है। मान्यवर, यह वे ताकतें हैं जो इस देश के सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ना चाहती हैं। आज इस देश की प्रगति और विकास को सही रूप में नहीं देखता चाहती हैं। यह वे ताकतें हैं भारत एक उन्नत देश के रूप में राजीव जी के नेतृत्व में गिना जाए तो ये

ताकतें चाहती हैं कि वह न गिना जाए इसलिए इस देश में सांप्रदायिकता फैलाना चाहती हैं, धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, सूबे के नाम पर, भाई से भाई को जुदा करने की कोशिश करती है, हर चुनाव के पहले जैसे मेरे से पूर्व वक्ता सिब्ते रजी ने कहा कि यह काल्पनिक मुद्दा देते हैं हमेशा यह चुनाव में हारते है। इसलिए इन्हें अपने कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए काल्पनिक मुद्दे की जरूरत होती है जैसे गोरख शाह आंदोलन का मुद्दा इन्होंने लिया, उसके पहले हिंदू-कोड बिल का मसला लिया, उससे पहले रामजन्म भूमि की बात हुई। राम शिला पूजने की बात, मान्यवर, कही जाती है तो यह राम शिला पूजने में कौन लोग हैं? राम शिला पूजने के चल-समारोह में यदि भा० ज० पा० के नेता यहां इस सदन में कह दें कि वह शामिल नहीं होते तो मैं अपनी बात वापस ले लेता हूं। केवल आर. एस. एस. नहीं रहती, केवल बजरंग दल नहीं रहता, केवल शिव सेना नहीं रहती, इसमें भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता रहते हैं और उस चल-समारोह में, उस जुलूस में क्या होता है, किस प्रकार के भड़कोले नारे रहते हैं यह सोचने की बात है। इसी प्रकार के चल-समारोह में ऐसे भड़कीले नारे और इस प्रकार के शस्त्रों का प्रदर्शन जो किया जाता है, उन पर रोक लगाना बहुत जरूरी है और उन सारे लोगों पर चौकसी रखना जरूरी है, जिनकी विशेष रुचि की वजह से यह सब होता है।

मान्यवर, दंगों के संबंध में उठाए जाने वाले कदमों की बात हुई। कुछ लोगों लोगों ने कहा शांति-कमेटी बनानी चाहिए। शांति-कमेटी तो जब बनाई जाती है, जब दंगा हो जाता है। मान्यवर, मेरा कहना यह है कि ऐसे सेंसटिव एरियाज आई-डेंटीफाई गवर्नमेंट को कर लेना चाहिए और कुछ आभास हो कि वहां सांप्रदायिक तनाव बढ़ रहा है, उससे पहले कोई न कोई कमेटी गठित होनी चाहिए। तब होता क्या है, यह पीस-कमेटी बनाता कौन है? यह एडमिनिस्ट्रेशन बनाता है। सोचने की बात यह है चूंकि एडमिनिस्ट्रेशन सफल नहीं हुआ, इसलिए तो सांप्रदायिक दंगे हुए। मान्यवर, ऐसी फिरकापरस्त ताकतें आर० एस० एस०, आर. एस.एस. की गोद में बैठी हुई भारतीय जनता पार्टी और उनसे जुड़ें हुए अन्य लोग, जो अपनी राजनीतिक रोटियां सेकना चाहती है इस प्रकार के सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ कर, ऐसे लोगों पर चौकसी रखी जाय। कमेटी में उन लोगों को शामिल किया जाय, ऐसे प्रतिष्ठित लोगों को शामिल किया जाय, जिनकी कोई न कोई मान्यता है समाज में, जो समाज को तोड़ने से, भारत को तोड़ने से बचाना चाहते है जो यह चाहते हैं कि उस प्रदेश में उस क्षेत्र में मान-मर्यादाएं न लुटें, जो यह चाहते हैं कि रोटियां और बेटियां, उनकी अस्मिता, उनकी इज्जत न लुटे और जो यह चाहते हैं कि राष्ट्रीय जनजीवन खतरे में न पड़। इसलिए मेरा अनुरोध यह है कि इस प्रकार की कमेटी का गठन एडमिनिस्ट्रेशन के माध्यम से नहीं बल्कि संजीदा लोगों को जोड़कर, अच्छे लोगों को जोड़कर सरकार के माध्यम से होना चाहिए।

मान्यवर, यहां पर कहा गया कि जहां कांग्रेस रुल्ड स्टेटेस है वहां पर ज्यादा दंगे होते हैं। बड़ी स्पष्ट बात है कि जो कांग्रेस रुल्ड स्टेट्स हैं, वहां व्यवस्था कौन बिगाड़ना चाहेगा। अपने घर में कौन आग लगाना चाहेगा? यह बिल्कुल स्पष्ट बात है, स्वय सिद्ध बात है, कॉमन सेंस की बात है कि इसके पीछे कौन ताकतें हो सकती हैं और ये ताकतें वह हो सकती हैं, जो कांग्रेस के समाजवादी समाज की रचना और धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र की स्थापना में यकीन नहीं रखतीं। इसलिए ऐसी ताकतों पर भी चौकसी रखना बहुत जरुरी है। होता यह हैं कि दूसरों पर इल्जाम यह लगाने लगते है। तो ऐसे लोगों पर भी बहुत ज्यादा ध्यान रखना जरूरी है। यह जो कांग्रेस रुल्ड स्टेट्स के बारे में बात कुछ

[श्री सुरेश पचौरी]

लोगों ने कही, उसके संबंध में मैं यह कहना चाहूंगा कि हम लोग तो इस बात के लिए चिंतित हैं कि हमारे यहां समप्रदायिक सदभाव बना रहे, हम लोगों की तरफ से हमेशा यही प्रयास होता है।

मायवर, यह प्रश्न केवल एक पर्टिकुलर क्षेत्र का नहीं है, पर्टिकूलर प्रदेश का नहीं है बल्कि यह प्रश्न राष्ट्र का है। राष्ट्र का जीवन जर्जर न हो जाए, राष्ट्रीय धरोहर को किसी प्रकार का खतरा न हो सके, इसके लिए हमें सामूहिक यत्न और प्रयत्न करने की आवश्यकता है, इसके लिए संकीर्ण दायरे से ऊपर उठकर एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्कता है। मुझे विश्वास है कि आज जब इस शार्ट-डयूरेशन के माध्यम से इन सांप्रदायिक दंगों के प्रति इस माननीय सदन में चिंता व्यक्त की जा रही है तो निश्चित रूप से हम इस नतीजे पर पहुंचेंगे, इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि हमारे देश में अमन और चैन बना रहेगा। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr. Arangil Sreedharan. Please make your speech as short as possible.

SHRI ARANGIL SREEDHARAN (Kerala): Mr. Vice-Chairman, Sir, firstly, I am not Ratnakar Pandey. Secondly, I cannot make a long speech. I do not follow his example.

Sir, this is a very important discussion. But I am afraid the Government has not attached that type of importance to this question, as is obvious from the manner in which they have pushed this question to the fag end of the day. This is something which vitally concerns the future of the country. This question concerns the very existence of our country as a secular, socialist democracy. What we saw in Murshidabad, Moradabad, Bhiwandi, Meerut and Hospet are symbols of a disease. I do not think they are a disese by themselves. Where does this virus begin? Let us turn back to the history of our country during the freedom struggle and immediately after the freedom struggle. Communalism in India got an impetus after the vivisection and division of India. Who were responsible for that? That took place when I was a Congressman. With a very heavy heart, we found this country getting divided. So many Members of the Congress were talking eloquently about Mahatma Gandhi. But Mahatma Gandhi was against division of the country. He walked out of the Congress Committee as a very sad man. His own important lieutenant betrayed him and the guilty Congress leadership created division of this country. After that division what happened? We were told by Jawaharlal Nehru that once division took place, there would be communal amity and communal harmony. That was the argument put forward by the Congress party to get the policy of division approved by the All India Congress Committee. After division, we found ourselves getting divided and divided and further divided because this Government adopted a secular policy. (*Interruption*)...

SHRI SUKOMAL SEN: There is no Press Reporter.

SHRI ARANGIL SREEDHARAN: Is it a fact that the Indian State is getting communalised increasing? The Indian State is acquiring a Hindu character and Hindu functions and Hindu rituals are being adopted by the Government. Till recently, in my State, Ayudha puja was celebrated in police stations. For every inauguration, whether it is the Prime Minister or the Home Minister, anybody who goes there, lits a Hindu lamp a custom which is essentially Hindu. Secularism means separation of religion from State. Instead of separating it and building up a secular State, what you are doing is you are giving impetus to communal habits and communal tra-

ditions. In a country where politicians go to astrologers, in a country where State machinery is misused by Ministers to go to temples, communalism is bound to grow. Our Prime Minister went to Guruvayur temple. It is a very good thing that he went there. At least he could remove his bullet-proof jacket inside the temple and get some free breeze on his back. So, this communalisation of State is there. Everywhere, there is a political bargaining. I am not looking at the problem from a partisan point of view at all. When you decide about a candidate in the election, you try to find out to what caste he belongs, which community has the largest number of votes? If election is the basis of democracy, the prop of democracy, in that experiment, we hae imported communalism. An hon. Member from the Congress bench said, the Muslim League in Kerala is not a communal organisation. Who told him this? I have known the Muslim League for the last 25 years. The Muslim League that exists in Kerala is the remnant of the old Muslim League which fought for the partition of this country. Mr. Jacob is there. Let him deny. Till recently, in the constitution of the Muslim League, there was a provision that if you want to become a member of the Muslim League, if you want to join the Muslim League, you should be a Muslim. All the Muslim League MLAs in Kerala are from one community. the Muslim community. Let all the M.Ps. be from the Muslim community. I have no objection. But don't come and tell us that the Muslim League is not a communal party. You accuse other parties where others can join persons of any community can join as communal parties. At the same time, when it comes to the Muslim League, there is no such accusation because the Congress wants the advantage and support of the Muslim League. That type of politics has led this country to ruin. What is my identification? Is it a secular identification? There are many people in this country who use their caste name after their name. Why don't you bring a Constitutional amendment and say that the name of the caste should not be affixed after the name? Are you ready to bring such an amendment; You take even a school certificate. In the certificate, your name is entered; your father's name is entered; then your caste is entered and your religion is entered and your surname is entered. Why? Can't there be a secular identity? Just because I am born to Hindu parents, why should I continue that identity through my certificate book, through my text book, through everything? Read some of our books from history. It is high time we revised them. The Britishers created a type of Muslim-Hindu communalism in this country. But you are continuing it. We speak of Tippu Sultan. What is the story going on now? He was a great General. He was one Indian General who said, "I will not fight an Indian General." Cock and bull stories have been said about Tippu Sultan. What have you done in the history book to correct it. This very narrow outlook has brought this country to this state of affairs. Who is responsible for that; I would state unhasitatingly that to a large extent, the Congress party is responsible for that. When Opposition parties are in power, in such States, they connive with communal forces to topple the Government. That is what has happened in Kerala and still they have the Muslim League in their coalition. They come and say that the Opposition is not secular and that there are forces in the Opposition which want to destroy communal amity in this country. My party was the first in this country to appoint a minorities commission. The Janata party appointed a minorities commission. I am pround of it. It was when my party was in power that a Muslim was appointed as the Chief of the Air Staff a Christian was appointed as the Chief of the Naval Staff. You were in power for a long time. Did you ever think of such a thing? Did not the Congress party raise the seniority question in appointing the Air Chief, Naval Chief and Army

[Shri Arangil Shreedharan]

Chief? There is built-in communalism in this country and if that communalism is to be destroyed, all the parties should have a common understanding. On these issues there can be consensus. Not only committees and meetings. All the political parties should take an oath that they will fight communalism wherever it is. I know it is not easy to fight communalism because it is engrained in us. But without separating religion from politics, without giving a secular image of a Government, without telling the communal forces that we will not liaise with them, you will not be able to defeat this danger of communalism. For that what we need is a qualitative change. Politics needs a qualitative change. A party has run this country for 37 years and after every year what you find is that communal riots and communalism are on the ascent. For that qualitative change what India needs today is a change of national leadership, a change of the national Government,

10. P.M. a change that will create a break-through in this country. For that the Opposition parties are getting together. We have only one slogan; if we are one, India is one and we shall ever be one.

Thank you, Sir.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, कम्यूनलिज्म पर विचार करने के लिए हम इतनी रात यहां बैठे क्योंकि यह अहम मुद्दा है। आज जो जहर एक नासूर के रूप में हर एक भारतीय के कलेजे पर चुभ रहा है उससे हम असमंजस में पड़े हुए हैं सारे हिन्दुस्तान के लोग, सारे मजहब के लोग असमंजस में पड़े हुए हैं। एक हिन्दू कृष्ण का पुजारी है वह सोच में पडा हुआ है कि वह कृष्ण की माने या बाला साहब देवरस की, संत तुकाराम का शिष्य इस सोच में पडा है कि वह संत तुकाराम की माने या बाल ठाकरे की। मुसलमान इस सोच में पड़े हुए हैं कि वह मोहम्मद साहब की मानें या शाहबुद्दीन की। हर सिख आज इस असमंजस में पडा है कि वह गुरु नानक की माने या भिंडरांवाले के समर्थकों की। बड़े ही संकीर्ण रास्ते से हम गुजर रहे हैं आज के जमाने में। बड़ी सावधानी से देखना है कि हम किधर जा रहे हैं और ये कौन सी ताकतें हैं जो हमारे मुल्क को कमजोर करने के लिए हमारे मुल्क को गर्त में डालने पर तुली हुई हैं।

श्रीमन अगर आप आजादी के वक्त का इतिहास देखें तो जिस वक्त आजादी मिली उसी वक्त जिन लोगों ने शहादतें दी थीं, जिन्होंने तन मन धन देकर अंग्रजों के खिलाफ, उनकी हुकुमत के खिलाफ लडाई लडकर महात्मा गांधी के नेतृत्व सत्याग्रह करके फांसी के फंदों को हंसते हंसते चूमकर आजादी हासिल की थी उसी वक्त उन्हें न तो खुशी का मौका मिल रहा था न ही आंखों में आंसुओं को रोकने की हिम्मत थी। उस वक्त जो ताकतें सक्रिय हुई थीं, आज वही ताकतें फिर सक्रिय हुई हैं। उस वक्त राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या इसलिए कर दी गई थी कि उन्होंने कौमी दंगे रोकने की कोशिश की थी, कौमी दंगे रोकने के लिए व्रत किया था, भूख हड़ताल की थी और उनके एक सेक्शन ने कहा कि ये हिन्दू धर्म के की खिलाफ हैं और उन्हें गोली से भून डाला।

[उपसभाध्यक्ष (श्री मिर्जा इर्शादबेग) पीठासीन हुए)]

महोदय, जिस तरह से आर०एस० एस० पार्टी के सदस्य ने कहा कि गर्व से कहो कि हम हिन्दू हैं, हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र घोषित करना चाहिए उस आर० एस० एस० की परिवर्तित पार्टी बी० जे० पी० के बडे बड दिग्गज नेता हैं। उस पार्टी में दुर्भाग्य कहिए कि इस वक्त इस पर विचार करने के लिए भी वे हाजिर नहीं हैं। वे बंबई में भाषण देते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राष्ट्रपिता कहलाने लायक नहीं हैं, उनको राष्ट्रपिता न कहा

जाए, आज वही ताकतें हैं जो दिल्ली में मंदिर में शिला पूजन करवाते हैं, उनके नेता लालकृष्ण आडवाणी पूजन करवाते हैं, वही ताकतें हैं जो अयोध्या के मंदिर के लिए तरह तरह का मैटीरियल छाप रही हैं प्रचार के लिए, लीफलेट्स छाप रही हैं, राम जन्म भूमि के लिए वेदी बनवाने की कोशिश कर रही हैं ।

हमारे पूर्व वक्ता मार्क्सवादी कह रहे थे कि हमने यह किया, वह किया, जरा ध्यान दें, पश्चिमी बंगाल में हर पूजा मंडप में शिला पूजन हुआ क्या वह इंकार कर सकते हैं । किसी पर दोषारोपण करने से पहले अपने गिरेबान के अंदर झांक कर देखें कि आपने क्या किया । इसके पहले जब 9 नवम्बर की घोषणा की गयी थी कि शिलापूजन के बाद राम जन्म भूमि का शिलान्यास 9 नवम्बर, को किया जाय उस वक्त भी मैंने उत्तरायण और दक्षिणायन का विश्लेषण बताया था । दक्षिणायन के वक्त ऐसा काम इसलिए किया जा रहा है कि खून-खराबा हो और कौमी दंगे हों, लोगों की हत्यायें हों और उसका सारा दोष सत्ता में बैठी सरकार पर लगाया जा सके । हिन्दू शास्त्र को मानने वाले अगर हिन्दू धर्म के उतने ही पक्षधारी हैं, विश्व हिन्दू परिषद् वाले उतनी ही हिन्दू धर्म की रक्षा करना चाहते हैं तो हिन्दू शास्त्रों में लिखा हुआ दक्षिणायन क्यों भूल गए, क्यों उस वक्त शिला पूजन शुरू किया, क्यों इस वक्त शिलान्यास करने की बात की . . .

श्री चतुरानन मिश्र : यह इलैक्शनायन जो है ।.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : इन्होंने यह ठीक कहा कि यह इलैक्शनायन है । इलैक्शन फिर लौट कर नहीं आयेगा । क्योंकि उत्तरायण जब आयेगा उस वक्त इलैक्शन नहीं होगा । उस वक्त राजीव गांधी की सरकार होगी । इसलिए ये परेशान हैं । यह सोचने की जरूरत है । मैंने उस दिन भी कहा था कि अगर विरोध करने की हिम्मत है तो विरोध करके बताइये । मैंने शास्त्रों से यह श्लोक पढ़कर बताया है । आप कहिए कि यह गलत है, हिन्दू शास्त्रों में लिखा हुआ नहीं है । मैंने उस दिन भी कहा था और आज भी कहता हूं कि अडवाणी जी सिंधी हैं लेकिन धोती पहनते हैं । यह प्रमाणित करने के लिए कि वह हिन्दू नेता हैं । सिंधियों का पहनावा धोती नहीं है । विजयाराजे सिंधिया चंदन का टीका लगाती हैं और चंदन की माला गले में पहनती हैं । यह प्रमाणित करने के लिए कि वह हिन्दू नारी हैं । प्रचार के लिए इतना जरूर कहती हैं कि सती प्रथा चलनी चाहिये । उनसे कोई पूछे कि जब महाराजा की मृत्यु हुई थी उनसे कोई पूछे कि जब महाराजा की मृत्यु हुई थी वह सती क्यों नहीं हुई उस वक्त । **(व्यवधान)**

श्री बूटा सिंह : झगड़ा खत्म हो जाता ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : आज लोगों को सती करने के लिए तैयार बैठी हैं । इस प्रकार का प्रचार किया जा रहा है । **(व्यवधान)**

श्री शंकर सिंह वाघेला : नो यूज, मैम्बर यहां उपस्थित नहीं है तब इस प्रकार का गलत प्रचार नहीं करना चाहिए । चंदन की माला पहनती है इससे क्या मतलब । इन्दिरा जी खुद माला पहनती थीं ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सती प्रथा का कभी समर्थन नहीं किया ।

श्री सुरेश पचौरी : सती प्रथा के बारे में स्पष्टीकरण दीजियेगा ।

श्री शंकर सिंह वाघेला : जब वह हाउस की मैम्बर हैं तो उनसे पूछियेगा । क्यों नहीं पूछते । इन्दिरा जी ने कहा था कि मैं सती प्रथा के बारे में बोलना नहीं चाहती । वह खुद सती मंदिर में दर्शन करने गयी थीं ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सती मंदिर में दर्शन करना और सती प्रथा का समर्थन करना दोनों में फर्क है । **(व्यवधान)**

SHRI CHATURANAN MISHRA: Nobody should be provoked to commit *sati*. The hon. Member is provoking somebody I dislike it.

SHRI V. NARAYANASAMY: He was not provoking. He was telling about the preachings of that lady about *sati*.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : आज हिन्दुस्तान को बांटा जा रहा है यह कह कर कि गर्व से कहो हम हिन्दू हैं । गर्व से कहो की हम मुसलमान हैं । गर्व से कहो कि हम सिख हैं । गर्व से कहो कि हम ईसाई हैं । पर दुर्भाग्य उस वक्त देखने को आता है जब सुबह बात हुई कि भारत देश महान है या यह देश महान है भारत महान की बात आयी । कोई यह क्यों नहीं कहता कि यह भारत महान है । कोई यह क्यों नहीं कहता कि गर्व से कहो मैं भारतीय हूं । यह कोई नहीं कहता है। इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है । और तो और यहां तो वस्त्र भी ऐसे धारण किए जाते हैं जैसा आडवाणी जी के बारे में कहा, एन० टी० आर० की तरफ भी देख लीजिए । उनके वस्त्र प्रमाणित करना चाहते हैं कि वह हिन्दुओं के नेता हैं। (**व्यवधान**) वह अर्धनारीश्वर बन कर सोता है । उसको किसी तांत्रिक ने कह दिया कि तुम राजऋषि . . . वह एक कान में बाली पहनता है, एक कान में चूड़ियां पहनता है, आधी साड़ी पहनता है और आधा सिन्दूर लगाता है, आधा लिपिस्टिक लगाता है और तब सोता है । यह सब अर्धनारीश्वर कहलाने के लिए किया जाता है ।

PROF. C. LAKSHMANNA: Mr. Vice-Chairman, Sir, I think the debate is going to a very, very low level. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MIRZA IRSHADBAIG): Restrict yourselves.

श्री सुरेश पचौरी : मैनका के साथ डांस करता है। . . . (**व्यवधान**)

PROF. C. LAKSHMANNA: I never say that Mr. Buta Singh is having a beard and wearing a turban because we have got respect for the turban and the beard. They are saying rotten things.

(*Interruptions*)

श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी : **

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MIRZA IRSHADBAIG): This will not go on record.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : भारत वर्ष के पहले राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी धर्म से हिन्दू थे। राम जन्म भूमि पर ताला लगाने वाले वही थे । सरदार पटेल जो इस मुल्क के गृह मंत्री थे ताला लगाने वाले वही थे । लेकिन ताला खोलने वाला हमारे घर में बैठा विभिषण था अरुण नेहरू जो आज इनके साथ बैठा हुआ है इनका नेता है और इनका फाइनेंसर है . . . (**व्यवधान**) अफसोस की बात यह है कि दो तीन दिन पहले दलित मुस्लिम सेना बम्बई में राम की एक प्रतिमा बनाकर उसमें आग लगाने के लिए गई । आज तक हमने सुना था कि रावण दहन होता है लेकिन यह नहीं सुना था कि राम दहन भी होता है । यह बड़े अफसोस की बात है कि कोई आदम सेना बना रहा है कोई खालिस्तान कमान्डो बना रहा है कोई क्रिश्चियन सेना बना रहा है । आज हम किधर जा रहे हैं किसका समर्थन इन लोगों को है इस पर विचार करने की जरूरत है। सबसे अफसोस की बात यह है कि इस मुल्क में जो स्वतंत्रता संग्रामी रहे, श्री राम प्रसाद बिस्मिल जो हिन्दू थे, उन्होंने उर्दू में कविता लिखी—सर फरोसी की तमन्ना हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है । उस टाइम इसके उर्दू में लिखे जाने पर किसी ने भी यह नहीं कहा कि उर्दू मुसलमान की भाषा है, इसको पढ़कर हम देश के लिए मर नहीं मिटेंगे । यह बात किसी ने नहीं

Not recorded.

कहो। लोगों ने हंसते हुए फांसी के फंदे को चूमा और इस मुल्क को आजादी दिलाई। लेकिन अब यू० पी० में उर्दू को सेकेन्ड लेंग्वेज बनाया गया तो सारी लड़ाई खड़ी हो गई। आपको तो इलेक्शन फोबिया हुआ है। इलेक्शन फोबिया हुआ है वह समझ आएगा आपको। (व्यवधान)

श्री बूटा सिंह : इनको योफोरिया हुआ है।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : इनको डिलिरियम हुआ है। मौत के पहले डिलिरियम होता है। वह आदमी से ज्यादा कुत्तों को होता है। सब से बड़ा अफसोस इस बात का होता है कि जब लड़के की शादी हो तो उसके लिए कपड़ा अगर सिलवाना होता है तो शेरवानी सिलवाते हैं। किस का पहनावा है? जब लड़के की शादी हो तो अच्छा चिकन का काम किया हुआ लखनवी कुर्ता सिलवाना पड़ता है किस का पहनावा है यह घर में किसी को डिनर देना होतो हम कहते हैं कि बिरयानी खिलाई जाएगी। बिरयानी किस का खाना है? एक तरफ तो खाने को एक्सेप्ट कर लते हैं उसका विरोध नहीं करते हैं, कपड़े का विरोध नहीं करते हैं दूसरी तरफ भाषा का विरोध करते हैं, जाति का विरोध करते हैं, मस्जिद का विरोध करते हैं, मंदिर का विरोध करते हैं, गुरुद्वारे का विरोध करते हैं। यह कैसा विरोध है और इस विरोध को करने के लिए हम किधर जा रहे हैं? इससे हमारे मुल्क का न सुकून छिना जाएगा या सुकून रहेगा इस पर विचार करने की जरूरत है। इसके साथ साथ मैंने पहले भी गुजारिश की है आपके माध्यम से सरकार से पुनः गुजारिश करना चाहता हूं कि सरकार प्यूनिटिव टैक्स का प्रावधान क्यों नहीं लगाती। जहां भी दंगे हों चाहें वह हिन्दु पर हों, चाहे मुसलमान पर हों, चाहे सिख पर हों, चाहे ईसाई पर हो प्यूनिटिव टैक्स होना चाहिए कलैक्टिव प्यूनिटिव टैक्स से उस मोहल्ले के हर एक सिख को, हिन्दू को, मुस्लिम को, क्रिश्चियन को खड़े हो कर के अपने पड़ोसी की रक्षा करनी चाहिए। अगर वह नहीं करेगा तो सरकार अपनी जेब से उसको मुआवजा नहीं देगी परन्तु पड़ोसियों से इकठ्ठा कर के मुआवजा दिया करेगी। मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं कि और यह भी याद दिलाना चाहता हूं कि यह कम्यूनलिस्ट, कम्युनिस्ट और कस्टिस्ट जो तीनों एक प्लेटफार्म पर खड़े हैं यह कौन सा कहर ढाने जा रहे हैं उस पर विचार करने की जरूरत है और उसके बारे में लोगों को बताने की जरूरत है। (व्यवधान) आज इन चीजों पर विचार करने की जरूरत है। यह जो गठजोड़ हुआ है गठबंधन हुआ है यह मुल्क को किस तरफ ले जा रहा है इस तरफ ध्यान आकर्षित करने की जरूरत है। आपके माध्यम से मुल्क की सारी जनता को यह बताने की जरूरत है कि कौन है इसके पीछे, कौन सी ताकतें हैं। पावर को ग्रैब करने के लिए सत्ता की लड़ाई के नए रास्ते बनाने के लिए इन्होंने 9 नवम्बर को राम जन्म भूमि का शिलान्यास करने की कोशिश की है। मैं आपके माध्यम से इन सारी चीजों के खिलाफ कड़े से कड़े कदम उठाने की गुजारिश करते हुए आपसे इजाजत चाहता हूं। धन्यवाद।

SHRI E. BALANANDAN (Kerala): Mr. Vice-Chairman, Sir, the discussion at this odd hour on this subject has been decided by the ruling party itself. But now they are not very much serious about the discussion taking place.

Coming to the subject, let me say that my colleagues have covered the matter from different angles. I want to drow the attention of this House to the fact that the communal situation in the country has developed into a different form. We have seen that in four States within the last two months 60 or 65 communal riots have taken place. It is the intensification of communal siuation in the country. It cannot be taken as a law and order problem. It has gone to some other rection with different dimensions

[Shri E. Balanandan]

We talk of secularism and socialism and also the People's Representation Act has been amended so that all the parties contesting election should include in their constitution that they believe in secularism in the country. This way, all the parties become socialist and secular. At the same time, secularism is given a go-by mainly by the ruling party itself and some other opposition parties. Here I must say, mingling religion with politics is a dangerous trend. In the name of secularism, they are practising and politicising every religious act by which secularism is being killed. Today, the position is that certain political parties in the country are making certain demands. There is a long-pending issue of Ram Janambhoomi-Babri Masjid. Now the Vishwa Hindu Parishad people want to erect a temple there for which they have started big preparations where 3,50,000 pujas are being performed to take bricks to Ayodhya. A big propaganda is going on to protect Rama for which every Hindu must rise up. This way the propaganda is going on. What is the ruling party doing? My friends on the other side were saying that so many communal riots have taken place, and explanations were given. But the Government is itself giving protection to VHP for all these activities. For that, it seems the Home Minister and he VHP have some understanding under which protection is being given for these processions and pujas. In every village in the country, communal feeling is on the rise and they are raising slogans at times very dangerous slogans--I cannot properly pronounce it in Hindi--meaning, we will suck the blood of the descendents of Babar. These kinds of slogans are being raised. They are pasted on the walls. What is the Government doing? It is giving protection to these kind of slogans being raised throughout the country. Whose responsibility is it to check these things? Is it my responsibility; It is the responsibility of the ruling party.

Recently certain slogans are being raised that Minority Commission should be disbanded; article 370 should be abolished, and Urdu should not be given the status of second language. These are the slogans. What is your line of thinking? I do not know anything. I do not know what is the Government doing on its part. Government also says this is bad. But who is protecting it? The point is that the Government themselves are doing this very same thing for their own political purposes.

We were discussing the Punjab question. I do not want to go into that but the Punjab situation has been created because of the political exigency of the Congress(I) party. That is the origin of the problem. Then somebody referred to mixing of religion with politics in Punjab. It is precisely so because religion and politics mixed together has resulted in a situation which is threatening the unity of the country. The very same thing is being practised by Congress(I) in Kerala State. They talk of secularism and they have an understanding with the Muslim League. What kind of secularism is it? My friend who spoke earlier referred to the latest election in North-East where Christian religion is placated to vote for Congress party. This is one thing, which affects the people. The Congress (I) party does it for getting votes. This way secularism is given a go by.

My friend Upendra pointed out that we are Hindus. I am a pucca Hindu. But if I go to a temple or my children go to a temple, nobody notices us, there is no television broadcast for us, and when the ruling party leaders go to a temple that will come on T.V. Mrs. Sonia Gandhi, a convert Hindu, doing pooja, I have no objection about it, is projected in the TV. Today, it is owned by the Government of India. A

secular Government is in power in India and if TV and other media are utilised for religious propaganda, I do not know where we are going. I am not against religion. Freedom of religion ought to be given to every individual. In a vast country like India there are several religions. If secular stand is taken by the State, then only all the religions will get equality in the country. (*Time Bell*). The point is, the ruling party today is mingling religion with politics. The same thing is being done by so many other parties. That is creating a dangerous situation. Therefore, this propaganda has to be bought against. Secularism has to be restored. Then only the communal situation can be brought under control.

With administrative methods our Home Minister is trying to solve Punjab problem. We find today 20 people are killed and tomorrow 40 people are killed just like birds. If you think that this question can be solved by administrative methods, then where is your administration? When communal riots took place in Gujarat a DIG went to the other side. When it came to other, Staes, PAC has gone amuck. After this big communal propaganda, in every State, district collectors are given responsibility to give protection to all. But these district collecters, district police officers, administrators—many of them are prone to communal parties. Therefore, the administration cannot do anything. If you want to protect secularism, you have to adopt a correct political attitude which is lacking in the ruling party as well as in many opposition parties too.

SHRI V. NARAYANASAMY: Which are the other opposition parties?

SHRI E. BALANANDAN: Our people are not drawn to such provocations. India is a big country with 75 crores of people. These people want to divide the Hindus, the Muslims, etc., but in spite of all the provocations our people have stood on their own legs. They will not allow the communal feelings to spread like fire.

That kind of element is there. I can tell you examples of how Government is functioning in two ways. I do not want to criticise the Congress(I) Governments as such, but I must draw your attention to the attitude taken by the West Bengal Government on this question of shila poojan this time. The Government publicly declared that there should not be any pooja in public places. In a temple or a private place, you can do pooja. And also during the Durga Pooja festival, no shila poojan will be allowed in the Pooja Pandals. And the administration and above all the people of West Bengal, were alerted: if you want the country's unity, then Hindu-Muslim riots should not be allowed to take place. Everybody should be on guard. And what happened; no clash took place. Therefore, what is our complaint? Our complaint is that the Governments run by the Congress(I) Party are not secular. They are not able to take any steps to arrest the development of communalism which has been experienced in the last so many months. Therefore, my suggestion would be, if at all we want to protect India, Government of India should change its policy. Our experience is, I must tell you, that Government of India is not serious. What is more serious in the country today then the Punjab question. You know, the country's unity and integrity is in danger there. Every day this communal virus is spreading and clashes are taking place. This is the most serious problem confronting the country. Anybody who loves this country should give first priority to what? For keeping the unity and integrity of the country, you should take steps to see that this communal conflagration is avoided. Why is this step not taken by the Government? We have been requesting the Government to call the National Integration Council meeting. But the Government did not do anything. Therefore today what I can say is this.

[Shri E. Balanandan]

Under your leadership and guidance, India's unity is in danger. Apart from other things, you should do one thing. India's unity should be given priority, national integrity must be given priority, secularism should be given priority and politics and religion should not be allowed to mix with each other. Religious practices should be a private affair of every individual. Therefore, our party demands that the National Integration Council should be immediately convened, as well as secular practices should be encouraged by the Government. The Government should declare that it will not allow religious practices to mingle with politics and the Government's policy should always be of a secular nature, as defined in the Constitution.

One point more and I have to say. Our experience till now is, that the Government failed to protect the integrity and unity of the country. I must submit with humility that this Government cannot protect India and therefore the first thing we want for India's protection is that this Government should resign.

SHRI RAOOF VALIULLAH: Mr. Vice-Chairman, Sir, when the late Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, declared the 15-point programme for the welfare of minorities in 1984, there was great enthusiasm amongst the minorities of the country because it specifically deal with the communal situation. The first seven points of the 15-point programme were directives to the State Governments in the event of a communal flare-up. After her death, our beloved leader and Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi, stated that the 15-point programme for the welfare of minorities will be vigourously implemented. In some States the 15-point programme has not been implemented. My first basic question is about tackling the communal situation and I would, therefore, like the honourable Home Minister to tell me whether the 15-point programme, which is the essence of tackling the communal situation in the country, is being implemented or not.

Unfortunately, this programme is no more with the Home Ministry, and it is transferred to the Ministry of Welfare. I do not even know whether there have been committees to implement and monitor the 15-point programme in all the States. Therefore, the communal situation, which is fast aggravating, is causing concern to all of us and, as the elections draw closer, certain fundamentalist and anti-national elements are bound to fan communal passions all over the country. For example, the Ram Shila processions all over the country have resulted in communal violence and I, therefore, plead that nobody from either side should patronize these elements. I am saying so because, unfortunately, the Bhartiya Janata Party is supporting this movement. It has nothing to do with religion, but the sole aim is to secure the Hindu votes for the BJP during the next elections. The BJP design amounts to a political gain but they do not know, perhaps, that they are playing with fire.

Sir, what Mr. Balanandan has just now said, I would repeat the same thing, but more explicitly. Does not this violate the statutory provision that no political party propagating communalism, as the BJP is doing now, could contest the elections? Would the Government, therefore, refer the matter to the Election Commission in the context of the BJP's new role in this movement? Will the Government consider that BJP, which is playing the communal card, cannot be called a political party under the new dispensation;

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Mr. Chairperson, Sir, there is nobody from the PTI.

SHRI RAOOF VALIULLAH: That has been said one hour earlier. But this is not for the press.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MIRZA IRSHAD BAIG): It does not come under my purview. The Home Minister is there and he is listening.

SHRI RAOOF VALIULLAH: The Government, I feel, should not be a silent spectator to the Bhartiya Janata Party's new stance. These people have created a volatile situation in the country. Particularly, communal organizations in the country, with the BJP alliance, like the Vishwa Hindu Parishad and the SSS and all its outfits, are now bent upon creating communal violence in the country. Sir, these organisations and particularly the political outfits of these organisations should be derecognised by the Election Commission.

Sir, many things have been said by the hon. speakers. I would like to make one thing very clear that the minority community in this country is as patriotic as anybody else, and the very fact that these people have lived here for ages contributes to the fact that they are equal partners in the development of this country. Sir, what is happening today is that some elements, some anti-national elements, some communal elements are creating conditions for a civil war by spreading anarchy and hatred in this country.

Sir, three months ago I had written to the hon. Prime Minister and also to the hon. Home Minister about the communal situation in Gujarat. Despite the Gujarat Government asserting that communal violence and communalism is a thing of the past, I very categorically stated that the things were not so. I would, therefore, request the hon. Home Minister to see that the communal violence which is now spreading to all parts of the Gujarat State is checked.

Sir, according to my information, during the last two months, particularly during the last 30 days, 60 incidents of communal violence have taken place in Gujarat. Mehsana, Kaira, Banaskantha and Bulsar districts are the most affected. Sir, in Mehsana District, Vijapur, Visnagar and Kheralu have witnessed several cases, hundreds of cases of communal incidents of arson, of looting, and many people have been injured. Sir, Banaskantha, in Kaira district, ten important towns like Cambay, Tarapur, Bhalej, Karamsad, the birth place of Sardar Patel, Kanajari and Mahudha, all these places, there has been communal violence and many people have been injured. There has been extensive loss of property.

Sir, the headquarters of the Banaskantha district, Palanpur, which is the constituency of our Union Minister of Finance, Shri B. K. GADHVI, recently witnessed orgy of violence. Ninety houses in Palanpur town have been burnt down, and the loss is estimated to be about Rs. 1 crore. This has happened only ten or fifteen days ago. Sir, another example is Vansar. This Vansar town has also witnessed a similar incident where many people have been injured.

I would like to know from the hon. Minister whether the Central Government is monitoring the situation. I also want to know whether it is a question of the survival of a particular man or a particular Minister. Sir, it is a question of faith and confidence of the minorities in the secular character of the Indian nation. It is a question of confidence and unstinted support of the minorities to a secular party like the Congress and its leader, Shri Rajiv Gandhi. That is the main issue. That is the main question.

[Shri Raoof Waliullah]

I would like the hon. Home Minister to give us the details of what is happening in Gujarat. There have been several meeting of the minority leaders in Gujarat. There have been several representations to the State Chief Minister about what is happening in Gujarat. I would, therefore, like to know what steps the hon. Home Minister and the Union Home Ministry is taking in this State.

Only yesterday I received frantic calls from Ikbalgarh, a nearby town of Palanpur, and also from the people of Palanpur saying no compensation has been given to them so far. It is a stipulation under the 15-point programme that adequate compensation will be given immediately to the riot-affected people. I would like the hon. Home Minister to ascertain from the State Government whether due compensation has been given to the riot-affected victims. I also demand that a high official of the Home Ministry be sent to Gujarat to make an on-the-spot study of the communal situation in the State. I also demand that the 15-point programme of the Prime Minister should be implemented in *toto*. There is a point in the 15-point programme which says that the district administration will be held responsible. I would like to know what action has been taken against the erring officials of the district administration. Is there any example of a case where the Government has taken action against the erring officials? I would also like to know whether the Government is in possession of details of these incidents that took place all over the country in general and in my State in particular. Does it have in its possession details of the figures about how many people have been injured and how many killed and what is the loss of property particularly of the minorities.

Lastly I want to make only one point about the arrests. The hon. Home Minister will be pleased to know that I am Chairman of the Minorities Commission of the State Government. I have been informed by my commission that several arrests have been made under the Terrorist and Disruptive Activities Act.

SHRI SHANKER SINH VAGHELA: Not several, but all arrests.

SHRI RAOOF VALIULLAH: The arrests have been made mainly of those belonging to the minority communities. I would like the hon. Minister to correct me if I am wrong. I would also like him to give us details of the case.

SHRI SHANKER SINH VAGHELA: Do you mean to say that you don't get communication from the Home Ministry?

SHRI RAOOF VALIULLAH: No. That is why I would like to know whether the Home Ministry has called for a full report from the administration of the State Government.

With these words I thank you for giving me time to speak.

उपसभाध्यक्ष (श्री मीर्जा इर्शादबेग) : श्री शंकर सिंह वाघेला । आप पांच मिनट में खत्म कीजियेगा ।

श्री शंकर सिंह वाघेला : उपसभाध्यक्ष महोदय, आपको बधाई और थोड़े ज्यादा समय के लिये प्रार्थना करूंगा क्योंकि मैं बी.जे.पी. का हूं । हमारे बहुत दोस्तों ने हमारे पर प्रेम बरसाया है; इसका जबाब देना होगा । दूसरे मैं गुजरात से हूं, गुजरात में हमारे दोस्त ने बताया है कि 30 दिनों में 60 जगहों पर दंगे हुये हैं । इसकी भी थोड़ी सी बात करूंगा ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात शुरू करता हूं । ऐसी चर्चा अगर बंगला देश में और पाकिस्तान के हाऊस में होती तो हमको आनन्द होता कि वहां की माइनेरिटी की क्या हालत है ? और यहां

मेजारिटी जो बात करती है, वहां की अगर मेजारिटी वहां की माइनारिटी की बात करती... (व्यवधान)। ...

वस्त्र मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रफीक आलम) : पाकिस्तान और बंगला देश का बदला आप यहां लीजियेगा।

श्री शंकर सिंह वाघेला : सन 47 के पहले वह हमारे भाई थे, हमारे साझीदार थे, इसी देश का वह भाग दो। 40 साल पहले की बात है ज्यादा देर की बात नहीं है।

मैं, मेरी पार्टी कम्युनल है, इस आक्षेप को नकारता हूं। भारतीय जनता पार्टी कम्युनल नहीं है। भारतीय जनता पार्टी का नमूना आपने देखना है तो 1977 से 1979 के बीच एक्सटरनल अफेयर मिनिस्टर अटल बिहारी वाजपेयी जी थे, अगर मुस्लिमों के साथ या मुस्लिम राष्ट्रों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिये, उसमें अगर कोई भी हमारा नान बी.जे.पी. आदमी कह दे कि एक्सटरनल अफेयर पालिसी हमारी सही नहीं थी.. (व्यवधान)

श्री रफीक वलीउल्लाह : मैं कहता हूं। ...(व्यवधान)...

श्री शंकर सिंह वाघेला : देखिये, इसमें प्राइम मिनिस्टर इन्वाल्व थे, एक्सटरनल अफेयर मिनिस्टर नहीं। मोरारजी भाई इन्वाल्व थे ...(व्यवधान)...

श्री बूटा सिंह : मोरारजी भाई इन्वाल्व थे, अटल जी नहीं ...(व्यवधान)...

श्री शंकर सिंह वाघेला : नहीं इनको बाद में मालूम हुआ, पहले मालूम नहीं था जब वह आये थे। मैं लोक सभा का मेम्बर था इसलिये मुझे पता है।

इसके साथ यहां गांधी जी का जिक्र चला। महात्मा गांधी जी आर.एस.एस. कैम्प में पधारे थे। जय प्रकाश नारायण ने 1977 में कहा था कि अगर जनसंघ कम्युनल है, तो जय प्रकाश नारायण कम्युनल है। विनोबा भावे ने कहा था कि देश में गोहत्या बन्द होनी चाहिये। आप उनको कम्युनल मानते हैं? कह दीजिये कि सब कौमीवादी थे, मुझे इसमें तकलीफ नहीं है। मैं बी.जे.पी. का सदस्य हूं, आर.एस.एस. का सदस्य हूं, इसमें मुझे गर्व है। आर.एस.एस. से मैं जनसंघ में आया। इसके बाद मैं बी.जे.पी. में आया। इसलिये आज की जो भी बातें हुई जिनमें राम जन्म भूमि के शिला पूजन विधि से हमारे देश में कम्युनल रायटस होते हैं, ऐसी बात महसूस होती है। मैं समझता हूं कि सन 1947 के पहले नवाखाली में और दूसरी जगहों पर कम्युनल रायटस कैसे हुये थे। बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि तो अभी चला है। इसके पहले कौन सी शिला पूजन विधि जिम्मेदार थी कम्युनल रायटस के लिये? यह भी मैं कहूंगा कि जब से जनसंघ था तब से आज तक बी.जे.पी. को एक भी इंक्वायरी कमीशन ने दोषी नहीं ठहराया कि भारतीय जनता पार्टी या भारतीय जनसंघ इसके लिये जिम्मेदार है। आर.एस.एस. को भी इन्होंने कहा है कि इंवाल्व नहीं था।

श्री रऊफ वलीउल्लाह : अहमदाबाद भी रायटस के लिये जगमोहन रेड्डी ने साफ कहा है कि आर.एस.एस. दोषी है।

श्री शंकर सिंह वाघेला : जितने भी कमीशन हैं उनकी रिपोर्ट हैं, उनमें से मैं आपको बताऊंगा कि हम किनमें रिस्पांसिबल हैं। आप मनगढ़न्त बातें मत करिये। कमीशन की रिपोर्ट में आर.एस.एस. और बी.जे.पी. को निर्दोष कहा है।

श्री चतुरानन मिश्र : तेलचरी रायटस की रिपोर्ट है उसको पढ़कर मैं सुनाना चाहता हूं।

Justice Vythayathil said "I have no doubt that Jana Sangh has contributed in a large measure to the creation of communal tension in Tellicherry which led to the disturbances. There can be no doubt that RSS is a blatant communal organisation."

[श्री चतुरानन मिश्र]

इसी तरह से जगमोहन रेड्डी की रिपोर्ट है उसको मैं सुना देता हूं।

"This evidence as a whole indicastes that the police had reason to believe that some local Jana Sangh leaders and workers were actively participating in the riots though these officers in their affidavits had not given any such indication....."

कौनसी कहिये ; मैं सुना देता हूं। समय नहीं है रात के 12 बजने वाले हैं। दीनानाथ पांडे के बारे में जमशेदपुर रायटस कमिश्नर ने कहा है। मैं आपका समय न लेकर इसकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

श्री शंकर सिंह वाघेला : उपसभाध्यक्ष जी, हमारे लिये यह कोई नई बात नहीं है। सन 1952 जब से जनसंघ बना जब से जवाहर लाल नेहरू ने जनसंघ को कम्यूनल कहा था। इंदिरा गांधी ने जनसंघ को कम्यूनल कहा और आज राजीव जी और उनके साथी बी.जे.पी. को कम्यूनल कहें इसमें हमें फर्क पड़ने वाला नहीं है। आपके हिसाब से हम चलने वाले नहीं हैं।

डा० रत्नाकर पांडेय (उत्तर प्रदेश) : आपके साथी जो अपोजिशन में हैं चतुरानन मिश्र उन्होंने उद्धत किया है कि जनसंघ ने कम्यूनल राइटस करवाये। जजमेंट कोर्ट कराये और आप कहते हैं कि हमारी पार्टी कोसिद्ध कर देंतो हम कुछ भी भुगतने के लिये तैयार हैं।

श्री शंकर सिंह वाघेला : बी.जे.पी. का इंवाल्वमेंट को नहीं है, डाइरेक्ट इंवाल्वमेंट नहीं है। बी.जे.पी. जैसा पी. उपेन्द्र-जी ने कहा अगर कम्यूनल कार्ड खेलने से कोई पार्टी पावर में आती तो रामराज्य परिषद और हिन्दू महासभा पावर में आनी चाहिये थी। या मुस्लिम लीग पावर में आनी चाहिये थी। जनसंघ और उसके बाद आज बी.जे.पी. का तब भी यही स्टेंड था और आज भी यही स्टेंड है। इतना ही नहीं जब हम हिन्दू मुस्लिम रायटस की बात करते हैं, कम से कम 47 में देश का बटवारा क्यों हुआ, किसने इसमें भाग लिया ? उस समय तो जनसंघ नहीं था। 47 में सिर्फ धर्म के आधार पर कट्टर मुस्लिम लीग के लोग थे उनको यह पसन्द नहीं था इसलिये देश का बटवारा हुआ। भारतीय जनता पार्टी या आर०एस०एस० कभी कोई राष्ट्र भक्ति के खिलाफ बात नहीं कर सकती। राष्ट्र से ऊपर हमारे लिये कुछ नहीं है। राष्ट्र भक्ति की जो बात है उसमें हम कम्प्रोमाइज कभी नहीं करते। इससे आगे पाकिस्तान में इस्लामिक राष्ट्र घोषित हुआ, पाकिस्तान इस्लामिक राष्ट्र बना और बंगला देश भी वही रास्ते पर है। भारतीय जनता पार्टी और भारतीय जनसंघ की बात करता हूं कि मेरी पार्टी ने आज तक कभी भी हिन्दू राष्ट्र की बात नहीं की है। यह मुसलमान हमारे भाई हैं, ये क्रिश्चन हमारे भाई हैं, माइनोरिटीज वाले हमारे भाई हैं। हमने कभी हिन्दू राष्ट्र की बात नहीं की। लेकिन माइनोरिटी के वोट लेने के लिए हमने खुशामद की बात भी कभी नहीं की। जो वोट लेने के लिये ऐसी बात करते हैं उसके लिये हमको दुख होता है। आप वोटों की राजनीति में फंसे हुये हैं। दुख की बात यह है। हम बी०जे०पी० वाले धारा 370 की बात करते हैं। अगर धारा 370 आज नहीं होती तो पंजाब की हालत यह नहीं होती। 370 के लिये अगर कोई कहता है जे एंड के के बारे में जिसमें हमारे अध्यक्ष थे डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी उनकी बलिदान कश्मीर में ही हुआ। 370 धारा की आज भी हमारी डिमांड है। हो सके जितनी जल्दी हो सके इसको दूर कीजिये। 370 को अगर दूर करने की बात हम करते हैं और कोई कहता है कि हम कम्युनल हैं तो हमें मंजूर है। कामन सिविल कोड की बात हुई। आपने तो सुप्रीम कोर्ट का डिसीजन उलट कर दिया रख दिया वोट लेने के लिये। कट्टर मुस्लिम लोगों के प्रेशर में आकर अपने दिमान का फेरबदल कर दिया। अगर कामन सिविल कोड की बात कोई कहता है.. (व्यवधान)

श्री महम्मद अमीन अंसारी (उत्तर प्रदेश) : यह झूठ बोल रहे हैं... (व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र : माननीय सदस्य ने कहा है कि वह आर० एस० एस० के हैंऔर आर० एस० एस०मुसलमानों को और क्रिश्चनस को समान समझते हैं यह गलत है। मैं उद्धरण देकर बता सकता हूं। यह बंच आफ थाट है। इनकी लिखी हुई किताब है उसमें से बता रहा हूं। यह गुरु गोलवलकर की लिखी कताब है। इसमें से मैं बता रहा हूं

Before answering these questions he poses one himself. What is the attitude of those people who have been converted to Islam or Christianity? His answer is: "They are born in this land, no doubt. But are they true to its salt? Are they grateful towards this land which has brought them up? Do they feel that they are the children of this land, its traditions and that to serve it is their great good fortune? Do they feel it a duty to serve it? No togeter with the change in their faith are spirit or love and devotion for the nation."

He adds: "The story does not end here. They have also developed a feeling of identification with the enemies of this land. They look to some foreign lands as their holy places. They call themselves "Sheikhs' and 'Syeds'. Sheikhs and syeds are certain clans in Arabia. How then did these people come to feel that they were their descendants? That is because they have cut off all their ancestral national moorings of this land and mentally merged themselves with the aggressors."

श्री शंकर सिंह बाघेला : मैं इसमें स्ट्रिक्ट हूं कि इसमें कुछ गलत नहीं कहा गया है। जो गुरु गोलवलकर जी ने कहा है, लिखा है वह सही बात है। आपको इंडोनेशिया के इतिहास का पता होना चाहिये। इंडोनेशिया का सुकर्णो है : वहां की एयरलाइस का नाम गरूड है जो हिन्दू नाम है। थाइलैंड के लोग रामायण को मानते हैं। वहां मुस्लिम कम्युनिटी है। वहां के लोग राम के खिलाफ एक शब्द नहीं सुन सकते। (व्यवधान)

12.00 P.M.

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : साह बानू के मामले की सारी दुनिया जानती है। श्री राजीव गांधी ने एक अमेंडमेंट करवाया है।

श्री शंकर सिंह बाघेला : मेरी पार्टी कामन सिविल कोड में विश्वास करती है। अगर कामन सिविल कोड में विश्वास करने वाली पार्टी कम्युनल है तो मेरी पार्टी और मुझे यह मंजूर है। हम कामन सिविल कोड को मानते हैं। हम माइनोरिटी कमीशन को नहीं मानते हैं, ह्यूमन राइट्स को मानते हैं। मेरी पार्टी राम जन्म भूमि की बात करती है। भगवान सोमनाथ जी का मंदिर 1947 के बाद हो. मिनिस्टर सरदार पटेल ने बनाया था। आप लोग भारतीय जनता पार्टी पर जो एलीगेशन लगाते हैं वह एलीगेशन नहीं है वह हकीकत है। हम एक बात को मान कर चलते हैं और इसमें भारतीय जनता पार्टी का कोई कोई शर्म नहीं है। आज आप कम्युनल की बात करते हैं। जम्मु में श्रीमती इंदिरा गांधी ने कौन सा कार्ड खेला था। श्रीमती इंदिरा गांधी अम्बा में गई थी और अभी राजीव गांधी भी आये थे। राजीव गांधी गणपति के दर्शन करने क्यों गये थे सोनिया गांधी भी गई थी। मिजोरम में आपने क्रिश्चियनों की बात क्यों की? जब आप अपने को सेक्यूलर मानते हैं तो केरल में आपने मुस्लिम लीग को भागीदार क्यों बनाया जिस मुस्लिम लीग पर आक्षेप है कि उसने देश को तोड़ा। मेरी पार्टी 1977 से 1979 तक चार राज्यों में सत्ता में रही, वहां पर उसके चीफ मिनिस्टर रहे, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान और मध्य प्रदेश, इनमें एक भी कम्युनल दंगे नहीं हुये। इन राज्यों में मुसलमानों का कोई हरेस मेंट नहीं हुआ। कम्युनल टेंशन और दंगे नहीं हुये। यह हिस्ट्री है, इसको आप देख लीजिये। आजकल हिन्दुओं में जागृति आई है तो उनका कोई प्रोसेशन निकलता है। गुजरात में प्रोसेसन पर मस्जिद से पत्थरबाजी होती है।

[श्री शंकर सिंह वाघेला]

मैं मानता हूं कि जुलूस में भी कुछ एंटी सोशल एलीमेंट हो सकते हैं.. (व्यवधान)

डा० रत्नाकर पाण्डेय : इस तरह से आप फिरकापरस्ती की बात मत करिये। सारे धर्म महान हैं, चाहे जुलूस हिन्दू का हो या मुसलमान का हो। आपका स्टेंड गलत है।

श्री शंकर सिंह वाघेला। हमारा स्टेंड नेशनलिस्ट है, राष्ट्रवादी है। भारत के लिये मरने वाला कोई भी हो, हमारा भाई है, उसको हम गले लगाते हैं। क्रिकेट का गेम खेला जा रहा है और पाकिस्तान की टीम हार जाय तो यहां के टी०वी० और रेडियो को तोड़ दिया जाय तो यह क्या है अजहरुद्दीन छक्का मारे सौ रन बनाये तो वह मुस्लिम होते हुये भी हमारा है हम उसको गले लगाते हैं।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : आप तो अहमदाबाद में केशरिया झंडा फहराते हैं।

श्री शंकर सिंह वाघेला। पाकिस्तान का झंडा श्रीनगर में लगाते हैं तो वहां दंगा होता है। कहा गया है कि कांग्रेस के राज्यों में दंगे होते हैं। इस का कारण यह है कि कांग्रेस की आपसी गुटबंधी के कारण मुख्य मंत्री को गिराने के लिये दूसरा गुट ये दंगे करवाते हैं। श्री वलीउल्लाह ने कहा कि भवेज में दंगे हुये। वहां लोगों ने श्री खम्बोज को अपने गांव में नहीं आने दिया। वह टूरिज्म ए कारपोरेशन का चेयरमैन है और कांग्रेस का नेता है। गांव वालों ने कहा कि इसी ने दंगे करवाये हैं। पालमपुर में सारी पुलिस प्रधान मंत्री का इंतजाम करने गई थी। विजयपुर में पुलिस नहीं थी। मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि क्या आई०बी० को इनफारमेशन नहीं थी कि प्रोशोसन निकलने वाले हैं। सब लोग जानते हैं कि कुछ गड़बड़ होने वाली है। गवर्नमेंट मशीनरी क्यों नहीं जानती है कि गड़बड़ होने वाली है और गड़बड़ी होने के बाद दुनिया भर की बात करती है। यह सही नहीं है। इसलिये गवर्नमेंट की मशीनरी जो भी है आपकी उसको एलर्ट करें। चाहे हिंदू का नुकसान हो या मुसलमान का यह राष्ट्रीय संपत्ति का नुकसान है और इसमें गरीब को मरना है। गरीब चाहे मुसलमान हो या हिंदू हो वह इंसान है। इंसान के हिसाब से मेरी पार्टी इंटेगल ह्यूमैनिज्म वाली पार्टी है। ह्यूमैनिज्म मानने वाली पार्टी कभी कम्युनलिज्म में विश्वास नहीं करती है। भारतीय जनता पार्टी पंडित-दीन दयाल उपाध्याय के इंटेग्रल ह्यूमैनिज्म के रास्ते पर चलने वाली पार्टी है। इसलिये आप कांच के घर में रहकर दूसरों पर पत्थर मारने की कोशिश न करें। वोटों की राजनीति से देश को मत तोड़िये।

उर्दू का सवाल है। आप 40 साल में क्यों नहीं लाये। दो महीने में आप उर्दू ले आये। कौन सा लाजिक है इसमें। क्या आपके राज्य नहीं थे। आप थे कहां इतने दिन। बिना वोट की राजनीति क्या है यह आप मुझे कहेंगे। सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट है कि अगर 30 परसेंट उर्दू स्पीकिंग नहीं है उस राज्य में तो यह चीज नहीं होनी चाहिये...

[उपसभापति महोदया पीठासीन हुईं]

और मैडम डिप्टी चेयरमैन महोदया मैं आपको कहूंगा... (समय की घंटी)

उपसभापति: अब आप बैठ जाइये।

श्री शंकर सिंह वाघेला : बिल्कुल बैठ जाता हूं। बैठने के लिए तैयार हूं।

भारतीय जनता पार्टी के ऊपर भरोसा करिये... (व्यवधान)

श्रीमती सत्या बहिन (उत्तर प्रदेश) : ए टुजड सारा असत्य बोल रहे हैं।

श्री शंकर सिंह वाघेला : भारतीय जनता पार्टी सन् 1980 में बनी । आर.एस.एस. के पाइंट पर जनता पार्टी टूटी थी । आर. एस.एस. की हमने ओन किया है, हमारी इनके साथ डुअल मैम्बरशिप गिने या जो भी गिने, लेकिन जिस धर्म की बात चल रही है वह धर्म बहुत लिबरस है । अगर हिन्दू धर्म इतना तंग होता तो कन्वर्जन की जगह नहीं होती, ट्राइबल में नहीं होता, मुसलमानों में नहीं होता । लिबरल धर्म है इसलिए ही कन्वर्जन की जगह है । हम प्रेम से यहां ठीक है और आप अपने हिसाब से मस्जिद में जाएं गुरुद्वारे में जाएं, चर्च में जाएं कोई प्राब्लम नहीं है । लेकिन जब राष्ट्र का सवाल आता है तब बी.जे.पी. को तकलीफ होती है । आप राष्ट्रवादी है; भारतीय है, हमारे भाई हैं; जो भी है इसमें धर्म का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। मैं कहूंगा कि वोटो के लिए अपने आपको, अपनी जाति को मत बेचिये । वोट राजनीति देश को तोड़ेगी । आप वोट राजनीति से बाहर निकलिए । इसी प्रार्थना के साथ आपको धन्यवाद ।

कुमारी सईदा खातून (मध्य प्रदेश) : झूठ बोले कौवा काटे वैसे ही कौवे जैसे है ।

श्रीमती सत्या बहिन : काले कौवे से डरिये ।

श्री चतुरानन मिश्र : कुछ ही देर के बाद डेट बदल जायेगी । आपने आज ही की डेट के लिए हम लोगों को बुलाया था । कल के लिए तो आर्डर नहीं है . . . (व्यवधान) डेट बदल जायेगी इसका ख्याल रखिए ।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : 12 बजे तक हो जायेगा । चलने दीजिए ।

उपसभापति : चतुरानन जी आपने कहा था कल डिसकशन कीजिए । तो मैं दोनों की बात मान रहीं हूं . . (व्यवधान)

श्री शिव प्रताप मिश्र (उत्तर प्रदेश) : महामान्या उपसभापति जी, आज देश में साम्प्रदायिकता के विषय पर बोलने के लिए आपने मुझे अवसर दिया है । इस पर हमारे शासनदल और विपक्षीदल दोनों के बहुत से साथी बोल चुके हैं । बोलते हुए अभी हमारे एक साथी विपक्षी दल के शंकर सिंह वाघेला जी ने अपने भाषण में वक्तव्य; कहा कि राजीव जी गणपति जी के मन्दिर में जाते हैं । उन्होंने यह भी कहा कि अल्पसंख्यकों के वोट लेने के लिए मैं कभी सिफारिश नहीं करना चाहता । तो मैं उनको यह बताना चाहता हूं जैसा कि हमारे भाई डा. रत्नाकर पाण्डेय जी ने अभी बताया कि हम सर्व धर्म समभाव में अपना विश्वास रखते हैं । हमारा राष्ट्र अधर्मी नहीं है । हमारे सिद्धांत के अनुसार हमारा राष्ट्र धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है जिसमें सभी धर्मों का समान रूप से आदर किया जाता है । धर्म निरपेक्ष का अर्थ है कि किसी धर्म की अवहेलना न करना बल्कि सभी धर्मों को समान रूप से मानना । तो मैं उनको यह बताना चाहता हूं कि चाहे इंदिरा जी रही हों चाहे हमारे प्रधान मंत्री राजीव जी हों वे अगर गणपति के मन्दिर में गये हों तो वे मस्जिद में भी गये होंगे । उन्होंने उसका भी सम्मान किया होगा । उन्होंने चर्च का भी सम्मान किया है । उन्होंने बौद्ध धर्म का भी सम्मान किया है । तो यह नहीं कि हम किसी धर्म की अवहेलना कर रहे हैं । तो हमारी धर्म निरपेक्षता का मतलब यह भी है जैसा अभी चतुरानन मिश्र जी ने कहा कि मैं खुदा को ज्यादा नहीं मानता, कम मानता हूं । तो हमारे धर्म के अनुसार हमारे दर्शन के अनुसार जो चारवाक दर्शन था वह ईश्वर को नहीं मानता था । उनकी माया अर्थात् उनकी पत्नी को मानता था । यहां जो भी सिस्टम है जो प्रकृति है हमारे सिद्धांत के अनुसार जैसे गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि बहुत जन्मों के बाद कोई भी साधक– यदि उसको यह ज्ञान हो जाए कि हर कण में मैं व्याप्त हूं अर्थात ईश्वर व्याप्त है या उसकी माया जो प्रकृति है जो तकनीकी शिक्षा से जो हमारी वैज्ञानिक प्रगति है वह सभी उसमें आ जाती है सब चीजों में जो समभाव रखता है इस प्रकार का जो महामानव है वह इस संसार में दुर्लभ है । उससे संसार का कल्याण हो सकता है ।

तो जो सांप्रदायिकता की बात आज फैली हुई है जो पहले से फैली हुई है, आज की नहीं है, चाहे वह नौआखली में रही हो चाहे उसका अंजाम हमारे राष्ट्र के विभाजन में हुआ हो; जो पाकिस्तान आज बन गया है वह भी एक फिरकापरस्ती और सांप्रदायिकता

[श्री शिव प्रताप मिश्र]

की संकीर्ण विचारधारा की ही एक उपलब्धि है, लेकिन यदि आप इसका कारण समझ या निवारण तो इसमें जो हमारी संस्कृति और धर्म का एक परिचय है उसका सही रूप से न जानना यह सांप्रदायिकता भड़काती है या भाषा से सांप्रदायिकता भड़कती है या सीमाओं से सांप्रदायिकता भड़कती है।

अभी वर्तमान समय में तीनों का ज्वलंत उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत है। भाषा को आप देखिये तो उर्दू भाषा हमारी शासन सत्ता उत्तर प्रदेश की जो है दूसरी भाषा बनाई उसमें कुछ साम्प्रदायिकता की बातें भड़का दी गई और जो हमारे पंजाब में मसले उठे हैं जो गुरू ग्रंथ साहब में कहा हुआ है मैं मानता हूं कि वह सबसे बड़ा धर्म-निरपेक्ष धर्म है, जिसमें कबीर का नाम हजारों बार है, राम का नाम हजारों बार है, गोपाल का नाम है और उसमें मैं बताना चाहता हूं कि जिस भी महापुरूष को ज्ञान हुआ होगा, वह किसी को न गुरुद्वारे में हुआ है। जब गुरू नानक जी को ज्ञान हुआ था तो उस समय कोई गुरूद्वारा नहीं था, जब प्राफेट मोहम्मद को ज्ञान हुआ था, तो उनकोहेरा की गुफा में हुआ था उस समय कोई मस्जिद नहीं थी। जब हमारे ऋषियों को ज्ञान हुआ था, तो उस समय कोई मंदिर नहीं था।

तो मैं इन चीजों को बताना चाहता हूं कि जब धर्म का अच्छी तरह विश्लेषण करके उसको अच्छी तरह आप समझ सकते हैं, तो कभी दंगे और फिसाद नहीं हो सकते हैं। यह कहने से नहीं कि इस धर्म को मानना इस धर्म को न मानना।

धर्मो रक्षित रक्षितः के सिद्धांत से सब धर्मों का समान रूप से आदर करने से ही सांप्रदायिकता का हनन हो सकता है।

दूसरी चीज मैं बताना चाहता हूं कि जैसे बुद्ध ने कहा है कि दुख है तो दुख का कारण है अगर दुख का कारण है तो उसका निवारण है। अगर उसका निवारण है तो उसका एक पंथ है। आज जो मसलें तीनों फैले हुए हैं भाषा का मैंने बता दिया और उससे खालिस्तान की बात फैली हुई है उसी तरह से मैं बता रहा हूं ... (**समय की घंटी**) धर्म का जो ज्वलंत जइस समय कारण बनाये हुए हैं हमारे साथी जब राम जन्म भूमि को लेकर–उसमें मैं बताना चाहता हूं कि रामायण के ही अनुसार जो रामायण को मानता है जो राम को मानता है उसमें राम को सीमित करने का कोई हक नहीं है।

रामायण में यही लिखा हुआ है। राम को एक सीमित व्यक्ति नहीं माना गया है। जब देवताओं ने उनके अवतार की प्रार्थना शिव जी से की थी तो उन्होंने कहा था कि भगवान हर जगह व्यापक है और प्रेम से प्रकट होता है। यही चीज गीता में भी कही गई है। ईश्वर कोई एक जगह रहने की वस्तु नहीं है वह हर जगह व्याप्त है। उसकी शरण में जाने से ही शांति मिल सकती है। मैं अपने एक साथी से अभी कुरान के विषय में पूछ रहा था। उसमें भी यही लिखा हुआ है।

श्री चतुरानन मिश्र : माननीय महोदया यह जो कुछ बोल रहे हैं ... (**व्यवधान**)

उपसभापति : ब्राह्मण बोल रहे है आप चुप रहिए।

श्री चतुरानन मिश्र : जो कुछ आपने कहा है उसके बाद हमको कुछ प्रसादी भी मिलनी चाहिए।

श्री शिव प्रताप मिश्र : आपको मिलेगी, मिलेगी।....(**व्यवधान**)

उपसभापति : चतुरानन मिश्र जी, आप सच्चे मिश्र नहीं हैं वह बोल रहे हैं सच्चे मिश्र साक्षात ब्राहमण की वाणी बोल रही है।

श्री शिव प्रताप मिश्र : अल्लाह हर चीज में है। जो मैंने अभी आपको कहा कि, वह हमारे धर्म में भी है और उसमें भी है और अभी गुरु ग्रंथ साहब में भी लिखा है कि,

"संत हरिधन जप, सतगुरु
छोड़ सकल विकार"

भगवान का ही संचय कीजिये । भगवान एक जगह रहने की वस्तु नहीं है । गीता में कहा हुआ कि जो मुझे सब प्राणियों में देखते हुये मेरी उपासना करता है उसको मैं समस्त पापों से मुक्त कर देता हूं और उस को सद्भाव के लिये अग्रसर करता हूं ।

उप सभापति : मिश्र जी, आप थोड़ा संक्षेप कर देंगे ?

श्री शिव प्रताप मिश्र : मैडम, मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं कि दो शब्द में मैं अपनी बात खत्म करना चाहता हूं । । धर्म के विषय में जो बातें कही थीं उस पर मैंने कहा कि हमारे उस पर लांछन लगाया गया है हमारे गृह मंत्री पर, हमारे प्रधान मंत्री पर, हमारी पार्टी पर कि वह मंदिरों में जाते हैं, उस पर मैंने कहा कि पूजा करना और किसी धर्म को मानना यह हमारे संविधान के प्रतिकूल नहीं है । हमारा धर्म अधर्मी सिद्धांतों का प्रतिपादन नहीं करता बल्कि सब धर्मों के सम्मान में हम रहते हैं । अभी हमारे साथी वली उल्लाह ने कहा 15 सूत्री कार्यक्रम श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने बताया था अल्प संख्यकों के कल्याण के लिये और उसको राजीव जजी ने भी कहा कि इसका पालन किया जाना चाहिये और इसी जसांप्रदायिकता से जूझते हुये श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने अपना आत्मोसर्ग किया था और उसको जझते जहुये राजीव जी प्रधान मंत्री हुये हैं भारत के जनमत को पाकर उस तो पर मैं बताना चाहता हूं कि इन चीजों का हमें अपमान नहीं करना चाहिये । जसे हमारे शंकर सिंह वाघेला जी ने कहा कि हम अल्पसंख्यकों के मत के लिएलालायित नहीं रहते हैं। लालायित की बात नहीं है, अल्प संख्यक भी इस राष्ट्र के एक अंग हैं । वे भी मानव हैं । हमारा मानववाद में विश्वास होना चाहिये । हमारा सर्वधर्म समभाव में विश्वास होना चाहिये । तब यह सांप्रदायिकता का उन्मूलन हो सकता है ।

समय कम है और ज्यादा कहने के लिये आपका आदेश नहीं है, इस लिये मैं आप को धन्यवाद देते हुये अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूं । धन्यवाद ।

SHRI V. GOPALSAMY: Madam Deputy Chairman, in the name of religion more blood has been shed throughout the world right from the days of the Crusades. It is very tragic that instead of nurturing love and affection, bitterness, enemity hatered are being nurtured in the name of religion. Madam, in this country, whether a Muslim or a Hindu or a Christian or a Parsi, they were living in a spirit of fraternity and brotherhood. But it was the British who played the dangerous communal card of divide and rule. There is a Latin term— *divide et impera*. That means divide and rule. They played this strategy. If you go through the history of freedom struggle, in Kerala, thousands of Muslims, Mopla Muslims gave their lives and shed their blood. At that time, it was the British who played the divide rule policy. They set up the Hindus against the Muslim and the Muslim against the Hindus so that they could rule. Hadam I am pointed to say that over the Union Jack flag was removed, we have inherited as right inheritors of British policy, the same divide and rule policy. I would accuse this Government, the party which has been ruling at the Centre all these years that they have used the same card, the communal card, the divide and rule policy. When there is fraternity amongst the communities, then the Congress will try to divide them. When there is unity or harmony among communities, it won't be tolerated, then they will try the same policy of divide and rule.

Madam, take for example Kashmir. Mr. Sheikh Abdullah, the great leader was a symbol of religious harmony, communal harmony. But what is taking place today? They were living like brothers and sisters. But it is the Congress party which played the communal card in Jammu. You are accusing the BJP or the Jana Sangh or the RSS but you played the com-

[Shri V. Gopalsamy]

munal card in Jammu and yourself and what has happened is that the National Conference which represented the identity of the Kashmir valley, that has been split. You created G. M. Shah Then what happened? One fine morning when he was taking a cup of tea, Dr. Farooq Abdullah came to know that he was thrown out, dismissed. Then he was left in the lurch.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let Mr. Matto speak on Kashmir.

SHRI V. GOPALSAMY: He has deserted the National Confernece. He has deserted its ideology. Then what happened after some time? Dr. Farooq also joined hands with the Congress. What happened ultimately is that they have lost the identity but at the same time, the divide, i.e., the gap between the Hindus and the Muslims is widening. Now the extremist elements are gaining ground. Pro-Pakistan slogans are being raised. And even in Ladakh where they would not to tolerate hoisting Pakistani flags—they love India—this is being done because they feel that they have been alienated. This is the situation.

Madam, take the case of Mizoram. Laldenga was preaching his philosophy through arms and guns for years. After 20 long years he gave up arms. But here also you played the same trick. He was taken into confidence and he was assured the throne. But when he found it difficult to run the State, financially difficult, he had to depend on liquor for revenue. Then you aroused the sentiments of Christians and made charge against Laldenga. So, you are using the communal card wherever you go.

The same policy you are adopting in Sri Lanka also. You went there in the name of maintaining peace. There also the divide and rule policy you are playing, the same strategy in Sri Lanka also. In the Muslim areas, through your quizzling groups, through your paid hooligans with your armed forces, you create trouble in the Muslim areas, setting up Muslims against Hindus. And when the King of Nepal wrote a letter...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. One clarification please. Are you calling the IPKF as hooligans?

SHRI V. GOPALSAMY: No, they are using hooligans?

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you are calling the IPKF as hooligans, it should not go on record.

SHRI V. GOPALSAMY: No, what I said was that they have used...

THE DEPUTY CHAIRMAN: You can give your arguments. That is different. But if you say it about IPKF, I will not allow.

SHRI V. GOPALSAMY: Paid hooligans are there. But at the same time *I could produce affidavits.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, it will not go on record. I will not allow.

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, it should be removed from the records; he is casting aspersions against our armed forces ....(*Interruptions*).

SHRI V. GOPALSAMY: I stand by it. It was on the 2nd of August, 59 innocent civilians were butchered, shot dead cold blood.... (*Interruptions*).

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Gopalsamy, you stand or you sit but I would not allow, under my Chairman ship over here in the House, anything to go against our armed forces. Please keep that point in mind.

SHRI V. GOPALSAMY: If the armed forces commit murder, loot, plunder .... (*Interruptions*).

SHRI BUTA SINGH: He is discarding facts, telling untruths, bundle of

*Not recorded.

untruths. He is perverse, and everything he said about the army must be expunged.

SHRI V. GOPALSAMY: It is your practice ....(*Interruptions*).

SHRI H. K. L. BHAGAT: Will you yield for just a minute only?

SHRI V. GOPALSAMY: Are you prepared to send reporters to that area? (*Interruptions*)

SHRI H. K. L. BHAGAT: It was the same Mr. Gopalsamy in this House before the IPKF went there, who was all along pleading that India should intervene....

SHRI V. GOPALSAMY: Yes, I agree with you.

SHRI H. K. L. BHAGAT: Let me finish.

SHRI V. GOPALSAMY: We wanted armed forces to protect them, not to kill them, not to rape them ....(*Interruptions*)

SHRI H. K. L. BHAGAT: If we do not go there, you blame us and if we go there, you blame us. You have no principles. We in India are proud of the IPKF.

SHRI V. GOPALSAMY: I asked your Government to send armed forces to make peace, to save them, not to kill the Tamils ....(*Interruptions*).

SHRI H. K. L. BHAGAT: These are all unthruths.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I must remind the hon. Member that we are not discussing Sri Lanka. We are discussing communal situation within our country, not outside.

SHRI V. GOPALSAMY: That is what you are practising in Sri Lanka also. That is why your policy has collapsed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Gopalsamy, please sit down. I must remind the hon. Member that we are discussing communal situation within the boundaries of this country. We are not discussing international situation, I must remind you. So please keep Sri Lanka out of it.

SHRI V. GOPALSAMY: You are using armed forces also. That is why I referred to it.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, we are not discussing armed forces also.

SHRI V. GOPALSAMY: But this Government is using them.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is doing a lot of other things. But we will discuss it some other time, not this time. please conclude now.

SHRI V. GOPALSAMY: I will raise my accusing finger against this Government. It is responsible for the present state of affairs, that is, communal harmony no more exists in this country, and they are the prime accused.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Sarojini Mahishi.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: Madam, my name is there.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Your name is there. I must remind Mr. Matto that Dr. Mahishi's name is in the original list of speakers while yours is not there. Let her finish and then I will call you.

DR. (SHRIMATI) SAROJINI MAHISHI (Karnataka) The subject of communal situation is such that there cannot be two opinions, as far as constructive suggestions are concerned, in the ruling party and also in the opposition. Maximum area of agreement can be covered by the two sides coming together and trying to solve this problem.

[Dr. (Shrimati) Sarojini Mahishi]

Communal situation is deteriorating, no doubt, in the different parts of the country. But I was sorry to listen to many Members trying to interpret religion equating it to communal disturbances or communal disharmony. That is not the case. India is a vast country with diversity in unity and unity in diversty, having a number of religions, Hinduism, Islam, Christianity, Zoroastrian system and Buddhism and quite a few which are professing different schools of thought, also including Monism, Nihilism, Shunyavad and a number of other theories. But in spite of all these things, India maintains an undercurrent of culture which is common in almost all parts of the country which can be distinguished and identified as Indian culture. Therefore, I would like to say that religion is an abstract thing. Writing on the walls of the Library Hall of the Parliament House says that religion is engaged in catering to the needs of the well-being of all the people; it is *dharma*. If it is the other way, then it is *adharma*. Please study the delicate nature of the *dharma*. That is how it is written. One should always try to understand what exactly is meant by religion. When you say that religion should be separated from politics, how it can be separated from politics I would like to know because all those laws which have emanated have emanated from the religious heads in this country. Hindu law traces its origin to the divine soul. Muslim law, the Islam, traces its origin to the religious divine source. Even the Roman law traces its origin to the divine source. Under the circumstances, of course, we do try to separate them, separate the undesirable ritual and rites which are not in the larger interst of the country from politics or from any other activity which could be treated as anti-national activity. Under the circumstances, of course, the two things must be quite separated. In the Preamble of our Constitution when we say, "Sovereign Socialist Secular Democratic Republic", what is the meaning of a Secular Republic? Is it equivalent to ignorance of religions? If you have knowledge about all the religions and then if you are impartial to all the religions also, then you can say that you are secular. Of course, as per the Constitution if there is any difficulty in administration of Devoswom temples in Kerala they can be taken over by the Government. Articles 15 and 16 say, communal minorities can be given special protection in the larger interest. Therefore, there is a distinction between these things also. Communal minorities can be given special protection. So,secularism does not mean ignorance about religions. It means knowledge about all these things and with that knowledge if you are secular, that secularism will stand. Otherwise it cannot be said that you are secular. Communal situation, distorted communal situation can never be traced to any particular religion, whether it is Hindu religion or Islamic religion. No religion can ever propogate or advocate enmity or hatred against any other religion.

AN HON. MEMBER: And violence.

DR. (SHRIMATI) SAROJINI MAHISHI: My friend, of course, gave a graphic description of the violence that has been manifested in different parts of Gujarat. About this I have to say a few words. We have to understand this in a proper way. If there is communal disturbance in any one part of the country, it is because of the divide and rule policy that has been followed by the Government itself. Whether it has been rightly used or wrongly used, but it has been used. Right from the kindergarten days of a child he is asked to fill up a form giving his religon, caste to which he sub-castes to which he belongs. From the very beginning we inculcate in his mind deformed ideas about religion and other things. The

text books also do not contain proper education about religion. On the other side when it comes to elections, we, who speak about secularism in this country, try to put up a Muslim or a Scheduled Caste or a person belonging to a particular community because there are people of that community in that area and they will vote for that person. Therefore, elections are also based on these things. Our education is like that. Our entry into profession is based on these things. If this is the situation, what will happen to our country? I do remember, the British Parliament once got information from the Indian Parliament here that communal disturbances among different castes and groups were not up to our expectations. This is the report sent by the British Government in India to the British Parliament in London. Therefore we can understand that they tried to divide and rule to gain some advantage out of that. Therefore, I said tdat the maximum area of agreement can be there if the Government is very keen to bring about communal harmony among the different communities. If proper understanding of the religion, proper understanding of the religious principles is given, communal harmony can be established and we need not say so many things about the communal disturbances in Gujarat or in Badaun or in Kota or all those places. And next, of course—as if we are anticipating something very big—is communal disharmony or a big communal clash on Ram Janambhoomi and other things. We are trying to create a mountain out of a molehill. Why should not the timing be changed? We should try to convince our people. Our people are essentially good people. It is for the administration to see that they too take serious interest in these things and try to see that it is interpreted in the proper spirit. Thank you.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: Madam Deputy Chairman, I rise to speak on this very important subject with a heavy heart. I say this because certain other Members have spoken about their past and their association with other parties. I also recall my own past. I am remorse and so much depressed today on that account. Right from 1938, my house has been raided nine times. Three times arson was committed on my house. And who did all this? It was not Hindus who did it, it was not Sikhs who did it, it was not any other religonists who did it; it was the Muslim Leaguers who attacked our house nine times and committed arson on our house. I was a nationalist, my family was of nationalists and we were attacked. When the Partition of India took place, we were among those who associated themselves with Sheikh Abdullah. Our family said: "If we have to live, we have to live with secular ideals of the Congress propounded by Pt. Jawaharlal Nehru and Mahatma Gandhi". It is with that background I am telling you why I am feeling remorse today.

The other background that I would like to mention is this. Under the Indian Independence Act, to which at least the people of Kashmir were not a party, India was divided on the basis of religion and according to that Act, the State of Kashmir had automatically got to go to Pakistan because it was a predominantly Muslims State. But we, the Muslims of Kashmir, of our own volition, of our own free will said that we would not go to Pakistan, we would go to India. This Mahatma Gandhdi put as "we see a ray of hope". That dream I now see shattered today and I do not have words to express my anguish on this.

Madam, history is repeating itself. In 1930's, when the Fascist regime of Nazis came, people of Germany went and saluted their Fuhrer, Herr Hitler. Today I have no hesitation in saying that there is one gentleman in this House for whom I have the greatest

[Shri Ghulam Rasool Matto]

personal respect—and he is Mr. L. K. Advani. He is such a noble man, such a mild-mannered man and I have the greatest regard for him, just like my brother. But it is under his stewardship in the last two years that the Bhartiya Janata Party has converted itself into a fascist party. Therefore, all of us who have got nationalist ideas, not only from the ruling party but from the Opposition Benches also, should stand up and say, "Hail L. K. Advani! Hail L. K. Advani!" It is not that I respect him, but I want to teach him a lesson that the fascist regime of the same Hitler whom people greeted "Hail Hitler!" was finished by the same people. Similarly, any fascist organization in a country like ours has not to exist, cannot exist and will not exist. We, the people of India—Muslims, Hindus, Sikhs and others—have decided that this country shall be a secular country, that this country shall not be allowed to be a Hindu Rashtra, Muslim Rashtra or any other Rashtra. We will see to it and we will lay down our lives, if necessary, for this noble cause. We have Bapu's example before us. Bapu has taught us—I will tell people from the ruling party and friends from the Opposition also, those who have had some association with Bapu or those who revere Bapu that they should understand this point—that this country has to be a secular country not by profession but by actual practice, and that practice is possible only when we shall shed communal politics.

It pains me, Madam, when I see what is happening today. I may warn the Home Minister that if things are not checked, a situation, the like of which was not witnessed even in 1947, is going to come about in this country simply because of the machinations of the Bhartiya Janata Party which has turned into a stark fascist organisation. If this trend is not stopped, then this country is going to disintegrate.

SHRI SHANKER SINH VAGHELA: Tell me how many temples were ruined in the Kashmir valley in the last two years. You are the ruling party there. ....*(Interruptions)*.... Don't blame the BJP unnecessarily. .. *(Interruptions)*

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: It is not possible for the BJP, Shiv Sena or Vishwa Hindu Parishad and organizations like that to kill 20 crore Muslims of this country. The 20 crore Muslims are part of this country and they will not allow themselves to be annihilated and they can never be annihilated.

Madam, it is at the cost of the country's integrity that the BJP has come out openly with the Shila Puja. What are you doing about it? I ask my Government: What concrete steps have you taken? I can understand it if the Government feels in its wisdom that this puja is to be done, but then let it be done in the simple temples or small temples in the mohallas or in the villages. The Government of India has one responsibility and that falls on Mr. Buta Singh and Mr. Rajiv Gandhi. In the name of this Shila Puja, they should not allow a single procession to be taken out, throughout the country. If a Central law is possible to be enacted, by an Ordinance or otherwise, it should be banned, saying that on this Shila Puja issue there shall be no processions. As far as Muslim fundamentalism is concerned, Adam Senas and bodies like that and also the Vishwa Hindu Parishad and Shiv Sena should be immediately banned. If it is not possible for the Government of India to enact legislation from the Centre, the States should be asked to enact legislation through Ordinances immediately so that they stop Shila Puja processions.

When I saw in the morning today's *Indian Express*, which is not a friend of ours, I found that communal incidents have taken place at seven different places. It is on the first page. My friend, Mr. Raoof Valiullah said that 16 such instances took place. I would, therefore, request the hon. Home Minister to tell me if he is ready to enact a legislation under which a Shila Puja procession would not be allowed. I do not know if there is any sanctity behind it. So far as Islam is concerned, Islam does not recognise processions. Islam only recognises congressional prayers. There is no provision in Islam about processions. He should see to it that processions in the name of Shila Puja are immediately banned throughout the country. If he does not do that, by 9th November, I will tell him that their scheme is that a minimum of 10 lakh Muslims shall be massacred. If they are to massacre, they are welcome to do it. But this should not be allowed. I request him that he should do it.

The second and the most important point that I would like to ask the hon. Home Minister is, as he has promised this in the Consultative Committee meeting, he should immediately call a meeting of the National Integration Council and place before it the whole fact and take a consensus on this issue. Otherwise, this flare-up is going to take place like this.

Now the BJP has come out with a lot of things. Anything concerning Muslims is antagonistic to them, whether it is Urdu or anything else.

I have told you the history of Article 370 under which the Muslim majority State acceded to India because we want a special status, and that special status shall continue. But the BJP has put it in its manifesto. A nationalist Muslim, a man like myself, will be the first man to sacrifice his head at the altar of their orgy if anything is done to Article 370 in relation to Jammu and Kashmir. So long as there is a single Lal Krishna Advani, a single Janasanghi in this country, a single Vishwa Hindu Parishad man, Article 370 cannot be allowed to be removed. Madam Deputy Chairman, three days back some students came to me at my house. They said, "Mr. Matto, you have taken us to India. But are you taking us to that India where we are being massacred and still they say that Article 370 should be removed" Are they creating conditions in which we should voluntarily tell the people of India that we are agreeable to deletion of Article 370? But I may warn the BJP or any other organisation that so long as there is a single L. K. Advani a single R. S. S. man, a single Vishwa Hindu Parishad man, 60 lakh Kashmiris will lay down their lives but will not allow Article 370 to go out.

With these observations, I would request the hon. Home Minister to react to some of these suggestions and convene a meeting of the National Integration Council as soon as possible.

Thank you very much.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Ram Awadhesh Singh, I will allow you only five minutes, five minutes in real terms.

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : महोदया, अतल में बहुत महत्वपूर्ण समझ कर यह बात शुरू की गई है और इसी-लिये आधी रात के बाद भी यह बहस चल रही है । लगता है कि सरकार के दिमाग में सांप्रदायिकता का महत्व है... (व्यवधान) । जब आपने संक्षेप में कहा तो मैं बिना भूमिका के बोलना चाहता हूं । इस देश में कट्टरपंथी ताकतों का और उदारवादी ताकतों का एक अनिर्णीत युद्ध बहुत दिनों से चल रहा है । कभी कट्टरपंथी ताकतें बहुत मजबूत हो जाती हैं और उदारवादी ताकतों पर हावी हो जाती हैं और फिर कभी उदारवादी

[श्री राम अवधेश सिंह]

ताकतें हावी हो जाती हैं तो कट्टरपंथी ताकतें दब जाती हैं और इस तरह से एक अनिर्णीत युद्ध में हम अभी तक फंसे हुये हैं । मुझे इस बात को कहने में कोई शक नहीं है, कोई भय नहीं है और मैं इसको निर्भीकतापूर्वक कहना चाहता हूं कि राजनीति में दार्शनिक तौर पर हिटलर के दर्शन को मानने वाले लोग जितने जिम्मेवार भारत में सांप्रदायिकता को फैलाने के लिये उतने ही जिम्मेदार हैं गांधी के दर्शन को मानने वाले लोग अपनी नपुंसकता के चलते । गांधी के दर्शन को मानने वाले चाहे सरकारी बेंच में बैठे हों या प्रतिपक्ष में बैठे हों, अगर अपनी नपुंसकता को छोड़ कर इस सांप्रदायिक दानव के साथ मुस्तैदी से लड़ सकते, ईमानदारी से अगर लड़ सकते तो इस विषधर को सही ढंग से कुचला जा सकता था । लेकिन न तो सरकारी पक्ष में बैठे हुये गांधीवादी लोग और न ही प्रतिपक्ष के गांधीवादी लोग सांप्रदायिकता से सही ढंग से लड़ पाये । केवल हम दोषारोपण करते रहे कि हम लोग सांप्रदायिक नहीं हैं । लेकिन कांग्रेस के लोग या प्रतिपक्ष में जो सांप्रदायिक नहीं हैं, गांधीवाद को मानते हैं और अच्छे राजनीतिक दर्शन के साथ हैं वे भी उसी खेल में फंस गये । मूल कारण है इस देश में सांप्रदायिक ताकतों के बढ़ने का कि सरकार सांप्रदायिकता विरोधी नारा देती है और जनसंघी लोग, आर.एस.एस. के लोग और मुस्लिम लीग के लोग सांप्रदायिकता का प्रचार करते हैं । कांग्रेस सरकार और कांग्रेस पार्टी के लोग उसका विरोध करते हैं शब्दों में लेकिन कार्यवाही में सांप्रदायिकता को मजबूत करते हैं । मैं बार बार इस बात पर जोर देता हूं कि सरकार की तिल भर की गलती प्रतिपक्ष की पहाड़ भर की गलती से ज्यादा भारी होती है और कांग्रेस पार्टी की एक साजिश रहती है या कूटनीति रहती है, चाल रहती है कि सारा अपना दोष प्रतिपक्ष पर या सांप्रदायिकता पर डाल दें । मैं मानता हूं कि बी.जे.पी., आर.एस.एस. और मुस्लिम लीग का चेहरा घिनौना है लेकिन महोदया, सरकार उन सांप्रदायिक ताकतों की सांप्रदायिक कार्यवाहियों का लाभ लेना चाहती है तो कैसे लेना चाहती है । जब तनाव सांप्रदायिक का बढ़ जाये तो कांग्रेस पार्टी सोचती है कि हम ही बचाव करने वाले हैं और इसलिये हम आपके साथ हैं और ये जो माइनारिटीज के लोग हैं वे डर से या भय से कहेंगे कि सरकारी पक्ष के साथ हमको रहना चाहिये । इसलिये कांग्रेस पार्टी को इसमें लाभ है कि सांप्रदायिक तनाव का वातावरण बन जाये तो माइनारिटी क्लासेज के लोग घूम फिरकर भय से कांग्रेस को वोट डालेंगे । अगर कांग्रेस के लोग चाहते कि शुरू में ही इस विषधर को मारा जाय तो मारा जा सकता था । महोदया, मैं बताना चाहता हूं कि सरकारी पक्ष की तिल भर की गलती आर.एस.एस. या जनसंघी या मुस्लिम लीग की पहाड़ भर की गलती से भारी कैसे है। महोदया, ताला खुलवाने का काम राम मंदिर का किसने किया ? क्या आर.एस.एस. ने किया, क्या बी.जे.पी. ने किया या मुस्लिम लीग ने किया ? यह ताला खुलवाने का काम सरकार ने किया और जब विष का घड़ा फोड़ दिया तो विष फैल गया । इसलिये इसमें तिल भर की गलती हुई । ताला खुलवाने का काम हुआ । मुरादाबाद में किसने गोली चलवायी ? क्या आर.एस.एस. के लोगों ने.... (व्यवधान) ... (समय की घंटी)

उपसभापति : पांच मिनट हो गये ।

श्री राम अवधेश सिंह : वहां किसने किया । सरकारी गोली चली । पुलिस ने मारा और क्यों मारा, क्योंकि पुलिस को डर नहीं है, इस सरकार से डर नहीं है। पुलिस मार देगी तो उसकी पीठ पोंछने के लिये सरकार चली जायगी । इसलिए सरकार उतनी ही जिम्मेवार है जितनी की आर.एस.एस. जिम्मेवार है;

जितना कि बी०जे०पी० जिम्मेवार है। इसलिए मुख में मैंने कहा कि हिटलर के दर्शन को मानने वाले लोग जितने सांप्रदायिकता के लिए जिम्मेवार है, उतने ही गांधी का दर्शन मानने वाले अपनी नपुंसकता के लिए जिम्मेवार हैं।

उपसभापति : बस, अब आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : नहीं, मैं कह रहा हूं कि... (**व्यवधान**)

उपसभापति : आपके पांच मिनट हो गये हैं। अब आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : महोदया, एक मिनट और--मैं उदाहरण के तौर पर यह कहना चाहता हूं कि सारे देश में ... (**व्यवधान**)

उपसभापति : नहीं, अब आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : आप उधर से तो आधा घंटा बुलवायें, हमको दो मिनट तो और बोलने दीजिए।

उपसभापति : आपने पांच मिनट से ज्यादा ले लिये हैं।

श्री राम अवधेश सिंह : मैं बहुत नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि सारे देश में चले जाइये... (**समय की घंटी**) जितने थाने मिलेंगे उनमें मंदिर बना हुआ है, जितनी जेल हैं, उसमें मंदिर बने हुए हैं। सरकारी जगह में रोज मंदिर बन रहा है, जेल के प्रांगण में मंदिर बन रहा है, थाने के प्रांगण में मंदिर बन रहा है। इसे क्यों नहीं रोका जाता है? (**समय की घंटी**)

सरकार क्या अंधी है या बहरी है कि सरकारी जगह में मंदिर बनवाती है? यह हिंदू सांप्रदायिकता जान-बूझ कर सरकार फैलाती है यह कांग्रेस पार्टी चलाती है नहीं तो... (**व्यवधान**) तो क्यों नहीं वहां मंदिर बनेगा, या गुरुद्वारा बनेगा? सरकार की दृष्टि उधर क्यों नहीं जाती है? मैं चाहता हूं कि सरकारी जगहों में हिंदुवादी लोग मंदिर नहीं बनायें। कट्टरवादी लोग जो सरकारी नौकरी में हैं पुलिस में हैं, वह थाने में मंदिर बना लें... (**समय की घंटी**) वह जेल के प्रांगण में मंदिर बनायेगा और सरकार उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करेगी।

उपसभापति : आपने अपनी बात कह दी है। अब आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : तो वही पुलिस जब कम्यूनल टेंशन होगा, तो वही पुलिस जाकर मारेगी जिस पुलिस को आप थाने में मंदिर बनाने की इजाजत देते हैं। (**समय की घंटी**)

वही जाकर कम्यूनल टेंशन में मुसलमान को मारेगी। इसलिए इस बात पर आप रोक लगाइये। आप लोग मजाक बंद करें।

उपसभापति: राम अवधेश सिंह जी, आप अपने वचन पर वचनबद्ध रहिए और बैठ जाइये। मैं होम मिनिस्टर साहब को बुला रही हूं। मैंने पांच मिनट से ज्यादा किसी को नहीं दिये। आप कृपया बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : थोड़ी सी बात है लेकिन इतिहास के इस नाजुक दौर में जहां हम लोग आये है... (**व्यवधान**)

उपसभापति : अब प्लीज आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह: अगर हम लोग देखें बात और सत्य बात नहीं बोलेंगे, तो यह देश के साथ नाइन्साफी करेंगे। मुझको इस बात को बोलने में कोई शक नहीं है।

उपसभापति : अब आप बैठ जाइये अब श्री मोहम्मद अमीन अंसारी दो लफ्ज बोलेंगे। ... (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : एक मिनट और। मैं आपकी बात मान रहा हूं और कनक्लूड कर रहा हूं।

उपसभापति : अब आप बैठ जाइये। कभी तो माना करें।

श्री राम अवधेश सिंह : जितना आप इंटरप्ट कर रही हैं, उतने में तो मैं खत्म कर देता। मैं कह रहा हूं कि अभी... (व्यवधान)

उपसभापति : अब अंसारी साहब बोल रहे हैं। आप बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : मैं कनक्लूड ही कर रहा हूं। एक वाक्य तो हमको बोलने दीजिए, उनको रोकिए। (व्यवधान)

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : देशवासियों के साथ... (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : अब मैं भी बोलूंगा और वह भी बोलेंगे, तो.. (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : मैं एक मिनट में कनक्लूड कर रहा हूं। मुझे कनक्लूड तो करने दीजिए।

उपसभापति : आप : दस मिनट बोल चुके हैं, अब आप बैठिये।

श्री राम अवधेश सिंह महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं कि हम लोग इतिहास के नाजुक-दौर से गुजर रहे हैं और इस तरह से मजाक नहीं चलेगा। आने वाली पीढ़ियां... (व्यवधान)

उपसभापति : मजाक नहीं, आप अब बैठ जाइये।

श्री राम अवधेश सिंह : मैं आपको नहीं कह रहा हूं। मैं आपसे मजाक थोड़े ही कर रहा हूं। मैं सरकार से विचार करने के लिए कह रहा हूं। अगर सरकार मजाक करेगी, तो आने वाली पीढ़ियां हम लोगों को कभी माफ नहीं करेंगी।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : आपने जो मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। (व्यवधान)

श्री राम अवधेश सिंह : सरकार का चेहरा साफ रहना चाहिए और कार्यवाही साफ होनी चाहिए और सांप्रदायिक ताकतों को मजबूती से चलना चाहिए, चाहे वह कांग्रेस के अंदर हों या बाहर हों। सांप्रदायिक ताकतों को कुचलने के लिए सरकार आगे बढ़े। हम लोग आपके साथ रहेंगे। धन्यवाद।

उपसभापति : अंसारी जी, आप एक-दो मिनट में बोल दीजिए।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : आपने उनको तो इतना टाईम दिया है।

उपसभापति : आप कम्पैरिज़न मत कीजिए।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : जब हिंदुस्तान गुलाम था, तो महात्मा गांधी की रहनुमाई में आजादी की लड़ाई में कुर्बानी देने में अखिलयत ने बहुत पीछे नहीं, बल्कि देशवासियों के साथ कदम से कदम मिला कर हर महाज पर लड़ते रहे तब हम फरकापरस्त

12.00 MIDNIGHT फासिस्ट लोग अंग्रेजों के तलुवे चाट रहे थे। आज भी फिरकापरस्त मुल्क दुश्मन ताकतों के इशारे पर देश को तबाह और बर्बाद करने और तोड़ने पर लगे हैं। महोदया जी, अगर उर्दू उत्तर प्रदेश में दूसरी सरकारी जबान बन गई तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा। इससे पहले बिहार में दूसरी सरकारी जबान उर्दू को बनाया गया। उर्दू तो हमारे यहां से ही पैदा हुई, परवान चढ़ी, इंकलाब जिंदाबाद का नारा दिया, सारे जहां से अच्छा

हिन्दुस्तान हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलिस्तान हमारा" का तराना गूंजा। ... (व्यवधान) एक शेर उसका भी है, "हिन्दी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा" और राम प्रसाद बिस्मिल ने कहा, "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू ए कातिल में है" ... (व्यवधान) आप सुन लीजिए, मैं आपको जगा रहा हूं। आप तो सो रहे हैं। आप हमारी तारीख पढ़िए। हिन्दुस्तान की एकता और इत्तहाद की तारीख पढ़िए। आप पलट कर देखिए, आप अंग्रेजों के सामने दुम हिलाते रहे। आजादी के मतवालों के दिलों में जोशो-खरोश पैदा करता रहा। ... (व्यवधान) अब जवाहरलाल नेहरू की जबान उर्दू आनन्द नारायण मुल्ला की जबान उर्दू, बसंत की जबान उर्दू, मुंशी प्रेमचन्द की जबान उर्दू, रघुपति सहाय फिराक की जबान उर्दू, राजेन्द्र सिंह बेदी की जबान उर्दू और महेन्द्र सिंह की जबान उर्दू, राम लाल की जबान उर्दू, लाखों-लाख लोगों की जबान उर्दू है। उर्दू जबान विरासत में मिली है। किन-किन लोगों का जिक्र करूं कि यह हिन्दू और मुसलमान की एकता इत्तहाद की जामिन उर्दू है। इसको धर्म, मजहब के नाम पर नफरत बढ़ाने की घिनौनी साजिश मुल्क दुश्मन अनासर कर रहे हैं। महोदया जी, वजीरे आजम राजीव गांधी जी की रहनुमाई में मुल्क तरक्की और खुशहाली की मंजिल की तरफ तेजी से बढ़ता जा रहा है और जल्द तरक्कीयाफ्ता मुल्कों की सेफों में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो जाएगा। यह तरक्की चंद फासिस्टों को पसंद नहीं आ रही है। वे अपने एजेंटों से मुल्क में इंतशार पैदा करके हिन्दुस्तान को कमजोर करने की दिन-रात साजिशों में लगे हुए हैं और मुल्क में फसाद और नफरत का माहौल बना रहे हैं। महोदया जी, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश सूबों में फसाद कहां है। बिसात के तौर से अभी बदायूं में इन्होंने जो नंगा नाच करवाया है यह मुल्क के दुश्मन, इन्होंने इंसानों को कत्ल करवाया है। यह मुआफ करने के लायक नहीं है। यह सारी साजिश आर०एस० एस०, भा०ज०पा० और विश्व हिन्दू परिषद की है, मैं इन पर इलजाम लगाता हूं, महोदया जी, मंदिर-मस्जिद का फितना पैदा करके धन जमा किया जा रहा है। ... (व्यवधान) विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, शिव सेना, आर०एस०एस० जैसी फिरकापरस्त मुल्क दुश्मन जमातें हथियार सप्लाई कर रही हैं।

एक माननीय सदस्य : आदम सेना।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : आदम हां, सेना भी। अपने-अपने गुंडों समाज दुश्मन ताकतों को सप्लाई कर रहे हैं। महोदया, जी, कानपुर में ... (व्यवधान) सुन लीजिए।

श्री शंकर सिंह वाघेला : मुल्क के दुश्मन मत कहिए। ... (व्यवधान) मुल्क के दुश्मन वाली बात मत कहिएगा।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : सुनिए, मैं सबूत के साथ कहना चाहता हूं ... (व्यवधान)

श्री शंकर सिंह वाघेला : मुल्क के दुश्मन वाली बात गलती से भी मत कहिएगा .... (व्यवधान) आप चुप हो जाइये। अपना बयान बंद करिए। मैं नहीं सुनूंगा। ... (व्यवधान) मुल्क के दुश्मन, मतलब क्या और आप कहना क्या चाहते हैं? ... (व्यवधान) किससे बात कर रहे हैं? किसके सामने आप उंगली उठा रहे हैं? मुल्क के दुश्मन वाली बात क्या कर रहे हैं? ... (व्यवधान)

उपसभापति : अंसारी साहब, बस, आप बंद कर दीजिए। आपका टाईम हो गया। ... (व्यवधान)

श्री शंकर सिंह वाघेला : मुल्क के दुश्मन वाले वर्ड आप निकलवाइये और वापस दिलवाइये। ... (व्यवधान)

उपसभापति : अब आप बैठ जाइये।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : हमारे हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे वसल्लम ने कुरान की रोशनी में तालीम दी है अपने वर्तन की हिफाजत करना ईमान का जुज है,

[श्री मुहम्मद अमीन अंसारी]

इंसानियत का फर्ज है। इस वजह से हम मुल्क पर निसार हो जाना वाइसे-फक्र समझते हैं। अपने मुल्क की हिफाजत के लिए हमारा नौजवान ... (समय की घंटी)...

उपसभापति : मैं आपसे रिक्वेस्ट कर रहा हूं कि आप बैठ जाइए। अंसारी साहब, कृपया अपना स्थान ग्रहण करिए।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं .....

उपसभापति : अब कुछ मत कहिए। आप कृपया बैठ जाइए।

श्री मोहम्मद अमीन अंसारी : यह मेरे साथ ना-इंसाफी हो रही है।

उपसभापति : कोई ना-इंसाफी नहीं हो रही है। बूटा सिंह जी, आप बोलिए,। .... (व्यवधान).... अंसारी साहब प्लीज बैठ जाइए।

SHRI BUTA SINGH: "Communlism is a blot on the nation. It lets loose uncontrollable passions turning friends into foes. It must be rooted out and this needs not only administrative steps but a concerted effort by all those who have the true interest of our country at heart. India is not just a stretch of land. India stands for tolerance, for compassion, for fellow feelings. India believes in unity in diversity."

मैडम, यह शब्द उस महान आत्मा के हैं, उस महान नेता के हैं, उस महान शहीद के हैं, जिसने अपने शरीर के खून की आखिरी बूंद, आखिरी कतरा इस देश की एकता और अखण्डता के लिए बहाया है, श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने। जब हम यह शब्द उनके पढ़ते हैं तो उनकी प्रतिमा हमारे सामने साकार हो जाती है। तीन पीढ़ियों से देश की सेवा में समर्पित यह खानदान ... (व्यवधान)...

श्री राम प्रवेश सिंह : चौथी पीढ़ी कहिए।

श्री बूटा सिंह : अभी मैं इंदिरा जी की बात कर रहा हूं। चौथी पीढ़ी की बात तो मैं बाद में करूंगा। जब उन्होंने यह शब्द कहे तो उन्होंने अपने पूर्वजों का तीन पीढ़ियों का इतिहास इसमें बांध कर इस देश में उसका प्रकाश किया। श्रीमती इंदिरा गांधी मुखर्जी थीं, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के आदर्शों की, जिन आदर्शों की बुनियाद मेरा भारत महान, मेरा देश महान आज दुनियां में एक शक्तिशाली देश के रूप में विद्यमान है।

महोदया, जिस मसले पर आज सदन ने बहस की है, यह मसला देश के लिए बहुत महान है जैसे किसी प्राणी के लिए उसके प्राण, उसका खून और उसका हृदय होता है उतना ही महान यह विषय है--आपस में भावनात्मक एकता, सांप्रदायिक एकता। यदि यह नहीं होगा तो आप अपने भारत के अस्तित्व का चिंतन नहीं कर सकते। भारत महान उद्योग से नहीं होगा, भारत महान ज्यादा संपत्ति जोड़ने से नहीं होगा, भारत महान ज्यादा विकास करने से नहीं होगा। भारत महान होगा; अगर इस देश में एक भावनात्मक एकता के साथ अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पित हों और वह भारत बहुत महान होगा, चाहे गरीब ही क्यों न हो, चाहे उपेक्षित क्यों न हो। हम गरीब रह कर भी उसमें जी सकते है, जिए है। सदियों पुराना हमारा इतिहास है, हमारा पुराना इतिहास तो यह कहता है कि भारत वर्ष सोने की चिड़िया हुआ करती थी, मगर पिछले पांच-छह सौ साल का इतिहास यह कहता है कि हमारा अनपढ़ लोगों का देश था और आज से चालीस-पचास वर्ष पहले हमारे देश में हर चीज जिंदगी की जरूरत की बाहर से मंगाई जाती थी, हम केवल कच्चा माल पैदा करते थे, कपड़ा हो या हमारे रोज इस्तेमाल करने की चीजें हों,

इंजीनियरिंग गुडंस हों, सुई, धागा—जो कुछ भी इस्तेमाल होता था—सायकिल मशीन यह सब कुछ बाहर से आता था। आज 40 बरस में हम ने विकास कर लिया है और बहुत आगे बढ़ चुके हैं। दुनियां के नवीनतम देशों में हमारा शुमार हुआ है। चाहे वह एटोमिक एनर्जी की बात हो, चाहे वह साइंस-टैक्नोलोजी की बात हो। मगर एक चीज में हम बहुत गरीब हो गए, बहुत कमजोर हो गए, बहुत नीचे चले गए जिसके ऊपर आज हम इस सदन में चर्चा कर रहे हैं। आज फिर हमारे भाई-भाई में नफरत की बू पैदा हो रही है। आज फिर हमारे एक स्वच्छ जीवन में सांप्रदायिकता के धब्बे पड़ रहे हैं।

यह वह देश है जिसके महान संत कबीर दास जी ने कहा था कि, "अब्बल अल्लाह नूर पाया के कुदरत के सब बंदे।" उन्होंने जब मानव के बारे में इस देश में ज्ञान का प्रचार करना चाहा तो इस नारे से किया था कि, "अब्बल अल्ला नूर पाया, कुदरत के सब बंदे। एक नूर से सब जग उपजा, कौन भले कौन मंदे। लोगों धर्म न बूझो भाई, खालिक खलिक, खलिक मयर खालिक पूर रहयो सब भाई।" अब अगर इंसान का सही मायनों में इस ब्राम्हांड के ऊपर, इस धरती के ऊपर कोई रिश्ता है तो वह कुदरत के साथ है। कुदरत को मां मानकर, माता मानकर हम सब एक नए रुप में जब अपने आपको देखेंगे तो सही मायनों में हम अपने धर्म का पालन करेंगे। आप किसी धर्म को उठाकर देख लीजिए—पौरातन हो, मध्यकाल का हो या नवीनतम हो, सभी धर्म एक ही शिक्षा देते हैं कि, "हे मानव तू मानव बन।" उसमें मानवता के गुण होने चाहिए। कोई भी धर्म फिरका नहीं सिखाता। लेकिन मुश्किल की बात यह है कि धर्म के ठेकेदार जिनको कांट्रैक्ट मिल जाता है, वही उसको फिरका बना देते हैं। बौद्ध धर्म फिरका हो गया, जैन धर्म फिरका हो गया, हिंदू धर्म फिरका हो गया, सिख धर्म फिरका हो गया। मैं तो हैरान हूं इस बात से कि इस्लाम धर्म फिरका हो गया। "रब्बुल आलमीन, रब्बुल मुस्लिमीन हो गया। जिसे हम ने रब्बुल-आलमीन माना है, वह रब्बुल मुसलमीन हो गया। अब मैं आज जरत पैगम्बर के नाम से पूजा नहीं कर सकता हूं। वह तो रब्बुल आलमीन है, उसके लिए तो सब को पूजा करनी चाहिए।... (व्यवधान) मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूं।

श्री गुलाम रसूल मट्टू : रहमुतुल लिल आलमीन कहा है, रहमततुल लिल मुस्लमीन नहीं कहा है।

श्री बूटा सिंह : यही तो मैं अर्ज कर रहा हूं। हम ऐसे महकमों में बट गए कि यदि आज मैं अपने पूज्य हजरत साहब का नाम लूं तो मेरी बिरादरी के लोग कहेंगे कि ये तो भ्रष्ट हो गया। मेरे भाई शंकर सिंह वाघेला कहेंगे कि ये तो मुसलमानों के हाथों बिक गया। हालांकि हस्ती एक ही है, उसमें कोई फर्क नहीं है। गुजराती में आयी हो, क्रिश्चियन में आयी हो, किसी भी भाषा में आया हो, कृष्ण में आयी हो, गुरुनानक में आयी हो, बौद्ध में आयी हो, महावीर में आयी हो—हस्ती तो एक ही है। उसमें तो कोई अंतर नहीं है। हम लोगों ने अंतर डाला है। धर्म के ठेकेदारों ने अंतर डाल दिया है। इस पवित्र भूमि भारतवर्ष को ही इस बात का गर्व हासिल है कि दुनियां के समस्त धर्म यहां एक ही जगह पर पूजे जाते हैं। मैंने काफी देशों का भ्रमण किया है। बहुत-से देश इस धरती पर हैं जहां दूसरा कोई धर्म अपना मंदिर नहीं बना सकता, अपना पूजा स्थल नहीं बना सकता। केवल एक ही धर्म का पूजा स्थान हो सकता है, दूसरे धर्म का नहीं हो सकता। क्या आज हम उनको फॉलो करेंगे। भारतीय संस्कृति में तो यह नहीं लिखा हिंदू धर्म ले लीजिए जिसके ऊपर हमें बहुत फर्क है—पुरातन धर्म, सनातन धर्म, वेदकाल का धर्म,

[श्री बूटा सिंह]

वेदकाल से पहले का धर्म, क्या मैं बड़े अदब और नम्रता के साथ पूछ सकता हूं कि हिंदू धर्म के ठेकेदारों में कितनी एकता है ? शैवाइट्स वैष्णोवाइट्स के मंदिर में, वैष्णोवाइट्स शैवाइट्स के मंदिर में नहीं जा सकते । बुत पूजा करनेवाला भी हिंदू हो सकता है, वृक्ष की पूजा करनेवाला भी हिंदू हो सकता है, जहरीले सांप की पूजा करनेवाला भी हिंदू हो सकता है ? कहां एकता है ? (व्यवधान)...

श्री भूम अवधेश सिंह : लेकिन हरिजन तो मंदिर में नहीं जा पाएगा । उससे भगवान नापाक हो जाएगा ।

श्री बूटा सिंह : इसी में हमारी विचित्रता है । इसी में हमारे देश की विशालता है कि हम सर्वस्व में समानता मानते हुए, हम सभी धर्मों में जैसे एक ही धर्म में, अब मेरे भाई शंकर सिंह वाघेला बैठे हुए हैं यहां पर, इस देश में ऐसे महान पुरुष हुए जिन्होंने यह फैसला लिया कि मैं तो देश की पुरातन संस्कृति को बचाने के लिए एलान करके चल रहा हूं कि यदि तलवार के माध्यम से, यदि बल-प्रयोग से किसी का धर्म परिवर्तन होगा तो मैं नहीं होने दूंगा और वह उसी सुप्रसिद्ध महानगरी श्री आनन्दपुर साहब से चले थे और इस बात का प्रचार करके चले थे और उनके फालोअर्स में सबसे पहले मुसलमान मियां पीर थे और उन्होंने उसका इस्तकबाल किया कि आप अच्छे काम में जा रहे हैं, मैं आपका साथ देता हूं और दिल्ली में आकर लाल किले के सामने, चांदनी चौक के सामने उनका शीश धड़ से अलग कर दिया गया । किसके लिए कुर्बान हुए थे वह ? हिन्दू धर्म के चिन्ह को जिन्दा रखने के लिए । उन्होंने कहा कि प्रेरणा से, मुहब्बत से, प्रेरणा से यदि कोई धर्म परिवर्तन करता है तो मुझे कोई एतराज नहीं लेकिन यदि कोई तलवार से धर्म परिवर्तन करता है तो मैं उसका विरोध अपना शीश देकर करूंगा । मैं पूछना चाहता हूं भारतीय जनता पार्टी के नेता श्रीमान महोदय यहां पर बैठे हुए हैं कि आपने तो आज तक उनको भी हिन्दू नहीं माना ।..(व्यवधान)...

श्री शंकर सिंह वाघेला : हम मानकर चलते हैं । ...(व्यवधान)...

श्री बूटा सिंह : यदि ऐसा होता तो पिछले 400 साल में आपने आज तक कभी उनका जन्मदिन मनाया ? कभी बलिदान दिवस मनाया ?

श्री शंकर सिंह वाघेला : आर०एस० एस० ने मनाया । ...(व्यवधान)...

श्री बूटा सिंह : और धक्के दे-देकर उन लोगों को बाहर निकाला । बुद्ध मत का विरोध किया तो इन कर्मकाण्डियों ने किया । जैन मत का विरोध किया तो इन्होंने किया । क्या मसला था पंजाब का ? अभी मेरे भाई अहलुवालिया जी ने कहा कि अगर आप सही मायनों में देखें तो मसला पंजाब का कोई भी नहीं था फैसला बारके पंजाब के लोग आए थे। पंजाब में जो पश्चिमी पंजाब था वहां के हिन्दू-सिख भाई लाखों की तादाद में अपने परिवारों को साथ लेकर आए थे हमें अपने प्यारे हिन्दुस्तान में जाना है । बहुत से लोगों की रास्ते में कुर्बानी हो गई, बच्चे काट दिए गए । भगत जी जानते हैं कि माल गाड़ियां लाशों से भरी हुई उस तरफ से इस तरफ आई । भगत जी जानते हैं, जिनके देश से लोग आए । फर्क क्या था ? पंजाबी भाषा की लिपि क्या होनी चाहिए, इस पर झगड़ा चला था । बोली का, भाषा का तो प्रश्न बाद में उठा, 1960 में उठा था । सबसे पहले अगर किसी ने पंजाब में जहर का बीज बोया तो उन्होंने बोया जिन्होंने यह कहा है पंजाबी भाषा गुरमुखी लिपि में नहीं लिखी

जा सकती, इसको देवनागरी लिपि में लिखा जाना चाहिए। कितनी भाषाएं हैं हिन्दुस्तान में जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं ? क्या तूफान आ रहा था ? पंजाबी की अपनी लिपि थी, अगर उसको मान लिया गया होता। उसके बाद फिर तकाजे शुरु हुए। हिन्दी-पंजाबी का तकाजा शुरु हुआ और मुझे याद है कि वह भी दिन कि मैं लोक सभा में मेम्बर के रूप में बैठा हुआ था जब प्रो० हीरेन मुखर्जी ने पं० जवाहर लाल नेहरू के सामने यहां आकर पंजाबी में कहा कि मैं पंजाब होकर आया हूं और पंजाब के कुछ लोग हैं जो पंजाबी बोलते हैं, हिन्दी बोलनी नहीं आती और पंजाबी में कहते हैं कि मेरी भाषा तो हिन्दी है। इस तरह से देश को बांटने के लिए कभी भाषा का नाम, कभी धर्म का नाम, कभी क्षेत्र का नाम।

अभी-अभी गोपालसामी यहां से गए। मुझे याद है कि पिछली बार जब बहस हुई थी तो मैंने यह कहा था कि मेरा देश मल्टी रेशल हो सकता है, कल्चरल वैरायटीज हो सकती हैं, भाषा की वैरायटीज हो सकती है मगर मेरा देश मल्टी नेशनल नहीं है। तो उन्होंने उसके ऊपर विवाद किया था। उन्होंने कहा था कि

Dravidians are a different nation.

मेरे भाई सी०पी०आई० के लोग, सी० पी०आई० के लोग भी इस थ्योरी को कभी-कभी कह देते हैं। हम इस बात को मानते हैं कि एक राष्ट्र, एक नागरिकता, एक संविधान को मानने वाला ही भारतीय हो सकता है, जिसको इसके ऊपर संदेह है वह भारतीय नहीं हो सकता। जब तक हम इस दृढ़ता के साथ, जब तक हम इस निश्चय के साथ, अपने देश को, अपनी नागरिकता को नहीं मानेंगे, तब तक हमारे मन में देशभक्ति की भावना नहीं उत्पन्न हो सकती है। मगर फर्क तो वहां आ जाता है कि यदि आप हिन्दू राष्ट्र को मानेंगे तो आप देशभक्त हैं, लेकिन अगर आप भारतीय राष्ट्र को मानेंगे तो आप देशभक्त नहीं हैं इस बात का मुझे बहुत खेद है।

महोदया, मेरा जी तो चाहता है कि मैं इस विषय पर बहुत बोलूं मगर चतुरानन मिश्र जी ने कहा है कि दूसरा दिन हो गया है। इसलिए मैं आज के माहौल के ऊपर जल्दी आना चाहता हूं। स्वाभाविक है कि लोकसभा के आम चुनाव के लिए बड़ी तीव्रता के साथ यह उभरता हुआ माहौल है। अब इससे कितना कोई लाभ उठा सकता है, उसके लिए तैयारियां हो रही हैं और ये तैयारियां आज से नहीं पिछले डेढ़ साल से हो रही हैं, जब से देश में डिस्टेबिलाइजेशन का सिलसिला शुरू हुआ था, बल्कि 1987 में यह शुरू हो गया था जिसमें विदेशी ताकतों का भी हाथ है जिसमें देश के अंदर तकरारें करने वाले जिनमें कम्यूनल, फासिस्ट सभी शक्तियों का हाथ है तब से एक अजीब किस्म की भावना उत्पन्न हुई है और जो लेटेस्ट डेवलमेंट्स हुई हैं देश की राजनीति में उसमें तीन शक्तियां उभर कर आ रही हैं विकल्प के लिए वे कहती हैं कि वे कांग्रेस का विकल्प दे रही हैं। एक ने तो नाम रखा है नेशनल फ्रंट, दूसरा, जैसा मैंने कहा था दो पार्टियों को तोड़कर एक समन्वय किया है और उसको बी० जे० पी० से बांधा जा रहा है बी० जे० पी० ने इतनी बदमाश शक्ति शिवसेना को बांध लिया है कि बाघेला जी अभी हंस रहे हैं, मगर हाथ से बोए हुए कांटे हैं जिसके लिए बाद में पछताना पड़ेगा, शिवसेना जैसी बदनाम, तनजीम शक्ति दूसरी कोई नहीं है आप बड़े शौक से कहते हैं कि हम हिन्दू राष्ट्र का नाम नहीं लेते। आप कहते हैं हमने हिन्दू नाम नहीं दिया। लेकिन मुझे याद है कि हमारे यहां पंजाबी की एक कहावत है कि किसी बुजुर्ग औरत के घर में चोर घुस आए, उसके घर में जो कुछ था वह उठा लिया और जब वह भागने लगे तो माई ने चिल्लाना शुरू किया चोर आ गया है, चोर आ गया है। तो उन्होंने माई को सिर पर बिठा लिया और कहने लगे माई सच कहती है; माई सच कहती है। गांव के लोगों ने समझा कि इसी के बच्चे

[श्री बूटा सिंह]

हैं ये शायद प्रचार करवा रहे हैं और गांव के बाहर जाकर बुढ़िया को सरहद पर छोड़कर वे भाग गए। अब बी० जे० पी० ने भी ऐसा ही किया है। ये कहते हैं कि हिन्दू राष्ट्र हम वहीं कहते हैं। मगर शिवसेना उस हिन्दू राष्ट्र का प्रतीक है, उनको इन्होंने चोटी पर बिठाया है। उनके जो नेता हैं बाल ठाकरे उन्होंने खुले आम दो नारे दिए हैं एक नारा तो दिया है कि जो माइनोरिटीज़ हैं उनका इस में कोई स्थान नहीं है। माइनोरिटीज़ में केवल मुस्लिम ही नहीं हैं उसमें ईसाई हैं उसमें सिख हैं और बंबई में जो सिखों का बुरा शिवसेना ने किया वह कोई दूसरा कर नहीं सकता है वे कहते हैं कि हम तो उनको गुरु मानते हैं। अगर उनके गुरु हिन्दू हैं तो उनके फौलोवर हिन्दू क्यों नहीं हैं? यह आपकी दोहरी नीति है। गुरू आप मानते हैं तो सिखों के साथ क्या सुलूक किया जा रहा है। जो शिवसेना ने किया है वह सब आपके खाते में जाएगा। वह आपके एकाउंट में जाएगा। शिवसेना के साथ जो गठजोड़ हुआ है यह कोई छोटी सी बात नहीं है। यह केवल इस इलेक्शन के लिए नहीं है। बी० जे० पी० जो कि जनता पार्टी के विघटन के बाद अपने लिए स्थान ढूंढ़ रही थी इस राजनीति में पहले जनसंघ था उसके पहले क्या था आप जानते हैं। जनसंघ का स्वाहा करके पूर्णाहूति देकर जनता पार्टी बनाई। फिर भारतीय जनता पार्टी भी इसीलिए उसका नाम रखा गया ताकि लोगों को बुद्धू बनाया जा सके। हम तो भारतीय जनता पार्टी रह गए हिन्दू की अपील छोड़ दी गई। मगर देखा गया है कि हिन्दू तबके की अपील छोड़ने से लोकसभा में जीरो हो गए यहां अलबत्ता तीन चार रह गए। उसी अपील को लेकर लोक सभा में सीटें चाहिए वहीं सीटें लेने के लिए उस हिन्दुत्व की अपील को फिर से उजागर करने के लिए शिव सेना को सिर पर बैठा लिया। शिव सेना के बाल ठाकरे के जितने बयान आये आज तक मुझे याद आता है शिव सेना के बारे में बी० जे० पी० के लोगों का आज से तीन-चार साल पहले क्या रवैया था उस में यह है। वहां के स्थानीय मराठी नेता क्या कहते थे...(व्यवधान) डेढ़ साल पहले क्या कहते थे वह सब को मालूम है। खेद की बात है बी० जे० पी० ने यह फैसला लेकर अपना रूप नेगा कर लिया। यह तो उम्मीद करते होंगे कि हिन्दू नाम से वोट लेकर आयेंगे। आज के सन्दर्भ में देश के सामने एक बहुत भारी खतरा उत्पन्न हो गया है। माइनोरिटी को कम्यूनलिज्म समझा जा सकता है इट इज आउट आफ फीयर मैं तो उनमें से हूं कई बार कह चुका हूं दोनों ही कांसप्ट खतरनाक है। मेज्योरिटी का भी और माइनोरिटी का भी खतरनाक है और देश के लिए हानिकारक है। मेज्योरिटी का नाम लेते ही मेज्योरिटी के सदस्यों में अहंकार पैदा होता है। माइनोरिटी का नाम लेते ही उसमें हीनता की भावना पैदा होती है कि मैं कुछ कम हूं मैं बराबर का सिटीजन नहीं हूं? मेरे लिए दोनों में व्यर्थ हैं। मैं मानता हूं कि जो दोनों पर विश्वास करता है, उन दोनों में कमी है। वह पूर्ण नहीं है। फिर भी मैज्योरिटी का लोभ यदि सामप्रदायिकता का नाच करेगा, तो इस देश में सबसे पहले किस का खून होगा? लोक तंत्र का। क्योंकि लोकतंत्र सेक्यूलरिज्म के बगैर जिन्दा नहीं रह सकता। जहां कहीं भी इस प्रकार की भावना उत्पन्न हुई है। किसी देश का इतिहास उठाकर देख लीजिये, सबसे पहले उस देश में लोकतन्त्र की हत्या हुई है। लोकतन्त्र की जिस दिन हत्या हुई तो उससे किस को नुकसान होगा। पूंजीपतियों को नहीं गरीबों को नुकसान होगा। लोकतन्त्र स्रोत है, देश में समाजवाद का। इसलिये हमारे पूर्वजों ने, पुरखों ने इन्दिरा गांधी ने खासकर अपने संविधान में प्रिएम्बल में इन तीन चीजों को इसलिये जोड़ा था कि भारत को यदि प्रजातन्त्रवादी,

शक्तिशाली देश रहना है, तो इन तीन चीजों का होना निहायत लाजमी है। इनमें से जब एक भी गिरेगी, तो देश कमजोर हो जायेगा, देश टूट जायेगा, देश की आजादी खतरे में चली जायेगी। इसलिये साम्प्रदायिक भावना, साम्प्रदायिक एकता केवल फैशन की बात नहीं है। इसलिये नहीं है कि हम सेक्यूलर होकर दिखायेंगे कि हम बहुत फिराकदिल हैं। दूसरे धर्मों का हम बड़ा आदरमान करते हैं। इसके बगैर हम जिन्दा नहीं रह सकते। यह बुनियाद है। जिस दिन भारतवर्ष ने लोकतन्त्र के माध्यम से सेक्यूलरिज्म को तिलांजलि दे दी, वह दिन हमारे देश के लिये विनाश का दिन होगा। हमारे देश के लिये खतरनाक दिन होगा। आज हम देखते हैं कि पिछले कुछ समय से इस देश में खासकर पिछले 18 महीने में जो साम्प्रदायिकता ने नंगा नाच किया है, दुर्भाग्यवश एक धार्मिक मसले को लेकर किया है, भगवान राम के नाम को लेकर किया है। इससे 60 इंसीडेंस हो चुके हैं 7 राज्यों में। आप अन्दाजा लगाइये, जैसा राम अवधेश सिंह जी कह रहे थे कि यह एक खतरे की घंटी है। खतरे की घंटी काफी हद तक बड़ी लाउडली बज चुकी है। दूसरी तरफ जो लाइनअप हो रहा है पालिटिकलस पार्टीज का वह बहुत खतरनाक है। अगर इस चीज का इस वक्त नहीं अन्दाजा लगाया गया, इस खतरे को अगर अनुभव नहीं किया गया, तो न सिर्फ आगे आने वाली लोक सभा भ्रष्ट होगी, भ्रष्ट इन द सेंस कि इसमें मिश्रित इस प्रकार के साम्प्रदायिक तत्व आ जायेंगे कि वह हमारे लोक तन्त्र के लिये हानिकारक होंगे। इसके साथ ही मेरे कुछ साथियों यहाँ के लोग हैं, जिनकी दृष्टि जिसका इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमेशा उन्होंने सेक्यूलरिज्म का साथ दिया है। मैं समझता हूं इस खतरनाक मोड़ पर बड़ी से बड़ी कुर्बानी करके भी वह लोग अपने सिद्धांतों को कायम रखेंगे। मगर लगता है कि नेशनल फ्रन्ट का नाम सभी ले लेते हैं और कभी जनता पार्टी और कभी बी०जे०पी० ... लेते हैं। कहते हैं कि नेशनल फ्रन्ट तो हमारा दोस्त है, उसमें हम उसका साथ देंगे। मगर उन्हें यह मालूम नहीं है कि नेशनल फ्रन्ट क्या है? वही चेहरे, वहीं घिसे-पिटे मुहरे नेशनल फ्रन्ट में हैं और फैक्ट तो यह है कि इनकी संधि बहुत पुरानी है। जनता दल और बी०जे०पी० की इस संधि के पीछे बड़ी गहरी साजिश है। मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि देश में लोकतन्त्र को खत्म करने के लिये, हिन्दुस्तान की आजादी को खत्म करने के लिये, यह गठबन्धन केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं है, इस गठबन्धन के पीछे बहुत बड़ी-बड़ी शक्तियां हैं और इस गठबन्धन को जितनी जल्दी और जितनी शीघ्रता के साथ प्रगतिशील लोग और सेक्यूलर लोग और जितने प्रगतिशील एलीमेंट हैं, अनुभव करें, उतना ही इस देश का भला होगा और इसमें जितना विलम्ब और देरी होगी, उतना ही साम्प्रदायिक शक्तियां बल पकड़ेंगी, उतना ही ज्यादा मोबलाइज करेंगी। आज धर्म का नाम लेकर क्या कुछ हो सकता है। साम्प्रदायिक दंगे बढ़ रहे हैं। अभी सात राज्यों में हो रहे हैं और पूरे देश में हो सकते हैं। एक माननीय सदस्य ने कहा कि ये दंगे केवल कांग्रेस शासित राज्यों में ही

[श्री बूटा सिंह]

होते हैं। इसमें भी षड़यन्त्र हैं। पिछले चार-पांच वर्षों से लगातार कोशिश हुई हैं कि वर्तमान सरकार की छवि किस तरह से धूमिल की जाय। कोई मुद्दा ऐसा नहीं मिला, कोई इश्यू नहीं मिला, क्योंकि चार-पांच सालों से जो प्रगति हुई है, हमारे देश में जो आर्थिक विकास और कृषि उत्पादन बढ़ा है, जिस तरह से सूखे की समस्या का सामना किया गया है, बाढ़ का सामना किया गया है और देश के लोगों में जो आस्था बनी है कि हमारे देश में इतना सुदृढ़ और मजबूत शासन है कि हम मजबूती से किसी समस्या का सामना कर सकते हैं और चाहे मुसीबत पड़ोस से ही क्यों न आई हो, चाहे श्रीलंका से क्यों न आई हो, हम उसका मुकाबला कर सकते हैं। मगर इस बात में विफल होकर विरोधी दल के कुछ लोग और हमारे देश के कुछ पत्रकार मुझे ऐसा लगता है कि बकायदा एक सोची-समझी साजिश के अन्तर्गत यह सब कुछ हो रहा है। मैं चाहूंगा कि देशवासी आज इस बात को अनुभव करें और मैं समझता हूं कि हमारे देश में को आजादी के इतिहास को, विकास के इतिहास को, आज हिन्दुस्तान की जो प्रतिभा है, वर्तमान विश्व में उसका जो सम्मान है, उसको ध्यान में रखते हुए हिन्दुस्तान का मार्ग ही एक मात्र मार्ग है, जो सबको बचा सकता है। बी०जे०पी० को अपने बारे में भ्रम है। उनके शासन में उनकी आइडेंटिटी को देख लिया गया है। भारतीय जनता पार्टी जब जनता पार्टी के रूप में थी, तो उन्होंने डेफिनिटली एक रोल अदा करने की कोशिश की थी। हमारी जो नान-एलानमेंट की पालिसी थी, उसको कहा गया कि जन्युइन नान-एलानमेंट बनाता है, और सेक्यूलरिज्म को कहा गया कि पोजिटिव सेक्युलरिज्म होना चाहिये। हम नहीं समझते कि जेन्युइन नान-एलानमेंट का मतलब क्या है। क्या अमेरिका का दुमछुला बनने के लिये जेन्युइन नान एलानमेंट हो रहा है या ईजराइल को बुलाकर जेन्युइन नान-एलानमेंट हो रहा है? सभी जो हमारे पुराने उसूल थे जवाहर लाल नेहरू के थे, उनको तिलांजलि दी जा रही है। हमारे देश के विकास का जो स्रोत है, देश की प्लानिंग का जो ढांचा था, उसको खत्म करके देश के विकास का नाम दिया गया। अब शिकार देश के सेक्यूलरिज्म को बनाया जा रहा है। अभी-अभी बम्बई के सेशन में जो प्रस्ताव पास हुआ सेक्यूलरिज्म के ऊपर, यह एक चुनौती है, देश में जितने भी सेक्यूलर एलीमेंट हैं और सभी धर्मों के लिये चुनौती है, जितने प्रोग्रेसिव एलीमेंट हैं, उनके लिये चुनौती है। इसी तरह से सोशलिज्म को गांधियन सोशलिज्म माना गया और अब भी बहुत गरम लगा, तो उसको भी छोड़ दिया गया। अब यहां तक भी कहा गया और कि महात्मा गांधी जी को राष्ट्रपिता नहीं कहना चाहिये। चूंकि शिव सेना के बाल ठाकरे ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राष्ट्रपिता नहीं हो सकते, इसलिये बी०जे०पी० के लीडरों ने भी कहना शुरू कर दिया।

श्री शंकर सिंह बाघेला : किसी ने ऐसा नहीं कहा।

श्री बूटा सिंह : नहीं कहा तो खंडन होना चाहिए।

श्री एच० के० एल० भगत : आप इससे इंकार नहीं कर सकते हैं। कुछ अर्सा हो गया है बल्कि मैं यह कहूंगा कि चेक आप कीजिये, दिल्ली म्युनिसिपल कारपोरेशन में आपकी पार्टी पावर में आई तो महात्मा गांधी की तस्वीर हटा दी गयी। इससे आप इंकार नहीं कर सकते हैं।

श्री शंकर सिंह बाघेला : लेकिन कभी अडवाणी जी या किसी ने ऐसा नहीं किया।

श्री बूटा सिंह : मैं एक बात कहना चाहता हूं कि राष्ट्रपिता कोई अलंकारिक पद्धति नहीं है। राष्ट्रपिता के माने ये हैं कि महात्मा गांधी जी के सिद्धांतों को, हम अपने राष्ट्रपिता के सिद्धांत बनाकर उनके ऊपर

चलते हैं . . . (व्यवधान) मगर दुख की बात है कि सन 1977 में फोरेन मिनिस्टर बनने के लिए तो वाजपेयी जी जा सकते हैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर और जब से मिनिस्टर हटे हैं, कितनी बार उनके जन्मदिन आये होंगे, कितनी बार शहीदी दिवस आये होंगे, कभी उसके बाद नहीं देखे गये बापू गांधी जी की समाधि पर। कभी नहीं देखे गये। कभी महात्मा गांधी की समाधि पर कोई जनता दल का, उस वक्त की जनता पार्टी का नेता आज तक नहीं गया और उस वक्त चूंकि हमारे वयोवृद्ध नेता जयप्रकाश नारायण जी का मन जीतना था तब साष्टांग कर रहे थे महात्मा गांधी जी समाधि पर क्योंकि मंत्री पद लेना था...(व्यवधान) ओथ लेनी थी इसलिए महात्मा गांधी जी का नाम लिया जा रहा था। सत्ता हथियाने के लिए तो महात्मा गांधी जी पिता हैं और आज सेक्यूलरिज्म की जड़े कटती हैं तो महात्मा गांधी हमारे पिता नहीं हैं।

महात्मा गांधी जी केवल एक व्यक्ति नहीं नहीं है, केवल एक नेता नहीं थे, महात्मा गांधी जी युग पुरुष थे। महात्मा गांधी जी की तालीम इन्सानियत की तालीम थी। महात्मा गांधी के भजन और उनकी जो शाम की प्रार्थना हुआ करती थी उसमें सभी पर्दों के ग्रंथों धर्मों के ग्रंथों का पाठ हुआ करता था। शायद इसलिए उन्हें मार दिया गया कि वहां कुरान का पाठ क्यों होता था। वहां सभी धर्मों के ग्रंथों का पाठ होता था। महात्मा गांधी सही मायनों में भारत के राष्ट्रपिता थे। हम उसी भारतीय नक्शे को खोज रहे हैं और उस भारतीय नक्शे के लिए कोई भी कुर्बानी देनी पड़ेगी तो हम उसे छोटा नहीं मानेंगे।

राम जन्म भूमि का प्रश्न है। कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि हमने कोई समझौता किया है महोदया, पिछले डेढ़ साल से सभी पार्टियों की प्रेरणा से हमने कोशिश की कि दोनों पक्षों के लोगों को आपस में बैठाकर समाधान किया जाये, समझौता किया जाये भारतीय संविधान के अंतर्गत क्योंकि बातचीत करके मुश्किल से मुश्किल समस्या हल हो सकती है। हमने बड़ी कोशिश की। नहीं कोई रास्ता निकला तो एक सुझाव आया कि सारे मसले को हाईकोर्ट के समाने पेश कर दिया जाये। हाईकोर्ट के समाने जितने भी डोक्यूमेंट किसी के पास हैं जो भी किसी के पास अरग्यूमेंट है वह जाकर पेश करे और जो फैसला हाईकोर्ट करे उसे मान लेना चाहिए। आज भी मैं किसी की वकालत नहीं कर रहा हूं। जो बाबरी मस्जिद के समर्थक हैं उन्होंने आज भी दूसरे सदन में यह कहा कि हम उस वक्त तक किसी भी मन्दिर के निर्माण का विरोध करेंगे जब तक हाईकोर्ट का फैसला नहीं आता। हाईकोर्ट यदि फैसला करके वहां भूमि हमारे हिंदू भाइयों को दे देंगे तो हम अपना केस पीछे कर लेंगे। वे वहां मन्दिर बनाएं हमें कोई एतराज नहीं है। इससे ज्यादा स्ट्रेट फारवर्ड कोई प्रोपोजीशन क्या हो सकती है दूसरी तरफ से क्या हो रहा है। यदि हाईकोर्ट का फैसला पक्ष में होगा तो मानेंगे, यदि हाईकोर्ट का फैसला पक्ष में नहीं होगा तो नहीं मानेंगे। इसका अर्थ मालूम है क्या है। आज यदि मेजारिटी, तथाकथित मेजारिटी अपने आपको इस पोजीशन में खड़ा कर देगी कि हाईकोर्ट का फैसला मेजारिटी के हक में होगा तो मानेंगे और हक में नहीं होगा तो नहीं मानेंगे, तो हमारे देश की जो जुडीशियरी है उसका क्या हाल होगा। कौन मानेगा हमारे हाईकोर्ट को, कौन मानेगा हमारे सुप्रीम कोर्ट को।

श्री शंकर सिंह वाघेला: शाहबानो में क्या किया था आपने?

श्री बूटा सिंह: अरे छोड़िए। राष्ट्रीय महत्व का प्रश्न है। शाहबानो की बात छोड़िए। उसके बारे में पूछना चाहते हैं तो मैं बताऊंगा।

यहां अक्सर चर्चा की जाती है कि सोमनाथ मन्दिर की तरह इसको भी कर दिया जाये। क्यों भूल जाते हैं कि सोमनाथ मन्दिर पर कोई झगड़ा नहीं

[श्री बूटा सिंह]

था । वहां कोई मन्दिर मस्जिद का झगड़ा नहीं था नहीं था । बिल्कुल नहीं था । वह मन्दिर पुराना खंडहर था । जिस तरह से उसको छोड़ दिया गया था या उसको रिनोवेट करने का प्रश्न था । वह नया नहीं बना है । आप क्यों भूलते हैं कि मन्दिर को ही रिनोवेट किया गया था । इसलिए उसके साथ इसको जोड़ना और भोले भाले हिंदू भाइयों को भड़काना यह केवल बी.जे.पी. का ही हथियार हो सकता है और दूसरे किसी का नहीं हो सकता है । आज के संदर्भ में स्पष्ट करना चाहता हूं । हम चाहते हैं कि किसी किस्म का भी कोई दंगा नहीं हो इसलिए हमने विश्व हिन्दू परिषद के लोगों से बातचीत की । उन्होंने कहा कि हम पूजन करेंगे । हमने कहा कि यदि पूजन करना ही है तो इसको एक रेगूलेटेड ढंग से करिये । प्रश्न उठाया गया कि हमने उनके साथ समझौता किया . . . (**व्यवधान**) तो उसके बाद यह फैसला हुआ कि वे लोग अपना पूजन करके एक जगह पर निर्धारित स्थान पर वहां डिस्ट्रिक्ट अथारिटीज के साथ बातचीत करके उसको रख देंगे । और जब यह हाई कोर्ट का फैसला हो जाएगा, तब इसका न्यास होगा, जिसको उन्होंने नहीं माना ।

हम प्रयत्नशील हैं, कोशिश कर रहे हैं । आज एक पक्ष ने बड़े स्पष्ट रूप से कहा है और महोदया, मैं तो आपसे नम्र निवेदन करने जा रहा हूं कि हम अपनी ओर से—दूसरे सदन में तो एक ऐसी अपील रेजोल्यूशन की शक्ल में आ चुकी है—आपको भी हम आग्रह करेंगे, निवेदन करेंगे कि यदि इस तरह की अपील सभी वर्ग के लोगों से कर दी दी जाये कि यह मसला न्यायालय के सामने चला गया, उसकी प्रतीक्षा की जाए और उसकी प्रतीक्षा के बाद यदि कोई फैसला होता है तो उसके ऊपर निर्माण हो जाए, तो मैं मैं मानता हूं कि देश में सभी देशभक्त लोग इसके साथ चलने के लिए तैयार होंगे ।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ उम्मीद करता हूं, प्रार्थना करता हूं कि देश में भावनात्मक एकता हो एक ऐसी शक्ति है जो हमारे देश को कायम रख सकती है, जो हमारे देश को आगे बढ़ा सकती है । इसमें कोई शक नहीं है ।

अब सजेशन दी जाती है कि आर्मी डेप्लाय कर दिया जाए, पुलिस को खड़ा कर दिया जाए । इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता है, मगर ऐसे जो भावनात्मक विषय होते हैं, सेंटिमेंटल इशूज होते हैं, जिनके साथ इमोशंस जुड़ी रहती है, उनको हैण्डल करने वक्त हमें ज्यादा तहम्मुल ज्यादा से ज्यादा डिसीप्लीन से काम लेना चाहिए ।

इसी भावना से हमने यह प्रस्ताव किया है । मैं उम्मीद करता हूं कि आप हमारी इस भावना को, हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करके इस रेजोल्यूशन को पढ़ देंगी, जिससे पूरे देश में एक शांति और स्वाभिमान का वातावरण पैदा होगा ।

धन्यवाद । . . . (**व्यवधान**)

श्री चतुरानन मिश्र : अब हम तो पास कर देते हैं, लेकिन आप उनसे भी पूछताछ कर लीजिए । . . . (**व्यवधान**) नहीं, केरल में तो मुसलिम लीग का साथ छोड़िये । . . . (**व्यवधान**)

उपसभापति : इसके ऊपर डिसकशन पूरा हो गया है । अब मैं हाऊस के लिए रेजोल्यूशन पढ़ता हूं ।

This House representing the wishes and aspirations of the people of India notes with grave concern the increase in the incidents of communal violence and the disruption of communal harmony and peace due to the machinations of forces of fundamentalism and communalism.

This House, while welcoming the initiative taken by the Government for early resolution of the Babri Masjid-Ram Janambhoomi dispute through Judicial process' notes with dismay that the continuing controversy on this issue has vitiated the communal atmosphere and contributed to the heightening of communal tension in

certain parts of the country. It also takes note with concern of recent developments and certain provocotive actions and speeches made by certain organiations which have contributed to the widening of the communal divide.

This House, therefore, appeals to all sections of the people not to associate with or lend support to any such agitation, ceremony or procession. It also appeals to the organisations which put forward their respective views on the above dispute to show patience and tolerance and to maintain communal harmony and peace pending its resolution in the judicial forum.

It calls upon the major parties to the dispute, namely, Vishwa Hindu Parishad and the Babri Masjid Action Committee, to give up the path of confrontation leading to violence and postpone all their programmes, including ceremonies and celebrations, connected with Ram Janambhoomi-Babri Masjid issue till such time the court verdict is available.

This House further expresses the hope that all sections of the people would continue to affirm their faith in the rule of law, preserve and promote amity and harmony and uphold the secular character and traditions of India.

श्री चतुरानन मिश्र : मैं एक बात कहना चाहता हूं । जो इनिशिएटिव गवर्नमेंट की कही गई है, इनिशियेटिव तो और कई लोगों ने लिया । सब से पहले हम लोगों ने भी रखा था, दूसरी पार्टी के लोगों ने भी रखा है । इसलिए गवर्नमेंट ही मत रखिये । सब तो आपकी अपनी पार्टिजन आउटलुक कह कर रहे हैं इसलिए इनीशियेटिव ही रखिए ।

SHRI BUTA SINGH "Initiative taken in this regard."

SHRI CHATURANAN MISHRA: "Initiative taken in this regard," because all have suggested it.

दूसरी बात है, जब आपने विश्व हिन्दू परिषद दिया है तो बजरंग दल भी दीजिए । वह भी खुरापात करता है ।

श्री गुलाम रसूल मटटू : आदम सेना भी दीजिए ।

श्री चतुरानन मिश्र : आदम सेना भी दे सकते हैं उसको बाबरी मस्जिद के साथ मिला हुआ, इसके बाद है वह शिला पूजन से परहेज करने के लिए, शिला पूजन सहित । शिला पूजन सैरमनी, शिला पूजन प्रोसेसन कहिए, हमको पूजा करने से एतराज नहीं है, जितनी करनी हो घर में करें, हमको एतराज है कि प्रोसैशन वगैरह जो निकालते हैं . अपील कीजिए । यह तो अपील कीजिए ।

SHRI SANTOSH MOHAN DEV: Agreed.

श्री चतुरानन मिश्र : यह तो अपील है ।

SHRI BUTA SINGH: Agreed.

SHRI CHATURANAN MISHRA: All right, let us have it unanimously.

श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी : मिश्र जी ने जो सुझाव दिया है उसके अन्दर वह तरमीम कर दें जो गवर्नमेंट इनीशियेटिव दिया है उसको निकाल दें ।

SHRI E. BALANANDAN: I support what Mr. Chaturanan Mishra has suggested. "Government initiative" has to be deleted.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now I will read out the amended version. "This House, while welcoming the initiative taken for early resolution...."

By everybody. I am not mentioning either Government or anyone. "Initiative taken for", not "by" ..(*interruptions*)... By all? But Masjid Action Committee, Bajrang Dal and Adam Sena. Okay?

आप क्या कह रहे हैं ?

श्री राम अवधेश सिंह : विश्व हिन्दू परिषद के.....

श्री चतुरानन मिश्रा : शिला पूजन प्रोशैसन,—

—to avoid Shila Pujan processions—

मनी जहां है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: "Programmes including ceremonies, celebrations connected with..."

श्री शंकर सिंह वाघेला : सब रख रहे हैं तो शिला पूजन का क्या है और भी प्रोसैशन निकलते हैं सब तरह के, आपको रखने से क्या होता है ...(**व्यवधान**)

श्री राम अवधेश सिंह : एक मेरा सुझाव और है उसमें अगर आप एडजस्ट कर सकें, सरकार के लोग हैं, सब को कह रहा हूं कि जो लोग आइडेंटीफाई हो गए हैं कम्युनिलिजम फैलाने के लिए, चाहे, जिस पक्ष के हों, उनको भी कंडेम करने का होना चाहिए ।...(**व्यवधान**) वह भी भी होना चाहिए । इसका भी एक इम्पैक्ट होगा होना हम लोग पाजिटिव भी हैं, नेगेटिव भी हैं । जैसे हमारे यहां जो....(**व्यवधान**) भाई, मैं आप ही का का काम कर रहा हूं, अपना काम नहीं, यह सब का काम है, देश का काम है । जो आइडेंटीफाई हो गए हैं, बड़े लोग हैं, जैसे विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष को तो आपने एम्बैसडर बना दिया, उसको रेवार्ड दे दिया । हमारे जो सासाराम में कम्युनलिजम फैलाया उसको मंत्री बनाया और मंत्री बना कर उसको रिवार्ड दे दिया ।...(**व्यवधान**)

उप सभापति : राम अवधेश जी, आप जरा बैठिए, देखिए एक अच्छी भावना से रेजोल्यूशन जा रहा है उस को किसी व्यक्ति के रूप में मत रखिए, एक जनरल रेजोल्यूशन है । जो लोग उसमें हैं वे खुद समझते हैं वे समझ जायेंगे कि किसके बारे में है । कोई जरूरी नहीं है कि हम एक-एक का नाम दें ।

श्री राम अवधेश सिंह : शिला-पूजन का रखिये ।

उप सभापति : शिला-पूजन का भी डालना है या नहीं डालना, मैं नहीं जानती ।....(**व्यवधान**)

SHRI CHATURANAN MISHRA: "To avoid Shila Pujan processions."

श्री राम अवधेश सिंह : राम जानकी का जो रथ चलता है उसको भी रोकिए और जो* ने जो सासाराम रायटस करायी उनको मंत्री बना दिया गया ।.....(**व्यवधान**)

श्री बूटा सिंह : मैडम, अब आप हाउस एडजर्न करिए ।....(**व्यवधान**)

उप सभापति : प्लीज राम अवधेश जी, बैठ जाइये ।

श्री राम अवधेश सिंह : एम्बैसडर बना दिया विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष**** को । तो बताईए क्यों नहीं कम्युनिलिज्म फैलेगा ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: "...postpone all their programmes including ceremonies and celebrations and Shila Puja connected with Ram Janam Bhoomi....."

SHRI SHANKER SINH VAGHELA: I object to "Shila Puja" if you don't mind, Madam. It should be "processions."

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shila processions..

SHRI SHANKER SINH VAGHELA: It is unnecessary.

श्री राम अवधेश सिंह : राम-जानकी रथ जो चलता है, उसको भी रुकवाइए । राम-जानकी प्रोशैसन भी इसमें जोड़ दीजिए ।

SHRI M. M. JACOB: The Minister's name must be expunged, Madam.

---

* Not recorded.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, no. Any Minister's name, anybody's name, you don't give.

Please listen. The last time I am reading it:

"This House therefore, appeals to all sections of the people not to associate with or lend support to any such agitation, ceremonies or Shila Puja procession."

श्री शंकर सिंह : वाघेला : शिला-पूजन पर हमारा विरोध है उसमें । बी.जे.पी. का विरोध है । आप शिला-पूजन वर्ड छोड़ दीजिए ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will read the whole Resolution:

"This House, representing the wishes and aspirations of the people of India, note with grave concern the increase in the incidents of communal violence and disruption of communal harmony and peace due to the machinations of forces of fundamentalism and communalism.

This House, while welcoming the initiative taken for early resolution of the Babri Masjid-Ram Janam Bhoomi dispute through judicial process, notes with dismay that the continuing controversy on this issue has vitiated the communal, atmosphere and contributed to the heightening of communal tension in certain parts of the country. It also taken note with concern of recent developments and certain provocative actions and speeches made by certain Organisations which have contributed to the widening of the communal divide.

This House, therefore, appeals to all sections of the people not to associate with or lend support to any such agitation, ceremonies or Shila Puja procession. It also appeals to the organisations which put forward their respective views on the above dispute, to show patience and tolerance and to maintain communal harmony and peace, pending its resolution in the judicial forum. It calls upon the major parties to the dispute, namely, the Vishwa Hindu Parishad, the Babri Masjid Action Committee the Bajrang Dal and the Adam Sena to give up the path of confrontation leading to violence and postpone all their programmes including ceremonies and celebrations connected with Ram Janam Bhoomi-Babri Masjid issue till such time the Court verdict is available. This House further expresses the hope that all sections of the people would continue to affirm their faith in the rule of law, preserve and promote amity and harmony and uphold the secular character and traditions of India."

May I take it that this Resolution is adopted?

[*No hon. Member dissented.*]

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Resolution is adopted.

Thank you very much.

आप सब लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद । सब इतनी देर तक, दो दिन तक बैठे और हम लोगों ने एक अच्छा डिस्कशन किया ।

The House is adjourned till 11-00 A.M. today.

The House then adjourned at fifty-two minutes past twelve midnight till eleven of the clock on Friday, the 13th October, 1989.

MGIPMRND—588 RS—RS-I-24-1-90-400.